वचित्र जीवन

श्री गुरु नानक देव जी



सोढी तेजा सिंघ

श्री गुरु नानक देव जी

१ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

वचित्र जीवन

गुरु नानक देव जी

लेखक–

सोढी तेजा सिंघ जी

प्रकाशक

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

अमृतसर

Vachittar Jeewan Guru Nanak Dev Ji

by Sodhi Teja Singh

ISBN : 81-7601-187-8

दूसरी बार, 2003

तीसरी बार नवम्बर, 2006

भेटा : 50-00

प्रकाशक :

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाज़ार माई सेवां, अमृतसर, (पंजाब)

टैलीफैक्स : (0183) 2542346, 2547974, 2557973

(Printed in India)

मुद्रकः जीवन प्रिंटर्ज़, 312, ईस्ट मोहन नगर, अमृतसर। फोनः 2705003, 5095774.

यथार्थ विचार

एक बार डाक्टर टैगोर के एक मित्र ने उनसे कहा कि डाक्टर साहिब आप अपना जीवन लिखो, जिस से लोगों को आपके महान् व्यक्तित्व से कुछ लाभ प्राप्त हो सके। प्रत्युत्तर में डाक्टर साहिब ने कहा कि स्व-जीवनी लिखने हेतु मैं पूर्व में घटित हुई घटनाओं का स्मरण करके दुखित नहीं होना चाहता।

फिर उस मित्र ने कहा कि यदि यह कार्य आप के अनुकूल नहीं है, तो आप अपने किसी अन्य मित्र को यह लिखने की आज्ञा दे दो, जो आपके बारे में सर्वस्व जानता हो। इसके उत्तर में डाक्टर साहिब ने कहा कि कोई भी किसी के अंतर्भाव को वर्णन करने की सामर्थ्या नहीं रखता, इसलिए मैं किसी से अपना अपूर्ण जीवन नहीं लिखवाना चाहता ।

टैगोर साहिब के इन विचारों को पढ़ कर यह सोचने वाली बात है कि यदि डाक्टर टैगोर का जीवन कोई पूर्ण नहीं लिख सकता तो फिर ऐसा कौन-सा व्यक्ति है, जो श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को, जिन के प्रति बाणी में कथन है, ''आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ।।'' लिख कर निरूपण कर सकता है ।

जो कुछ भी आप जी के जीवन सम्बन्धी लेखकों द्वारा लिखा जाता है, वह मात्र श्रद्धा द्वारा-''आपु आपनी बुधि है जेती।। बरतन भिन्न भिन्न तुहि तेती''- के अनुसार ही होता है ।

यत्न तो सभी करते हैं, परन्तु कोई अत्यन्त श्रद्धालु लेखक अपनी श्रद्धा के अधीन कई अयोग बातें लिख जाता है, दूसरा कोई समाज विरोधी अश्रद्धेय लेखक अनेक बातें निरर्थक लिख देता है। इन दोनों श्रेणियों के लेखकों के अतिरिक्त एक तीसरा लेखक है जो अपनी बुद्धि अनुसार मूल सत्यता को प्रकट करने का यत्न करता है ।

गुरु साहिब ने अपनी देश-देशांतर की चार उदासियों (यात्राओं) के तहत देश के कोने-कोने में, जहां भी कोई अहंकारी साधु, संत, फकीर, पंडित अथवा योगी था तथा जहां कोई ठग, चोर, राहजनी करने वाला या कोई अन्य

बुराई थी, वहां-वहां पहुंच कर अपने नवीनतम प्रचार-ढंग से लोगों को यथार्थक मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित किया ।

हरिद्वार गए तो पानी पश्चिम की ओर अर्पित करके बताया कि पित्तरों को वही कुछ पहुंचता है जो कुछ वह अपने हाथों से यहां पुण्य-दानादि सत्कर्म कर जाते हैं । फिर मक्के गए तो काबे की ओर पांव करके सभी भ्रमित लोगों को परमात्मा की सर्वव्यापकता की बात समझाई । यदि सिद्ध-योगियों के पास गए तो उन्हें समझाया कि ''नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे'' अर्थात नाम-सिमरन के बिना परमेश्वर के साथ मिलन कभी नहीं हो सकता, समाधि लगा कर पहाड़ों पर बैठे रहने से तो अच्छा है कि लोगों में जाकर नाम-सिमरन का प्रचार करके अपना जीवन परोपकार में व्यतीत करो।

यदि ठगों आदि के पास गए तो उन्हें ''नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ।।'' का उपदेश देकर कुकर्म करने से हटाया । यदि देश के बादशाह के पास गए तो उसे कहा, ''राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ।।'' प्रजा से न्याय करना राजा का धर्म है और पढ़ना यही है कि सत्य परमेश्वर को प्राय: स्मरण करो । उसके भय को हृदय में धारण करके अपने आदेश को प्रयोग करो ।

यदि किसी अन्य मंदकर्मी व्यक्ति के पास गए तो उसे कहा-

''भउजल तारणहारु सबदि पछाणीऐ ।।
चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ ।।'' ***(वार मलार की, म: १)***

अर्थात-भवसागर से पार हेतु नाम-सिमरन को ग्रहण करो । मंदे कर्म करने वाले चोर, व्यभिचारी तथा जुआरिए आदि लोग तिलों की भांति पीसे जाएंगे।

गुरु जी के उपदेशों को ग्रहण करके प्राणी-मात्र को अपना जीवन सफल करना चाहिए, आदेश है -

''भई परापति मानुख देहुरीआ ।।
गोबिंद मिलण की एह तेरी बरीआ ।।''

अपने स्वरूप में अभेद होने की बारी मानव जन्म में ही मिलती है, इस लिए प्रण करें कि यह बारी व्यर्थ ही न चली जाए ।

अमृतसर
मार्च १९७२

लेखक दास-
सोढी तेजा सिंघ

अनुक्रम

वचित्र जीवन

श्री गुरु नानक देव जी

जन्म	-	१५ अप्रैल सन् १४६९
गुरुगद्दी	-	जन्म से
जोती जोति	-	१ अस्सू सम्वत् १५९६

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अन्धेरु पलोआ।

(वारें भाई गुरदास जी)

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि॥

श्री गुरु नानक देव जी

सिक्ख पंथ के प्रथम सतिगुरु

प्रथम काँड

देश की दशा

—भाव—

कलियुग का दृश्य

भाई गुरदास जी अपनी पहली वार में वर्णन करते हैं :

कलिजुगु चउथा थापिआ सूद्र बिरिति जग महि वरताई।
करम सु रिगि जुजर सिआम के करे जगतु रिदि बहु सुकचाई।

(पउड़ी ७)

अर्थात्:- परमेश्वर ने चौथा युग कलियुग बनाया, इसमें जगत के जीवों की वृत्ति शूद्रों (नीच कर्म करने वालों) जैसी हो गई। ॠगवेद सतियुग में प्रधान था, यजुर वेद त्रेता युग में और साम वेद द्वापर में। इनके अनुसार सतियुग में लोग तप, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में दान-कर्म करते थे परन्तु कलियुग में इन कर्मों के करने से लोग संकोच करते थे और नीच कर्मों में संलग्न हो रहे थे। इस कलियुग में:-

माइआ मोही मेदनी कलि कलिवाली सभि भरमाई।
उठी गिलानि जगत्रि विचि हउमै अंदरि जलै लुकाई।

(पउड़ी ७)

अर्थात् - सृष्टि को माया ने मोह लिया, कलियुग की झगड़े वाली क्रिया ने सारी सृष्टि को भर्मा दिया, जिससे जगत में नफ़रत पैदा हो गई और लोग अहंकार में जलने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि-

कोइ न किसै पूजदा ऊच नीच सभि गति बिसराई।
भए बिअदली पातसाह कलि काती उमराइ कसाई।
रहिआ तपावसु त्रिहु जुगी चउथे जुगि जो देइ सु पाई।
करम भ्रिसटि सभि भई लोकाई॥ ७॥

अर्थात् - कोई किसी दूसरे को नहीं मानता (अहंकार के प्रभाव के कारण सब अपने आप को ही मानते है) ऊंचे-नीचे की कोई विचार नहीं रही। देश के बादशाह बेइन्साफ हो गए हैं, इसलिए (कलियुग) बेइन्साफी की कैंची के साथ अहलकार कसाई हो गए हैं, ज़ालिम होकर प्रजा पर ज़ुल्म कर रहे हैं। तीनों युगों सतियुग, त्रेता और द्वापर का इन्साफ वाला धर्म दूर हो गया और चौथे युग कलियुग में जो कोई किसी को देता है अथवा जो कर्म करे उसका फल वह ही पाए। इस तरह सारी सृष्टि शुभ कर्मों से विहीन हो गई।

जब ऐसे युग बदलता है तो फिर क्या होता है?

प्रशन- जुगि गरदी जब होवहे उलटे जुगु किआ होइ वरतारा?

भाई साहिब स्वयं ही प्रश्न करके स्वयं उत्तर देते हैं-

उत्तर- उठे गिलानि जगति विचि वरते पाप भ्रिसटि संसारा।
वरनावरन न भावनी, खहि खहि जलन बांस अंगिआरा।
निंदिआ चले वेद की समझनि नहि अगिआनि गुबारा॥ १७॥

अर्थात्- प्रश्न यह है कि जब युग पल्ट जाता है फिर जगत में क्या बर्ताव होता है? इस प्रशन का उत्तर देते हैं कि जगत में एक दूसरे से नफ़रत हो जाती है, पाप कर्म होने लगते है और लोग भ्रष्टाचारी हो जाते है। एक को दूसरा अच्छा नहीं लगता और बांसो की भांति आपस में रगड़ रगड़ कर जल मरते हैं। अज्ञान के अन्धेरे के कारण समझते नहीं और शुभ कर्मों की निंदा करते हैं। भाव है कि नेक कर्मों को अच्छा नहीं समझते, परन्तु —

बेद गिरन्थ गुर हटि है जिसु लगि भवजल पारि उतारा।
सतिगुर बाझु न बुझीऐ जिचरु धरे न प्रभु अवतारा।
गुर परमेसरु इकु है सचा साहु जगतु बणजारा।
चड़े सूर मिटि जाइ अंधारा॥ १७॥

अर्थात्- वेद आदि ज्ञान उपदेश के लिए ग्रन्थ गुरु की दुकान हैं जिनको ग्रहण कर के कोई भवसागर से पार हो सकता है। इस बात को तभी समझा जाता है जब सच्चा गुरु अवतार धारण कर के प्रकट हो। गुरु परमेश्वर का रूप है, जो सच्चा शाह और जगत का वणजारा है। गुरु सुर्य के चढ़ने से अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है।

गुरु की ज़रूरत

बाझु गुरू अंधेरु है खहि खहि मरदे बहु बिधि लोआ।
वरतिआ पापु जगत्रि ते धउलु उडीना निसिदिनि रोआ।
बाझु दइआ बलहीण होउ निघरु चलौ रसातलि टोआ।

(पउड़ी २२)

अर्थात्- गुरु के बिना अज्ञान के अंधेरे के कारण लोग अनेक प्रकार से आपस में लड़ लड़ कर मर रहे हैं और संसार में पाप फैल गया है जिस कारण धर्म जिसके सहारे सृष्टि खड़ी है दुःखी होकर रात दिन रो रहा है। दया के बिना धर्म कमज़ोर होकर नर्क के गढ़े में गिर रहा है। क्यों?

खड़ा इकते पैरि ते पाप संगि बहु भारा होआ।
थम्मे कोइ न साधु बिनु साधु न दिसै जगि विचि कोआ।

(पउड़ी २२)

अर्थात्- (धर्म इसलिए गिरने लगा है क्योंकि) एक पैर पर खड़ा हुआ पापों के बोझ से बहुत भारी हो गया है और उसको साधु (गुरु) के बिना कोई सहारा नहीं दे सकता, पर आश्चर्य है कि इस समय संसार में ऐसा कोई संत नहीं मिलता, और—

धरम धउलु पुकारै तलै खड़ोआ॥ २२॥

धर्म का धौल बैल धरती के नीचे खड़ा चीख-पुकार रहा है।

गुरु आगमन

फिर जब धर्म रूपी बैल की-

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ।

जब परमात्मा ने धर्म की पुकार सुनी तो उसने गुरु नानक देव को जगत में भेजा। गुरु जी ने आकर क्या किया?

चरन धोइ रहरासि करि चरणामृितु सिखां पीलाइआ।
पारब्रहमु पूरन ब्रहमु कलिजुगि अंदरि इकु दिखाइआ।
चारे पैर धरम्म दे चारि वरनि इकु वरनु कराइआ।
राणा रंकु बराबरी पैरी पावणा जगि वरताइआ।
उलटा खेलु पिरंम दा पैरा उपरि सीसु निवाइआ।
कलिजुगु बाबे तारिआ सतिनामु पढ़ि मंत्रु सुणाइआ।
कलि तारणि गुरु नानकु आइआ॥ २३ ॥

अर्थात्- गुरु जी ने अपने सिक्खों को चरण-पाहुल दी और एक पारब्रह्म परमेश्वर की मन्नत माननी सिखाई। धर्म के चार पैर (सत्य, तप, दया, दान, अथवा, नाम, दान, स्नान और ज्ञान) कायम किये और जहां एक दूसरे से नफ़रत थी वहां चार वर्णों (ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को भाईचारा बताया और नीच-ऊँच के भ्रम को दूर करने के लिए बड़े छोटे को चरण-वन्दना अर्थात् नम्रता के साथ मिलना और रहना सिखाया। गुरु जी ने उल्टी रीति चलाई कि ऊँचे सिर को नम्रता के लिए नीचे चरणों के ऊपर झुका दिया। इन नियमों से सतिगुरु जी ने सति नामु का उपदेश देकर कलियुग के लोगों को पार उतारा। इस तरह गुरु नानक जी कलियुग के लोगों को पार उतारने के लिए आए।

सतिगुरु नानक अवतार

कार्तिक सुदी पूर्णिमा सम्वत् १५२६ विक्रमी के अनुसार सन् १४६९
भाई गुरदास जी लिखते हैं:

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।

सिंघु बुके मिरगावली भन्नी जाइ न धीरि धरोआ।
जिथे बाबा पैरु धरि पूजा आसणु थापणि सोआ।
सिधासणि सभि जगति दे नानक आदि मते जे कोआ।
घरि घरि अंदरि धरमसाल होवै कीरतनु सदा विसोआ।
बाबे तारे चारि चकि नउ खंडि प्रिथवी सचा ढोआ।
गुरमुखि कलि विचि परगटु होआ॥ २७॥ [वार १]

अर्थात्- जब गुरु नानक साहिब जी का अवतार माता तृप्ता जी की पवित्र कोख से श्री महिता कालू जी के घर २० वैसाख (वैसाख सुदी ३) संवत् १५२६ (१५ अप्रैल सन् १४६९) को राय भोए की तलवंडी (जो आप जी के नाम से ननकाणा साहिब प्रसिद्ध है) में हुआ तो जगत में अज्ञान से जो पापों की घटा छाई हुई थी वह सूर्य रूपी गुरु अवतार के प्रकट होने से छट गई और ज्ञान का उजाला सारे जगत में फैल गया। जिस तरह सूर्य के उदय होने से तारे छुप जाते हैं और अंधेरा दूर हो जाता है; जैसे शेर की गर्जना से मृगों की कतार तितर-बितर हो जाती है और धैर्यपूर्वक खड़े रहने का साहस नहीं रखती इसी तरह ही गुरु जी की सति नामु की गर्जना से पापों पर वज्रपात हुआ।

जहां बाबा गुरु नानक जी चरण रखते हैं वही स्थान पूजनीय स्थल बन जाता है। सारे जगत के प्रसिद्ध स्थान गुरु नानक जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए जैसे कि गोरख मता से नानक मता आदि। हर जगह संगत के सतिसंग के लिए धर्मशाला बन गई जहां नित्य प्रतिदिन कीर्तन होते और खुशियां रहतीं। बाबा गुरु नानक जी के चारों कूंटों और नौखंड पृथ्वी का अपने पवित्र उपदेशों से सच्चा मेल करके उद्धार किया। कलियुग में परमेश्वर का अवतार श्री गुरु नानक जी प्रकट हुए।

नोट— भाई बाले वाली जन्म साखी जी श्री गुरु अंगद देव साहिब जी ने भाई पैड़े मोखे से सम्वत् १६०० बि: में भाई बाले की ज़बानी लिखवाई थी उसमें आप जी का अवतार दिन कत्तक सुदी पूर्णिमा संवत् १५२६ लिखा है। इसके अनुसार ही आप जी का अवतार गुरुपर्व कार्तिक सुदी पूर्णिमा के दिन मनाया चला आ रहा है।

इस के उपरांत भाई मनी सिंघ जी को जब माता सुन्दरी जी ने श्री दरबार साहिब अमृतसर का ग्रन्थी सम्वत् १७७८ में नियत किया तो भाई जी ने अपने इस ग्रन्थी पद के समय १७७८ से १७९४ में, श्री गुरु नानक साहिब जी की जन्म साखी लिखी जिसमें भाई जी ने गुरु साहिब जी का अवतार दिन बैसाख वदी ३ (बैसाख २०) सम्वत् १५२६ लिखा। बाद में इसी लिखित को लेकर ही कर्म सिंघ जी हिस्टोरियन ने आज से लगभग पचास वर्ष पहले अपनी पुस्तक "कत्तक कि बैसाख?" में अपनी दलीलों के उदाहरण देकर गुरु जी का अवतार दिन बैसाख सही बताया, जिससे पंथ में द्वन्द्ध-युद्ध छिड़ गया और गुरु जी की जन्म-तिथि को धूमिल बना दिया गया। इस समय सिक्ख-पंथ की दो प्रमुख संस्थाएं शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और चीफ खालसा दीवान का यही फैसला है कि श्री गुरु नानक देव जी का अवतार दिन कत्तक सुदी पूर्णिमा को ही मनाया जाए।

गुरु जी के जन्म समय के लक्षण

बालक गुरु जी के जन्म के उपरांत जब पंडित हरदयाल आप जी जन्म पत्री बनाने लगा तो उसके पूछने पर दौलतां दाई ने बताया कि इस बालक के जन्म समय मैंने दो आश्चर्यजनक बातें देखी हैं। पहली यह कि और बालकों की भांति जन्म के समय रोने के स्थान पर बालक खिलखिला कर हंसा था और दूसरे, इसके जन्म वाली कोठरी में इस तरह प्रकाश हो गया था कि जैसे चन्द्रमा का उदय हो गया हो! फिर पंडित ने बालक के सारे शरीर के अंग और चिन्ह-चक्र देख कर महिता जी को बताया, महिता जी—

चौपाई—

इस सिसु, को मानहिगे दोऊ॥ हिंदू तुरक सिख होइ कोऊ॥
इस के चरन पोत की निआई॥ पार परहिं परमारथ पाई॥१॥
संगत करहिं तरहि भवसागर॥ सकल जगत महि होइ उजागर॥
बहुर नरक को करहि उधारा॥ नाम भगति दे दान उदारा॥ २॥

(ना प्र. अध्याय ४)

बाल लीला

श्री नानक जी प्रकट ही अवतार होकर हुए थे, इसलिए आप जी जन्म से ही गुरु-पारब्रह्म परमेश्वर का रूप थे। आप जी की बाल क्रीड़ाओं से पता चलता है कि आप जी विशेष शक्तियों के स्वामी थे। जिस स्थान पर आप जी अपने हमउमरों के साथ खेला करते थे वहां आप जी की इस याद में ननकाणा साहिब में गुरुद्वारा बाल लीला प्रसिद्ध है।

बाल लीला की एक झांकी

एक दिन माता तृप्ता जी ने आप को चूरी कूट कर दी। आप जी चूरी वाला कटोरा लेकर बाहर बालकों में खेलने चले गए। आप जी ने चूरी बालाकों के साथ बांट कर खा ली और पश्चात् जब घर वापिस आए तो माता जी ने पूछा, "बेटा! कटोरा कहां है?" तब आप जी ने हंस कर कहा— "माता जी! कटोरा बाहर बच्चों की खेलें देख रहा है।" माता जी ने जब गुस्से से देखा तो आप नें नज़रें झुका लीं। तब माता जी भोले-भाले, सुन्दर चेहरे को देखकर मोहित हो गई और गोदी में उठा कर प्यार से समझाया कि घर की चीज़ें बाहर नहीं फैंका करते।

इसी तरह ही गुरु जी घर की कई वस्तुएं बाहर बालकों को दे आते थे, जिस से महिता कालू जी और माता तृप्ता जी पंडित हरदयाल को उलाहमें देते रहते थे कि तुमने तो कहा था कि यह घर का उत्थान करेगा लेकिन यह तो घर उजाड़ रहा है! पंडित ने कहा, "महिता जी! आप देखोगे कि जो मैंने आपको बताया है, वह ठीक है।"

गोपाल पांधे के पास पढ़ना

इसके उपरांत जब गुरु जी ऐसे छोटे-छोटे करतब करते हुए छः वर्षों के हुए तो आप जी को पढ़ने योग्य समझ कर महिता कालू जी ने गोपाल पांधे के पास मुनीमी के काम के लिए लेखा-जोखा सीखने के लिए बिठा दिया। जब आप कुछ समय पढ़ते रहे तो एक दिन पांधे ने कहा कि नानक जी, पाती लिख कर दिखाएं। तब गुरु जी ने यह

पाती लिख कर पांधे को दिखाई:-

आसा म: १ ॥ पटी लिखी

ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ॥
सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ॥ १ ॥
मन काहे भूले मूड़ मना॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ॥

(पन्ना ४३२)

ननकाणा साहिब की पावन भूमि पर गुरु जी की इस याद में गुरुद्वारा पट्टी साहिब प्रसिद्ध है।

(सम्पूर्ण पट्टी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना ४३२ से पढ़ें)

पांधे को उपदेश

जब पांधे ने यह पट्टी पढ़ी तो उसने हैरान होकर कहा, "बेटा! तुम्हारा यह लिखना तो ठीक है, लेकिन तुम क्षत्रिय पुत्र हो! तुम्हें चाहिए कि लेखा पढ़-लिख कर अपने जीवन में प्रगति करो और सुखपूर्वक रहो। लेखा-जोखा सीख कर धन-दौलत कमा कर अपने परिवार को सुखी रखोगे तो तुम्हारी इज्जत बढ़ेगी। रिश्तेदारों में मान-सम्मान प्राप्त होगा।" तब गुरु जी ने कहा, "पांधा जी! यह लेखा-जोखा सीख कर मैं धन-दौलत तो कमा लूंगा लेकिन आगे भविष्य का क्या होगा? इस लिए हमें वह लेखा सीखना चाहिए जो लोक परलोक में काम आए।" पांधे ने पूछा, "नानक जी! वह ऐसा कौन सा लेखा है जो लोक परलोक में काम आए?" तब गुरु जी ने इस शब्द का उच्चारण किया :

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु॥
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु॥
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु॥ १ ॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ॥

(पन्ना १६)

अर्थात्- पांधा जी! दुनियां का मोह जला कर उसकी स्याही करो और उत्तम बुद्धि को कागज़ बना कर उसके ऊपर ईश्वर प्रेम की कलम से अपने मन को लिखने वाला करके गुरु के पवित्र उपदेश को लिखो। नाम की महिमा लिखो और लगातार बार-बार लिखते ही जाओ। हे पांधा जी! यह लेखा लिखना सीखें, जहां आप को लेखा देने की ज़रूरत होगी वहीं पर ही यह सच्चा परवाना आप के साथ होगा।

आप जी के श्रेष्ट विचार सुन कर पांधे ने आप जी को नमस्कार किया और महिता कालू जी से कहा, "महिता जी! यह बालक तो कोई महापुरुष जन्मा है, जो कोई इससे .ज्यादा विद्वान हो, वही इसे पढ़ा सकता है। मेरे में इसको और पढ़ाने की शक्ति नहीं।"

पंडित बृज लाल के पास पढ़ना

जब श्री नानक जी को पांधे से छुट्टी मिल गई तो महिता कालू जी ने विचार किया कि इसकी .ज्यादा धार्मिक रुचि है इसलिए इसको किसी वेदों शास्त्रों विद्या के जानने वाले पंडित के पास छोड़ना ही बेहतर होगा। वहां यह ध्यानपूर्वक पढ़ कर समझदारी से अपने कामों में सफलता प्राप्त करेगा।

यह विचार करने के बाद महिता जी ने श्री नानक जी को संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित बृज लाल के पास पढ़ने के लिए भेजा। पंडित आप जी को बड़े प्रेम से पढ़ाता रहा और आप जी बड़े प्यार से पढ़ते रहे। बाद में जब आप जी ने समझा कि यह काम भी पूरा हो गया है तो उससे छुट्टी कर के और काम करने के लिए आप जी कभी घर में ही आँखें बन्द कर के बैठे रहते और कभी बालकों के साथ खेलते समय बालको को पास बिठा कर उनको गीता का पाठ करके सुनाते रहते।

सप्त श्लोकी गीता

एक दिन जब श्री नानक जी बालकों के बीच पंडित के समान बैठ कर गीता का पाठ कर के अर्थ सुना रहे थे तो महिता कालू जी उधर से गुज़रे। महिता जी आप को ऐसा करते देख कर बहुत प्रसन्न

हुए और जब घर आये तो पूछने लगे कि बेटा! बाहर बालकों को क्या सुना रहे थे? वह मुझे भी बताओ! तब गुरु जी ने कहा कि पिता जी, मैं सप्त श्लोकी गीता पढ़ रहा था। फिर आप जी ने गीता के सात श्लोक पढ़ कर सुनाए तथा उनके अर्थ कर के बतलाए। आप जी ने बतलाया कि श्री कृष्ण भगवान ने अपने परम भक्त अर्जुन को इन सात श्लोकों द्वारा यह उपदेश दिया है— हे अर्जुन! ओंकार जो वेद का प्रथम अक्षर है, यह परम पुरुष पूर्ण ब्रह्म का नाम है। जो कोई इस ओंकार का जाप करेगा, तथा मुझ परम ईश्वर का ध्यान करेगा, वह शरीर त्याग कर मेरे परम धाम को प्राप्त होगा। सारे जगत में यह मेरा ही प्रकाश है। मेरा प्रकाश युगों के आदि, अंत तथा मध्य में सदैव समान रहता है। हे अर्जुन ! जो मेरे भक्त मेरी कथा-कीर्तन प्रेम से करते हैं तथा दूसरों को सुना कर पवित्र करते है एवं जो उसको प्रेम से सुनते हैं- मैं उनकी सदा ही रक्षा करता हूँ। जो मेरा भक्त दृढ़ निश्चय के साथ मुझे सत चित्, आनंद जान कर अपनी वासनाओं का दमन कर के मेरा स्मरण करता है, मैं उसके पीछे पीछे उसकी रक्षा करता रहता हूँ।

मुल्लां के पास .फारसी पढ़ना

जब यह अर्थ महिता कालू जी तथा माता तृप्ता जी ने श्री नानक जी से सुने तो वे बहुत प्रसन्न हुए कि इसने पंडित बृज लाल से अच्छा गुण ग्रहण कर लिया है। परन्तु महिता जी की प्रबल इच्छा यह थी कि नानक कुछ ऐसा काम सीख लें जिससे यह कुछ कमाई करने के योग्य हो जायें। अतः दूसरे दिन जब महिता जी ने अपने विचार राय बुलार को बतलाया तो उसने बड़ी सहानुभूति के साथ कहा कि पटवारी जी, श्री नानक जी को फ़ारसी पढ़ने के लिए मुल्लां (मौलवी) के पास भेज दीजिये। जब यह फ़ारसी पढ़ जावेंगे तो मैं इनको अपना मुंशी बना लूंगा। मुनीमी इन्होंने पांधा से सीख ली है और वेद शास्त्र इन्होंने पंडित से पढ़ लिए हैं। सरकारी नौकरी के लिए इनका .फ़ारसी पढ़ना ज़रूरी है। राय बुलार की सलाह से महिता कालू जी ने श्री नानक जी को

कभी नहीं भुलाते थे। पांधे, पंडित या मौलवी से जब भी कभी आप की कोई वार्ता होती तो आप जी सदा ही ईश्वर का स्मरण, महिमा और बुराई का त्याग करना ही निश्चय कराते थे। इन तीनों गुरुओं से गुरु जी ने आप व्यवहारिक विद्या सीखी और उन तीनों को अध्यातमिक विद्या सिखाई।

सच्चा यज्ञोपवीत [जनेऊ]

महिता कालू जी ने एक दिन नियत कर के पंडित हरिदयाल को कहा कि श्री नानक जी को क्षत्रीय रीति के अनुसार जनेऊ पहना दें।

जब सारी तैयारी सम्पूर्ण कर के सभी रिश्तेदारों के सामने पंडित गुरु जी के गले में जनेऊ डालने लगा तो आप जी ने कहा, "पंडित जी! इस जनेऊ का कया लाभ है ? यह क्यों पहना जाता है ?" पंडित जी ने कहा, "बेटा! यह जनेऊ पहनना क्षत्रीय कुल की रीति है, जो परम्परागत चली आ रही है। इसके बिना क्षतीय ब्राह्मण को शूद्र माना जाता है। यह परलोक में सहायता करता है।" गुरु जी ने कहा, "पंडित जी, यह सूत का धागा तो यहां शरीर के साथ ही जल कर भस्म हो जाता है; परलोक में यह कैसे सहायता कर सकता है?" इसके बाद गुरु जी ने यह श्लोक बोलना आरम्भ किया :

आसा की वार श्लोक मः १ ॥

चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ॥
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ॥
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ॥ १ ॥

(पन्ना ४७१)

अर्थात् :- चार तारों का बना हुआ धागा चार कौडियों से मोल ला कर चौंके में बैठ कर प्राणी के गले में डाल कर उसके कान में शिक्षा देने से उसका गुरु ब्राह्मण हो गया। लेकिन जब प्राणी मर जाता है तो वह सूत के जनेऊ के बिना ही दरगाह में जाता है। फिर यह परलोक में कैसे सहायता कर सकता है ? गुरु जी ने कहा, "अगर जनेऊ डालना

अच्छा दिन-वार पूछ कर मौलवी के पास फ़ारसी पढ़ने के लिए बिठा दिया। राय बुलार के पटवारी का सुपुत्र होने के नाते मौलवी ने जो कुछ भी श्री नानक जी को पढ़ाना था वह बड़े प्रेमपूर्वक पढ़ाता रहा। पर जब कुछ वक्त इसी तरह बीत गया तो गुरु जी यहाँ से भी छुट्टी करने के लिए नया कौतुक रचाने लगे। जब मौलवी ने पूछा कि नानक जी, आज पढ़ते क्यों नहीं? तो गुरु नानक जी ने कहा :

मरणा मुला मरणा॥ भी करतारहु डरणा॥ १ ॥ रहाउ॥
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई॥
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई॥ २ ॥

(सिरीरागु मः १ पन्ना २४)

अर्थात् :- हे मुल्ला जी! मृत्यु अवश्य आनी है, इसलिए उस सृजनहार ईश्वर से डरना और उसके नाम स्मरण करना चाहिए। सो मैं उसके डर में लगा हुआ हूँ। आप भी मौलवी या काज़ी तभी कहला सकते हो अगर उस ईश्वर का नाम स्मरण कर के उसे जानें क्योंकि पढ़ा हुआ चाहे कोई जितना भी हो, जब उसके श्वासों का अंत हो जाता है तो उसे भी यह संसार त्यागना पड़ता है। इसलिए ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।

आप जी के यह विचार सुन कर मौलवी ने कहा, "यह तो कोई ईश्वरीय आत्मा है। इसको और बालकों की भांति जान कर पढ़ाना अज्ञानता है। यह ईश्वरीय बातें करता है, किसी दिन यह ज़रूर कोई महापुरुष होगा!"

श्री नानक निरंकारी ने छः साल की आयु से अपनी १५ साल की आयु तक प्रथम तीन वर्ष पांधे से हिन्दी अक्षर और लेखा-जोखा सीखा। फिर तीन वर्ष पंडित से संस्कृत पढ़ कर वेदों-शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया। इसके पश्चात् तीन वर्ष मौलवी क़ुतुबदीन से उस समय की राज्य भाषा फ़ारसी सीख कर अपने आप को निपुन्न कर लिया। इस विद्या के साथ आप जी ने अपने निजी अध्यात्मिक विचारों को भी जारी रखा। ईश्वर का स्मरण और निजी स्वरूप के ख्याल को आप जी

हो तो इस तरह का डालना चाहिए :

सलोकु मः १ ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढ़ी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥"

(पन्ना ४७१)

अर्थात्:- दया की कपास हो, उससे संतोष का सूत बनाएं। उसको खाल की गांठें देकर सूत को वट्टा चढ़ाएं। अगर इस प्रकार का कोई जनेऊ हो तो वह डालें, क्योंकि यह जनेऊ न तो मैला होगा, न टूटेगा, न जलेगा और न ही गुम हो सकेगा। पंडित जी! वह पुरुष धन्य हैं जो ऐसा जनेऊ डाल कर प्रलोक सिधारते हैं। फिर गुरु जी ने कहा, 'पंडित जी!'

नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥ ३ ॥

अर्थात्:- परमेश्वर का स्मरण करने से सम्मान मिलता है और उसका मान-सम्मान ही सच्चे सूत का जनेऊ है। यह पवित्र जनेऊ कभी नहीं टूटता और इससे दरगाह में सम्मान मिलता है। यह पवित्र उपदेश सुन कर सभी रिश्तेदार और पंडित हरिदयाल गुरु जी की स्तुति करते हुए प्रसाद सेवन कर के अपने अपने घरों को चल दिए।

भैंसें चराना

बाद में श्री गुरु नानक जी ने संसारी जीवों को इस तरह भ्रम-जाल में फंसा देख कर बोल-चाल बहुत कम कर दिया। जहां बैठते, बैठे ही रहते, जहां लेटते, लेटे ही रहते। खाना-पीना भी छोड़ दिया और बोलना भी बंद कर दिया। अपने आप में ही मस्त रहने लगे। आप जी की इस तरह की दीवानों वाली दशा देख कर महिता जी ने सोचा कि इनकी यह दशा काम से बिना रहने के कारण और कुछ अधिक

पढ़ाई की वजह से हुई प्रतीत होती है। इस लिए इनको किसी काम पर लगाना चाहिए, जहां इनको दिमागी कार्य भी न करना पड़े और सारा दिन व्यस्त भी रहें।

इस विचार के अनुसार महिता कालू जी ने श्री नानक जी को कहा, "बेटा! तुम अपनी भैंसें चराने के लिए बाहर ले जाया करो। इस तरह तुम्हारा दिल भी बहल जाया करेगा और उदासी भी हट जाएगी।" पिता जी का कहा मान कर गुरु जी दूसरे दिन भैंसें ले कर बाहर चरवाने चले गए।

ज़िमींदार की खेती हरी करना

इसी तरह जब एक दिन भैंसों ने एक ज़िमींदार की हरी-भरी खेती चर डाली। ज़िमींदार अपनी फसल का नुक्सान देख कर बहुत दुःखी हुआ और उसने राय बुलार के पास जा कर पुकार की कि आप के पटवारी के सपुत्र ने अपनी भैंसें छोड़ कर मेरा खेत उजाड़ दिया है। खेत के उजाड़े जाने का कारण जब राय बुलार ने नानक जी से पूछा तो आप जी ने धीरे से कहा, "राय जी! आप अपना आदमी भेज कर पता लगवाएं कि इसका खेत उजड़ा भी है कि नहीं?" तब राय बुलार ने इन्साफ करने लिए अपना आदमी ज़िमींदार का नुक्सान देखने के लिए भेजा। खेत देख कर उसने राय बुलार को आकर कहा कि ज़िमींदार झूठ बोल रहा है; इसके खेत का तो एक भी पत्ता किसी पशु द्वारा खाया हुआ प्रतीत नहीं होता; मैंने अच्छी तरह से घूम कर खेत को देखा है। अपने आदमी से यह बात सुन कर राय बुलार ने ज़िमींदार को झूठा किया कि उसने बिना मतलब शिकायत की है।

सर्प छाया

एक दिन गुरु जी भैंसें चराने गए। गर्मियों के दिनों में एक वृक्ष के नीचे लेटे हुए थे कि सूर्य के ढल जाने से वृक्ष की छाया भी ढल गई और गुरु जी के मुख-मण्डल पर धूप आ गई। अचानक जब राय बुलार उधर आए तो देखा कि गुरु जी को छाया करने के लिए एक

सफेद सर्प आप जी के मुख पर अपने फ़न की छाया कर के सिर की तरफ बैठा हुआ है। बाद में राय ने देखा कि लोगों का शोर सुन कर सर्प वहीं लुप्त हो गया है और गुरु जी अपनी मौज में विराजे हैं। तब राय बुलार ने आप जी को परमेश्वर का पूर्ण रूप जान कर नमस्कार किया। इसके बाद यह बात सब लोगों में फैल गई।

इस घटना की याद में यहां गुरुद्वारा माल जी साहिब प्रसिद्ध है।

सच्ची खेती और किसानी

गुरु जी तो अपनी मौज में मस्त रहते थे, पर महिता कालू जी इन शिकायतों और बातों से बहुत घबराते थे। कभी ज़िमींदार के खेत की शिकायत और कभी भैंसें छोड़ कर सो जाना और कभी सर्प सिर की तरफ बैठे रहने की बातें लोग करते थे। इसलिए एक दिन पिता कालू जी ने कहा- बेटा ! अगर तुम्हारा मन भैंसें चराने को नहीं करता तो तुम अपनी खेती बोने का काम कर लिया करो। मैं तुम्हें इस काम के लिए जुताई का सारा सामान तैयार कर देता हूँ। गुरु जी ने कहा— पिता जी ! मैं सच्ची खेती करना चाहता हूँ, जिसकी बोई हुई फसल आगे भी काम आए। महिता जी ने कहा, 'वह सच्ची खेती कौन सी है?' तब आप जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

सोरठि मः १ ॥

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥ १ ॥
बाबा माइआ साथि न होइ ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥

(पन्ना ५९५)

अर्थात्—पिता जी! अपने मन को हाली (हल चलाने वाला) बना के खेती करनी चाहिए। अपने शरीर को खेत बना के उसको जप तप का पानी देना और उसमें ईश्वर के नाम का बीज बो कर उसके ऊपर संतोष का सुहागा फेरें और मन के अन्दर नम्रता धारण करें। अगर

यह प्रेम से की हुई खेती उग पड़े तो फसल से घर सम्पन्न हो जाता है। हे पिता जी ! यह संसारी माया जो आप खेती करके इकट्ठी करना चाहते हो, यह अन्त में साथ नहीं देती। इसने जगत को मोह लिया है; कोई ही इस बात को समझ सकता है।

सच्ची दुकान और सौदागिरी

आप जी के ये विचार सुन कर महिता कालु जी ने यह समझा कि यह टाल-मटोल करके खेती का काम भी नहीं करना चाहते, इस लिए इनको एक स्थान पर बैठने का काम करने के लिए दुकान उत्तम रहेगी। यह विचार करने के बाद पिता जी ने कहा, "बेटा ! अगर खेती का मुश्किल काम नहीं करना चाहते तो आसान काम दुकान कर लें। तब गुरु जी बोले, "पिता जी—

सोरठि मः १ ॥

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु॥
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु॥ २ ॥"

(पन्ना ५९५)

अर्थात्— अपनी आयु जो घटती जा रही है, इसकी दुकान कर के उसमें सच्चे नाम का सौदा डालें और श्रेष्ट विचारों को सौदा रखने वाली जगह बना कर उसमें नाम रूप सौदे को रखें। इस सौदे का ग्राहकों से लेन-देन करके लाभ प्राप्त करें जो आगे परलोक में भी साथी होता है।

इस संसार में आकर मनुष्य को दुकान किस तरह की करनी चाहिए—जब यह विचार आप जी के पिता जी ने सुने तो फिर सोच कर कहा, "बेटा ! अगर यह सिर्फ बैठने का भी काम तुम नहीं करना चाहते तो फिर कुछ रुपए ले लो और घोड़ों की सौदागिरी का काम जो धनवान लोग करते हैं, वह कर लो।" इस का उत्तर आप जी ने इस तरह दिया—

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु॥
खरचु बन्नु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु॥

निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु॥ ३ ॥

(पन्ना ५९५)

अर्थात्— पिता जी ! वेदों—शास्त्रों का सुनना सौदागिरी है और वहां से सच्चाई की प्राप्ति के घोड़े हैं। नेकियों का खर्च साथ लेकर इन घोड़ों को खरीदें। यह न समझें कि यह सौदा कल करेंगे! क्या पता कल आए ही नहीं! इस तरह करके निरंकार के देश सच्च-खण्ड में जाकर परम सुख की प्राप्ति होती है।

यह उत्तर सुन कर पिता जी ने समझ लिया कि यह इस लम्बे झंझट में घोड़े खरीद कर देश-विदेश में घूमते फिरना भी पसन्द नहीं करते। तब आप जी ने कहा, "बेटा ! अगर यह काम भी पसन्द नहीं तो फिर किसी की नौकरी कर लो।"

गुरु जी ने कहा—

लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कम्मु॥
बन्नु बदीआ करि धावणी ता को आखै धन्नु॥
नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वन्नु॥ ४॥ २॥

(पन्ना ५१५-१६)

अर्थात्— मन को परमात्मा के ध्यान में लगाना ही नौकरी है और नाम को मानना उस मालिक का काम है। बुराई को बांध कर जो नाम स्मरण के काम को फुर्ती से करता है, उसको हर एक धन्य-धन्य कहता है तो उसको नाम का चार गुणा ज़्यादा रंग चढ़ता है।

इस तरह जब महिता कालू जी ने देखा कि नानक जी न खेती का काम करना चाहते हैं, न दुकान का, न सौदागिरी का और न ही किसी नौकरी का, तो महिता जी चुप कर के अपने पटवारी के काम में लग गए।

भोला वैद्य

गुरु जी फिर अपनी मौज में अन्तर्मुख वृत्ति करके एकांत चुप-चाप घर में लेटे रहते। खाना-पीना भी बहुत कम कर दिया जिसके कारण आप का शरीर दुर्बल और कमज़ोर होने लगा। महिता कालू जी ने

वैद्य हरिदास को बुला कर कहा, "वैद्य जी ! नानक जी को देखो, इनको क्या रोग है? यह अपने आप बताते कुछ नहीं, पर दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होते जा रहे हैं।" वैद्य ने जब आप की नब्ज़ देखी तो उसको रोग का कोई पता न चला। जब वह फिर से बाजू पकड़ कर रोग देखने लगा तो गुरु जी ने उच्चारण किया—

सलोक मः १ ॥

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि॥ १ ॥

(पन्ना १२७९)

अर्थात्—गुरु जी ने वैद्य को सोच में डूबे हुए देख कर कहा—

"आप तो भोले वैद्य हो, जो बाजू को पकड़ कर रोग ढूंढ रहे हो। आप नहीं जानते कि रोगी को वह कौन सा रोग (दुःख) है जो उसके हृदय को पीड़ित कर रहा है। वैद्य ने कहा, "अगर आप को कोई अंदरूनी रोग है तो मैं आप को अन्दर खाने वाली दवा देता हूँ, जिससे हृदय को शान्ति मिल जाएगी।" तब गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

मलार मः १ ॥

दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख॥ इकु दुखु सकतवार जमदूत॥
इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ॥ वैद न भोले दारू लाइ॥ १ ॥
दरदु होवै दुखु रहै सरीर॥ ऐसा दारू लगै न बीर ॥१ ॥ रहाउ॥
खसमु विसारि कीए रस भोग॥ तां तनि उठि खलोए रोग॥
मन अन्धे कउ मिलै सजाइ॥ वैद न भोले दारू लाइ॥ २ ॥
चन्दन का फलु चन्दन वासु॥ माणस का फलु घटि महि सासु॥
सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ॥ ता कै पाछै कोइ न खाइ॥ ३ ॥
कंचन काइआ निरमल हंसु॥ जिसु महि नामु निरंजन अंसु॥
दूख रोग सभि गइआ गवाइ॥ नानक छूटसि साचै नाइ॥ ४ ॥ २ ॥

(पन्ना १२५६)

अर्थात्— वैद्य जी ! मुझे एक दुःख अपने प्रियतम से बिछुड़ने का है, एक दुःख उसके दर्शन की तृष्णा का है; एक दुःख मुझे शक्तिशाली

यमदूत का है, जो अचानक ही आदमी को पकड़ कर ले जाता है। एक दुःख यह है कि पता नहीं कब रोग शरीर पर हावी जो जाए! इस लिए वैद्य जी, आप मुझे कोई दवाई न दें। हे भोले वैद्य ! मुझे कोई दवा न दें क्योंकि जिस दवा से दर्द दूर न हो, उसके खाने से या शरीर पर प्रयोग करने से क्या लाभ? जिन लोगों ने भगवान को भूल कर भोग-विलास को अपनाया है उनके शरीर में कई रोग हो जाते हैं। इन रोगों द्वारा ईश्वर को भूले हुए लोगों को सज़ा मिलती है। इसलिए हे भोले वैद्य ! मुझे कोई दवा न दीजिए। जिस तरह चन्दन के वृक्ष का फल सुगन्धित है इसी प्रकार ही पुरुष का फल उसके अन्दर श्वास है। श्वासों के खत्म हो जाने से शरीर गिर जाता है और बाद में कोई कुछ नहीं खाता। अगर शरीर स्वर्ण की भांति तन्दरुस्त हो तो वह जीव भी अच्छा होता है जिसके हृदय में ईश्वर के नाम का स्थान है। ऐसा मनुष्य दुःख-रोग सब कुछ खत्म करके ही आगे जाता है। इन कष्टों से, ईश्वर के स्मरण से ही छुटकारा मिलता है।

गुरु जी से अपने रोग का यह व्याख्यान सुन कर वैद्य चुप ही रह गया और जाता हुआ बतला गया कि इनका रोग मेरी समझ में नहीं आता, क्योंकि ये तो किसी और ही रोग की बातें करते हैं! वैद्य की यह बात सुन कर महिता कालू जी बहुत परेशान हुए।

गुरु जी ने खरा सौदा करना

बाद में जब गुरु जी ने दो-तीन माह के पश्चात् अपने आप ही खाना-पीना और बोलना आरम्भ कर दिया तो महिता कालू जी ने आप जी को किसी काम में लगाने के विचार से बीस रुपए दिए और कहा कि इनसे कोई लाभदायक सौदा करके अपना काम चलाएं। इससे आप का दिल भी बहल जाएगा और कमाई का साधन भी बन जाएगा। गुरु जी के साथ जाने के लिए महिता कालू जी ने भाई बाले को भी बुद्धिमान समझ कर तैयार कर दिया।

गुरु जी भाई बाले को साथ लेकर लाहौर की तरफ लाभदायक

सौदा करने के लिए जा रहे थे कि आप को चूहड़काणे गांव के बाहर जंगल में एक साधू-मण्डली मिली। यह देख कर कि साधु जंगल में बैंठे हैं और इनके पास भोजन का कोई प्रबन्ध नहीं है, भाई बाले द्वारा उन्होंने बीस रुपए की खाद्य-सामग्री मंगवा दी तथा संतों को भोजन करने लिए देकर भाई बाले को कहा कि इस से ज़्यादा कोई और "खरा (अच्छा) सौदा" नहीं है। इससे बहुत लाभ होगा। घाटा (नुकसान) कभी नहीं पड़ेगा। भाई बाले को यह समझाते हुए गुरु जी खाली हाथ तलवंडी वापस आ गए।

आप जी के इस करनामे के कारण चूहड़काणे में गुरुद्वारा "खरा सौदा" शोभाएमान है।

पिता कालू जी की नाराज़गी

तलवंडी पहुंच कर जब भाई बाले ने महिता जी को यह बात बताई कि श्री नानक जी ने बीस रुपए का आटा दालें लेकर संतों को भोजन करा दिया है तो महिता जी श्री नानक जी को बहुत गुस्से हुए और ताड़ना भी की। जब इस बात का राय बुलार को पता चला तो उसने महिता कालू जी को बुला कर कहा कि नानक जी तो परिपूर्ण भगवान् के नूर हैं; इनको कोई गलत बात न कहा, करो! आगे से अगर यह आपका नुकसान भी करें तो आप मेरे से पूरा करना परन्तु इनको कुछ मत कहना! महिता जी ने कहा, "राय जी ! मैं आप दुःखी होकर इनके भले के लिए ही कुछ कहता हूँ, मुझे भला इनसे और कौन अच्छा है ?"

इसके बाद महिता कालू जी ने लाचार होकर राय बुलार की सलाह से गुरु जी को बहिन नानकी और बहनोई जै राम जी के साथ सुल्तानपुर भेज दिया और कहा कि इनको अपने पास ही किसी काम में लगा दें।

दूसरा काँड

मोदी की कार

राय बुलार की प्रेरणा से बहिन नानकी जी और बहनोई जै राम गुरु जी को बहुत खुशी से अपने पास सुल्तानपुर ले गए।

जीजा जै राम नवाब दौलत खान के दीवान थे। आप जी ने दौलत खान को कह कर गुरु जी को सम्वत् १५४२ में उसका मोदी (शाही लंगर और फौज को खाने-पहनने का सामान देने वाला) लगवा दिया।

गुरु जी जब सौदा तोल कर ग्राहकों को देते तब वह "तेरा तेरा" कहते जाते। चौदह कहने की याद ही भूल जाते थे। यदि कोई पूछता, "मोदी जी ! "तेरा तेरा" ही कहते जाते हो, आगे की गिनती क्यों नहीं गिनते?" तब आप जी कहते—

***नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि॥**
मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि॥ ४॥

(पन्ना ५५७)

सारा शब्द यह है:

वडहंसु मः १ घरु १॥

अमली अमलु न अम्बड़ै मछी नीरु न होइ॥
जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ॥ १॥
हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै॥ १॥ रहाउ॥
साहिबु सफलिओ रुखड़ा अमृतु जा का नाउ॥
जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ॥ २॥
मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि॥
तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि॥ ३॥
नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि॥
मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि॥ ४॥

(पन्ना ५५७)

भाव— हे भगवान् ! तू मेरी पूंजी हैं। मैं तेरा बणीआं (सौदा बेचने वाला) हूँ। इन लोगों के मन में यह भ्रम है कि मैं "तेरा तेरा" ही करता रहता हूँ, चौदह नहीं कहता; यह तब ही दूर होगा जब यह तेरी भक्ति में लग जाएंगे।

गुरु जी का विवाह

जब दो साल के करीब गुरु जी को मोदी का काम चलाते हुए हो गए और आप जी की आयु भी १८ साल की हो गई तो आप जी को हर प्रकार योग्य समझ कर जीजा जै राम तथा बहन नानकी जी ने बाबा कालू चंद और माता तृप्ता के साथ सलाह करके गुरु जी का विवाह मूल चन्द खत्री की बेटी सुलखनी जी के साथ २४ जेठ सम्वत् १५४४ को अपनी कुल रीति की मर्यादा अनुसार बड़ी धूमधाम के साथ कर दिया। विवाह करके आप जी फिर "मोदी की कार" में लग गए और तेरा तेरा का जाप करने लग पड़े।

मोदीखाने का हिसाब होना

इनकी तेरा तेरा" की रट देख और सुन कर ईर्षा करने वालों ने नवाब के कान भर दिए कि आप का मोदी तो मोदीखाना लुटाता जा रहा है! यदि आप ध्यान न देंगे तो सब कुछ, लुटा कर किसी तरह भाग जाएगा। परन्तु जब नवाब ने पड़ताल कराई तो पता चला कि सरकारी हिसाब ठीक है और गुरु जी की कुछ रकम अधिक है। इस तरह ही दो बार फिर लोगों के कहने पर नवाब ने हिसाब कराया परन्तु हमेशा गुरु जी की रकम ही नवाब की तरफ निकलती रही।

वेईं नदी में प्रवेश

गुरु जी प्रत्येक प्रातः वेईं नदी में जो कि शहर सुल्तानपुर के पास ही बहती है, स्नान कर के लिए जाते थे। एक दिन जब आप ने पानी में डुबकी लगाई तो फिर बाहर न आए। कुछ समय उपरान्त आप जी के सेवक ने, जो कपड़े पकड़ कर नदी के किनारे बैठा था, जा कर जै

राम जी को ख़बर सुनाई कि नानक जी डूब गए हैं तो जै राम जी तैराकों को साथ लेकर नदी पर गए। आप जी को बहुत ढूंढा किन्तु आप नहीं मिले। बहुत देखने के पश्चात् सब लोग अपने अपने घर चले गए।

जीजा जै राम के घर बहुत चिन्ता और दुःख प्रकट किया जा रहा था कि तीसरे दिन सवेरे ही एक स्नान करने वाले भक्त ने घर आकर बहिन जी को बताया कि आप का भाई नदी के किनारे बैठा है। यह सुन कर जीजा जै राम जी वेईं की तरफ दौड़ पड़े और जैसे जैसे पता चलता गया और बहुत से लोग भी वहां पहुंच गए। जब इस तरह आप के चारों तरफ लोगों की भीड़ लग गई। आप जी चुपचाप अपनी दुकान पर पहुंच गए। आप जी के साथ स्त्रियों और पुरुषों की भीड़ दुकान पर आने लगी। लोगों की भीड़ को देख कर गुरु जी ने मोदीखाने का दरवाज़ा खोल दिया और कहा जिस को जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह उसे ले जाए! मोदीखाना लुटाने के पश्चात् गुरु जी फकीरी चोला पहन कर शमशान घाट में जा बैठे। मोदीखाने को लुटाने और गुरु जी के चले जाने की ख़बर जब नवाब को मिली तो उसने मुंशी द्वारा मोदीखाने की किताबों का हिसाब जै राम जी को बुला कर पड़ताल करवाया। हिसाब देखने के पश्चात् मुशी ने बताया कि गुरु जी के सात सौ साठ रुपए सरकार की तरफ अधिक हैं। इस बात को सुन कर नवाब बहुत खुश हुआ। उसने गुरु जी को बुला कर कहा कि उदास न होवें; अपना रहता पैसा और मेरे पास से पैसा लेकर मोदीखाने का काम जारी रखें। पर गुरु जी ने कहा, "अब हमने यह काम नहीं करना; हमें कुछ और काम करने का भतवान् की तरफ से आदेश हुआ है।" नवाब ने पूछा, "क्या आदेश हुआ है ?" तब गुरु जी ने मूल-मन्त्र उच्चारण किया :-

१ ओंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥

नवाब ने पूछा कि यह आदेश आप को भगवान् ने कब दिया ?

गुरु जी ने बताया, "जब हम वेईं में स्नान करने गए थे तो वहां से हम सच्चखण्ड अपने स्वामी के पास चले गए थे। वहां से हमें आदेश हुआ कि नानक जी! यह मन्त्र आप जपो और दूसरों को जपा कर कलयुग के लोगों को पार लगाओ! इस लिए अब हमें अपने मालिक के इस हुक्म की पालना करनी है।" इस सन्दर्भ को भाई गुरदास जी वार १ पउड़ी २४ में लिखते हैं—

बाबा पैधा सचि खंडि नउ निधि नामु गरीबी पाई॥

अर्थात्- बाबा नानक जी सच्च-खण्ड गए। वहां आप को नौ निधियों का खज़ाना नाम और निर्भयता प्राप्त हुई। यहां वेईं के किनारे जहां गुरु जी वेईं से बाहर निकल कर प्रकट हुए थे, गुरुद्वारा घाट साहिब अथवा गुरद्वारा बेर साहिब, बहुत सुन्दर बना हुआ है। इस स्थान पर ही गुरु जी प्रातः स्नान कर के कुछ समय के लिए भगवान् की तरफ ध्यान कर के बैठते थे।

न कोई हिन्दु न मुसलमान

नवाब से बातचीत करने के पश्चात् गुरु जी द्वारा शमशान घाट में जा बैठे और किसी के साथ कोई बात नहीं करते थे, परन्तु अगर कुछ बोलते तो केवल इतना ही कहते : ***न कोई हिन्दु न मुसलमान*** जिसका अर्थ था कि हिन्दु मुस्लिम दोनों बनावटी रूप हैं; सच्चा, ईमानदार अपने धर्म के प्रति कोई भी नहीं है।

आप जी की शान्त और दीवानों जैसी अवस्था देख कर कोई देखने वाला कहता कि यह दीवाने हो गए हैं, तो कोई कहता कि इन्हें भूतों-प्रेतों ने घेर लिया है। लोगों की ये बातें सुन कर नवाब ने अपने काज़ी को गुरु जी की खबर लेने भेजा। जब काज़ी ने जाकर आप जी से कुशलता पूछी तो आप जी ने इस शब्द द्वारा उत्तर दिया :

मारू महला १॥

कोई आखै भूतना को कहै बेताला॥
कोई आखै आदमी नानकु वेचारा॥ १॥

भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना॥
हउ हरि बिनु अवरु न जाना॥ १॥ रहाउ॥
तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ॥
एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ॥ २॥
तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ॥
हुक्मु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ॥ ३॥
तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु॥
मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु॥ ४॥

(पन्ना ९९१)

यह शब्द कहने के पश्चात् गुरु जी फिर से 'न कोई हिन्दु न मुसलमान' कहने लग गए। यह बात सुन कर काज़ी ने नवाब को आकर बताया कि नानक हिन्दु-मुसलमान दोनों की निन्दा करता है। उसको बुला कर पूछना चाहिए कि वह मुसलमानों के संबंध में ऐसी बात क्यों कहता है?

नवाब को सच्चे मुसलमान के बारे में बताना

काज़ी के ज़ोर पर जब नवाब ने गुरु को बुला कर पूछा कि क्या यह बात ठीक ही आप ने कही है 'न कोई हिन्दु न मुसलमान'? अगर आप ने यह ठीक कहा है तो फिर बताएं मुसलमान कोई क्यों नहीं है?

गुरु जी ने कहा, "नवाब साहिब! मुसलमान होना बहुत कठिन है, जैसा कि–

वार माझ सलोकु मः १॥

मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै।
अवलि[1] अउलि दीनु करि मिठा, [2]मसकल माना मालु[3] मुसावै॥
होइ मुसलिमु [4]दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै॥
रब की रजाइ मन्ने सिर उपरि करता मन्ने आपु गवावै॥
तउ नानक सरब जीआ [5]मिहरम्मति होइ त मुसलमाणु कहावै॥ १॥"

(पन्ना १४१)

---

[1]औलीयों एवं संतों का। [2]जंगाल को काटने वाले हथियार की भांति। [3]विकारों के धन को लुटाए। [4]धर्म का नेता। [5]दयावान।

मस्जिद में

इस तरह वार्तालाप करते हुए जब नमाज़ का समय हो गया तो काज़ी ने कहा, "अब नमाज़ का समय हो गया है, हमारे साथ मस्जिद में चल कर नमाज़ पढ़ो और देखो कि हम सच्चे मुसलमान हैं कि नहीं?"

गुरु जी उनके साथ नमाज़ पढ़ने मस्जिद में चले गए। काज़ी और नवाब ने गुरु जी को अपने साथ खड़ा कर लिया और नमाज़ पढ़ने लग गए। परन्तु गुरु जी चुपचाप खड़े रहे। जब वे नमाज़ से निवृत्त हुए तो काज़ी ने पूछा, "आप जी ने हमारे साथ नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी?" गुरु जी ने कहा, "मैं नमाज़ किसके साथ पढ़ता ? तुम्हारे घर घोड़ी ने बच्चा दिया है। तुम्हारा मन तो उस घोड़ी के बच्चे में था कि वह कहीं घर के आंगन के कुएं में न गिर पड़े! नमाज़ पढ़ने वाला तेरा मन तो घोड़ी के बच्चे में था! मैं नमाज़ किस के साथ पढ़ता?"

यह बात सुन कर काज़ी ने कुछ संकोच के साथ कहा, "ठीक है, मेरा मन अगर नमाज़ में नहीं था तो आप नवाब साहिब के साथ पढ़ लेते!" तब गुरु जी ने कहा, "नवाब साहिब का मन तो काबुल में घोड़े खरीद रहा था! वह भी यहां नमाज़ में उपस्थित नहीं थे। आप दोनों ने ईश्वर के साथ मज़ाक किया है। मैं नमाज़ किस के साथ पढ़ता ?" आप जी के यह वचन सुन कर काज़ी और नवाब दोनों ने ही अपनी भूल को माना और आप जी को ईश्वर के प्यार वाला सच्चा महापुरुष मान कर नमस्कार किया।

घर-परिवार का त्याग

इस वार्तालाप के पश्चात् गुरु जी फिर शमशान घाट जा बैठे। आप जी पास आने-जाने वालों की सदा ही भीड़ लगी रहती थी। आप जी सब को यथा योग्य ईश्वर स्मरण का उपदेश देते रहते। दो-अढ़ाई महीने यहां रहने के बाद आप जी ने लोक-कल्याण के लिए तैयारी कर ली। इस समय तक आप जी के घर दो साहिबज़ादे (श्री चन्द जी

भाद्रपद सुदी ९ सम्वत् १५५१ और श्री लक्ष्मी दास जी १९ फाल्गुन सम्वत् १५५३ को) श्री माता सुलक्ष्णी जी की कोख से हो चुके थे। इन दोनों साहिबज़ादों और इनकी माता श्री सुलक्ष्णी जी को आप जी ने बहिन नानकी जी के पास रहने के लिए छोड़ दिया।

माता-पिता और सास-ससुर का रोकना

आप जी की यह तैयारी सुन कर गुरु जी के माता-पिता और सास-ससुर भी सुल्तानपुर पहुंच गए। इन्होंने बहिन नानकी जी और बहनोई जै राम जी के साथ मिल कर अपने अपने ढंग से आप जी को घर बाहर और स्त्री, पुत्र छोड़ कर जाने से रोकने के यत्न किए पर गुरु जी ने योग्य उत्तर देकर अपने फैसले को अटल रखा और मरदाने मरासी को साथ लेकर लोक कल्याण के लिए दृढ़ संकल्प करके चल पड़े।

गुरु जी का प्रचार करने का ढंग

गुरु जी का प्रचार करने का ढंग आधुनिक प्रचार ढंगों से भिन्न था। अपने मिशन के प्रचार के लिए गुरु जी न कोई जलसा करते थे और न ही कोई इश्तहार छाप कर बाँटते थे। जहां प्रचार के सुधार की ज़रूरत होती,वहां पहुंच कर आप कोई नया ही करिश्मा करते थे, जिसको देख कर उस करिश्मे का विरोधी दल आप जी के साथ वार्ता करने आ जाता था और चर्चा करके असलीयत को समझ कर आप जी के सिद्धातों को ग्रहण कर लेता था। गुरु जी की देशारटन फेरियों में से, जो आप जी की चार उदासियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। पाठ्क गण देखेंगे कि किस तरह गुरु जी ने देश की चार दिशाओं के कोने-कोने में पहुंच कर नया ढंग प्रयोग करके अपने मिशन का प्रचार किया।

उस समय एक तरफ अपने आप को धार्मिक प्रवर्त्तक कहलाने वाले जोगियों, पंडितों और मुल्लों मौलवियों आदि श्रेणियों का ज़ोर था और दूसरी तरफ दुनियां को लूट कर खाने वाले चोरों, ठगों, पाखंडियों और अत्यचारी राज्य-कर्मचारियों का बोलबाला था। गुरु जी ने इन दोनों श्रेणियों की मंज़िल (निवास) पर पहुंच कर उनका सुधार

करने के लिए ये उदासियां धारण कीं।

उस समय जन-साधारण के करने कि लिये न मोटरें न रेल गाड़ियाँ; न हवाई जहाज़ आदि साधन थे। गुरु जी ने अपने साथी मरदाने के साथ तिब्बत से लंका तक, उत्तर से दक्षिण और नागालैंड, सिआम, से मिसर आदि अरब देसों, पहाड़ों, दरियाओं, समुद्रों, जंगलों तथा रेगिस्तानों को पार करके लगभग बीस इक्कीस साल पैदल सफर किया।

उस समय देश में जो घोर ज़ुल्म हो रहा था उसका वर्णन आप जी ने इन शब्दों में किया है :

वार माझ सलोकु मः १

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ॥
हउ भालि विकुन्नी होई॥ आधेरै राहु न कोई॥
विचि हउमै करि दुखु रोई॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई॥ १ ॥

(पन्ना १४५)

भावः राजा लोग ज़ाल्म होकर लोगों पर ज़ुल्म कर रहे थे, सारे अंधेर ही अंधेर (जुल्म) है; सच्च कहीं नहीं मिलता। अंधेर (ज़ुल्म) से बचने के लिये लोग दुःखी हैं। लोगों का यह दुःख किस तरह दूर किया जाये ?

काँड तीसरा

पहली उदासी पूर्व की

(सम्वत् १५५४ से १५६५)

गुरु जी के उपरोक्त वचन के आधार पर भाई गुरदास जी लिखते हैं:

बाबा देखै धिआनु धरि जलती सभि पृथिवी दिसि आई।
बाझु गुरू गुबारु है, है है करदी सुणी लुकाई।

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई॥ २४॥ *(वार १)*

अर्थात्:- बाबा जी (श्री गुरु नानक जी) ने जब अपनी ज्ञान-दृष्टि से देखा तो आप जी को सारी सृष्टि ही पापों की आग में जलती हुई नज़र आई। सच्चे गुरु के बिना झूठ और पापों का ग़ुबार चढ़ा हुआ था, जिसमें सारी सृष्टि हाए! हाए! (मारे गए! लूटे गए!) करती सुनाई देती थी। गुरु जी उदासी का भेष धारण करके पृथ्वी के लोगों को सच्चे रास्ते डालने के लिए निकल पड़े।

भाई मरदाने को साथ लेकर गुरु जी सुल्तानपुर से ब्यास नदी का तट पार करके [1]गोइंदवाल और आगे चल कर [2]अमीशाह खालड़ा, घविंडी (खालड़ा सीमा के नज़दीक) से जाहमन आए। इस गांव में आप जी की एक भाटड़े [3]नरीआ ने सेवा की। उसने गुरु जी को बड़े प्रेम के साथ अपने पास रखा और उपदेश लेकर आप जी का सिक्ख बना। यहां से गुरु जी चाहल गांव अपने ननिहाल जाते हुए रास्ते में एक रोड़ी पर वृक्षों की छांव के नीचे बैठे, जो गुरु की रोड़ी साहिब के नाम से प्रसिद्ध है। यहां से चल कर गुरु जी चाहल अपने ननिहाल जा पहुंचे।

चाहल कुछ दिन विश्राम कर के बाद में आप लाहौर पहुंच गए। लाहौर में कुछ आप जी ने देखा उसका वर्णन आप जी ने इस तरह किया है :

सलोक वारां ते वधीक॥ महला॥ १॥
लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु॥ २७॥

(पन्ना १४१२)

---

[1]उस समय सम्वत् १५५४ में गोइंदवाल में एक समुद्री तट के रूप में केवल मल्लाहों के कुछ कच्चे झौंपड़े ही थे। वर्तमान गोइंदवाल गोंदे क्षत्रिय ने गुरु अंगद देव जी के आशीर्वाद से सम्वत् १६०० में बसाया था। [2]इन गांवों में आप जी के यादगारी गुरुद्वारे हैं। [3]इस प्रेमी सिक्ख को मिलने के लिए महान् कोष के अनुसार गुरु जी दो वार फिर से आए थे। इसका कारण यह कहा गया है कि महिता कालू जी पठे विंड (डेहरा साहिब गांव जामराए के नज़दीक) के निवासी थे। गुरु जी अपने ननिहाल चाहल गांव से पठे विंड को जाहमन के रास्ते अपने सिक्ख भक्तों को मिल कर जाते रहते थे।

अर्थात्:- लाहौर शहर में सवा पहर दिन चढ़े तक कहिर (ज़ोर ज़ुल्म) होता रहता है।

भाई लालो के पास (सैदपुर)

लाहौर शहर के ऐसे घृणास्पद हालात देख कर गुरु जी रावी नदी पार कर के गुजरांवाले के ज़िले में (ऐमनाबाद) अपने एक सिक्ख भाई लालो के पास जा बसे। आप जी केवल भोजन करने के लिए ही भाई लालो के पास आते थे; नहीं तो गांव से आधा मील बाहर एक रोड़ी के ऊपर पत्थरों का आसन कर के सारा समय बैठ कर नाम-स्मरण करते रहते थे। यहीं से ही आप का नाम नानक तपा प्रसिद्ध हुआ था।

दो-तीन दिन उपरान्त भाई मरदाना यहां से अपने परिवार को मिलने तलवंडी चला गया।

मलिक भागो को उपदेश

इन दिनों में ही सैदपुर के पठान राजा के दीवान मलिक भागो ने ब्रह्म भोज करके सब को भोजन करवाया परन्तु जब उसको पता चला कि नानक तपा भोजन ग्रहण करने नहीं आया तो उसने इसमें अपना निरादर अनुभव किया कि मेरे बुलाने पर कोई क्यों नहीं आया? मलिक के अपना आदमी भेज कर गुरु जी को बुला कर पूछा कि आप मेरे ब्रह्म भोज में शामिल क्यों नहीं हुए?

गुरु जी ने उसको उत्तर देते हुए कहा कि आप अपना भोजन मंगवाएं, अगर ग्रहण करने योग्य होगा तो ग्रहण कर लेंगे। मलिक ने अपने नौकर से हलवा, पूड़ी और अनेकों उत्तम पदार्थ मंगवाए और गुरु जी के आगे रख दिये। दूसरी तरफ गुरु जी ने भाई लालो से उसका बाजरे का सूखा टुकड़ा भी मंगवा लिया। मलिक का हलवा—पूड़ी आप ने दाएं हाथ में पकड़ लिया और लालो की रोटी का टुकड़ा बाएं हाथ में।

देखने वाले हैरान थे कि यह क्या हो रहा है! गुरु जी ने सब के सामने दोनों हाथों की मुठ्ठियों को ज़ोर से निचोड़ा। तब सभी ने देखा

कि मलिक भागो के टुकड़े में से खून के कतरे गिर रहे थे और लालो के टुकड़े में से दूध की बूंदें टपक रही थीं। एक तरफ से दूध और दूसरी तरफ से खून देख कर लोग हैरान रह गए। गुरु जी ने कहा, "देख, मलिक भागो! तेरे ब्रह्म भोज में से खून टपक रहा है। यह ब्रह्म भोज तुमने गरीबों के ऊपर ज़ुल्म करके उनका खून निचोड़ कर तैयार किया है परन्तु उधर भाई लालो ने अपनी सच्ची-सुच्ची कमाई लगा कर जो रोटी तैयार की है उसमें से ईमानदारी की कमाई का दूध टपक रहा है। इस लिए कोई सूझ-बूझ वाला साधू दूध को ग्रहण करने के बाद रक्त ग्रहण नहीं करता। यही कारण है कि हम तुम्हारे भोज में शामिल नहीं हुए।"

गुरु जी से ये बातें सुन कर मलिक बहुत परेशान हुआ। उस ने अपनी भूल की माफी मांगी और आगे से गरीबों पर दया करने का प्रण किया। इसी तरह गुरु जी ने एक धनवान का अभिमान चूर अथवा दूर कर के उसको ईमानदारी की कमाई करने का उपदेश दिया और ईमानदारी की कमाई करने वाले भाई लालो को सम्मानित किया।

नीचों का सम्मान

फिर जब पंडितों ने शोर मचाना शुरु किया कि नानक दोषी है, जो उत्तम क्षत्रिय जाति में जन्म लेकर नीचों के घर खाना खाता है, तब गुरु जी ने यह शब्द उचारण किया :

सिरीरागु मः १

लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ॥
लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ॥...
सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ॥
कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ॥
साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ॥ ३॥
नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस॥

जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस॥ ४ ॥३ ॥

(पन्ना १५)

अर्थात्:- परमेश्वर के लेखे में ही बोलना होता है और लेखे में ही खाना खाते हैं। लेखे में ही चलना, सुनना और देखना होता है। अपने आप को हर कोई बड़ा कहता है पर अपने कहने से कोई बड़ा नहीं होता। एक सच्चा परमेश्वर ही बड़ा है; बाकी सारे संसार के जीव उसके आगे छोटे हैं। मैं (नानक) संसार के उन छोटे जीवों में से एक हूँ। उनके साथ ही मेरा मेल-जोल है। बड़ों के साथ मेरी बराबरी नहीं है क्योंकि जहां नीचों की देख-भाल होती है, वहीं परमेश्वर की कृपा-दृष्टि होती है। आप जी के ये वचन सुन कर पंडित चुप हो गए, और गुरु जी अपने कंकड़ों के आसन पर जा बैठे।

सैयदपुर में गुरु जी की इस याद में भाई लालो के घर एक कुआं है जिसके जल के साथ गुरु जी स्नान करते थे, और एक गुरुद्वारा रोड़ी साहिब जहां गुरु जी कंकड़ों के आसन पर बैठ कर आत्म-चिंतन करते थे, प्रसिद्ध हैं।

तलवंडी मां-बाप के पास

मरदाना, जो कुछ दिनों से अपने परिवार को मिलने के लिए तलवंडी गया हुआ था, वह भी वापिस आ गया। उसने गुरु जी को राय बुलार की तरफ से विनती की कि एक बार तलवंडी आकर दर्शन दे जाएं। वह वृद्ध अवस्था के कारण अपने आप तुम्हें मिलने नहीं आ सकता। फिर मरदाने ने बताया कि माता तृप्ता जी और महिता कालू जी यथा और श्रद्धालू लोग भी आप जी को बहुत याद करते हैं और मिलने के लिए व्याकुल हैं।

गुरु जी मरदाने से यह सन्देश सुन कर एक महीना सैयदपुर निवास करने के उपरान्त तलवंडी को चल दिए। तलवंडी पहुंच कर आप जी बाहर ही एक कुएं के पास ठहर गए।

जब मरदाने के द्वारा गुरु जी के बाहर आने का पता चला तो आप जी के माता-पिता और चाचा लालू जी आप जी को मिलने आए।

परस्पर बातों के दौरान महिता कालू जी और चाचा लालू जी ने आप जी को घर रह कर काम-काज करने और अपनी स्त्री व पुत्रों की देख-भाल, पालन-पोषण हेतु बहुत ज़ोर लगाया। मगर आप जी ने कहा कि मैं अपना जीवन लोक—कल्याण के लिए लगाना चाहता हूं; मैं इस लोक-कल्याण के काम में ही कमाई करना और अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण समझता हूँ।

फिर इतनी देर में राय बुलार का आदमी आप जी को लेने आ गया। आप जी राय बुलार का प्रेम और श्रद्धा देख कर उसके घर मिलने चले गए। राय बुलार ने भी बड़े सम्मान के साथ आप जी को घर रहने की प्रेरणा दी पर आप जी ने नम्रता के साथ उसकी बात को भी अस्वीकार कर दिया।

सज्जन ठग का उद्धार

कुछ दिनों के लिए माता-पिता के पास घर रह कर और अपने श्रद्धालुओं को मिल कर गुरु जी मरदाने को साथ लेकर फिर चल पड़े और रावी को पार करके मुलतान की तरफ चल दिए। रास्ते में एक दिन हड़प्पा ठहरे और फिर तुलंबे (ज़िला मुलतान में) पहुंच गए। यहां एक बड़ा प्रसिद्ध ठग रहता था, जिसका नाम था सज्जन। इसने अपने घर में ही हिन्दुओं के लिए मन्दिर और मुसलमानों के लिए मसजिद बनाई हुई थी और आने-जाने वाले यात्रियों के लिए खाने-पीने का और रहने का भी प्रबन्ध किया हुआ था। पर जब रात का समय होता तो यात्री को मार-काट कर उसके पास से सारा कुछ छीन लेता था। गुरु जी इसका सुधार करने के लिए मरदाने सहित उसके घर रात ठहरने के लिए चले गए। सज्जन ने इनका बहुत सत्कार किया, और जल-पान करवा कर विश्राम करने के लिए अति सुन्दर कमरा दे दिया। जब सज्जन गुरु जी के पास बैठ कर बातें कर रहा था तो अन्तर्यामी गुरु जी ने उसके तौर-तरीके देख कर मरदाने को कहा, "मरदाना! रबाब छेड़ो।" जब मरदाने ने रबाब छेड़ी तो आप जी यह शब्द ऊंची और मीठी धुन में गाने लग गए :

१ ओ अंकार सतिगुर प्रसादि ॥
सूही महला १ ॥
उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥१ ॥
सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥
ढठीआ कंमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥ २ ॥
बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंन्हि ॥
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे न कहीअन्हि ॥ ३ ॥
सिंमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंन्हि ॥
से फल कंमि न आवन्ही ते गुण मै तनि हंन्हि ॥ ४ ॥
अंधुलै भारु उठाइया डूगर वाट बहुतु ॥
अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥५ ॥
चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥
नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥ ६ ॥ (पन्ना ७२९)

इस शब्द को ज्यों-ज्यों सज्जन सुनता गया उसको हर एक अक्षर अपने ऊपर ही प्रयोग होता दिखाई दिया। अपने किए हुए पाप और अत्याचार उसकी आँखों के आगे घूमने लगे। उनके भयानक परिणामों का अनुमान लगा कर सज्जन सिहिर उठा और अपने ठिकाने से उठ कर गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। क्षमा मांगी और पिछले गुनाह माफ करने के लिए विनती की। सज्जन की पश्चाताप वाली विनती सुन कर गुरु जी ने कहा, "सज्जन! अगर तुम सच्चे हृदय से अपना कल्याण चाहते हो तो यह पापों के साथ इकट्ठी की हुई कमाई अथवा दौलत सब ज़रूरतमन्द गरीबों को बांट दो और आगे से नेक ईमानदारी की कमाई करके आप खाओ और ज़रूरतमन्दों को खिलाने का प्रण कर लो। पापों की कमाई से घर-बार और तन-मन सभी अपवित्र हो जाता है और ईमानदारी की कमाई खाने से सब कुछ पवित्र हो जाता है।"

आगे से जीवन को साफ-सुथरा रखने के लिये गुरु जी ने सज्जन को कहा कि अपने घर में धर्मशाला बनवा कर सतिसंग करवाया करो। नेक कमाई करके आने-जाने वाले यात्रियों की सेवा करना, और परमेश्वर को सदा याद रखना। गुरु जी की आज्ञा मान कर सज्जन ने अपनी पापों की सारी इकट्ठी की हुई कमाई गरीबों में बांट दी और गुरु जी से चरण-पाहुल और नाम-दान का उपदेश लेकर सिक्ख बन गया। इसके उपरान्त घर में धर्मशाला बना कर सतिसंग और अतिथियों की सेवा करने लग गया। इस तरह सज्जन सच्च-मुच्च ही सज्जन बन गया और ठगी उससे कोसों दूर चली गई । यही पहली धर्मशाला है जो गुरु जी ने बनवाई थी।

पाक पटन (शेख ब्रह्म फरीद सानी)

सज्जन को ठीक मार्ग पर लाने के बाद गुरु जी पाकपटन (जिसका नाम तब अजोधन था) शेख ब्रह्म को, जो उस समय का एक प्रसिद्ध महापुरुष फकीर था, जा मिले। उसका तपस्या करने का स्थान जो कि नगर से चार मील बाहर दक्षिण की तरफ था, वहां उसके पास चले गये।

शेख ब्रह्म जिनको फरीद सानी भी लिखा है, फरीद से दसवीं पीढ़ी में हुए थे। इनका देहान्त गुरु जी के पन्द्रह साल बाद सम्वत् १६१० में हुआ। इनके साथ परमार्थ को चर्चा करके गुरु जी कुरुक्षेत्र को चल दिए।

गुरु जी की याद में इस स्थान पर गुरद्वारा 'नानक सर' नाम प्रसिद्ध है।

कुरुक्षेत्र सूर्य ग्रहण

गुरु जी जब कुरुक्षेत्र पहुंचे तो उस समय सूर्य-ग्रहण का बड़ा भारी मेला लगा हुआ था। आप जी मरदाने के साथ सरोवर के एक किनारे डेरा डाल कर बैठ गए।

मेले में बहुत से लोग आए हुये थे। गुरु जी ने पन्डितों के साथ चर्चा करने के लिए एक देगची में मांस पकाना शुरू कर दिया। ग्रहण के समय

हिन्दु लोग कुछ खाते-पीते नहीं हैं और न चूल्हे में आग जगाते हैं।

पर यहां आग पर देगची रखी हुई देख कर बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। जब गुरु जी से उन्होंने पूछा कि आप ने साधु का भेष धारण करके पकाने के लिए रखा हुआ है तो आप जी ने कहा कि यह मांस हैं! उन्होंने कहा, "सूर्य ग्रहण के समय यह आप बड़ा अयोग्य काम कर रहे हैं, साधु भेष, सूर्य ग्रहण पर मांस खाना तो महां पाप है!" गुरु जी ने कहा, "हर एक मांस के कारण ही तो जीवित है। मांस के बिना किसी जीव का जीवित रहना ही असम्भव है।"

इनमें से एक नानू पण्डित था, जो अपने आप को बड़ा विद्वान और चर्चा करने में बड़ा माहिर समझता था। उस ने कहा कि मांस खाना घोर पाप है; इसके खाने से लोक-परलोक बिगड़ जाते हैं। तब गुरु जी ने मांस की परिभाषा देकर इस शब्द द्वारा उसको समझाया कि मां के गर्भ से लेकर मरने तक मांस के साथ ही सम्बन्ध रहता है; यह छोड़ा नहीं जा सकता।

वार मलार ॥ सलोक मः १ ॥

पहिलां मासहु निंमिआ मासै अंदरि वासु ॥
जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चंमु तनु मासु ॥
मासहु बाहरि कढिआ मंमा मासु गिरासु ॥
मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥
वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ॥
मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥
सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझीऐ तां को आवै रासि ॥
आपि छुटे नह छुटीऐ नानक बचनि बिणासु ॥ १ ॥

शब्द मे अन्त में लिखा है:-

पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना ॥
तोइअहु अंनु कमादु कपाहां तोइअहु त्रिभवणु गंना ॥
तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोऐ बहुतु बिकारा ॥
एते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा ॥ २ ॥

(पन्ना १२८९)

*मांस की यह परिभाषा और विचार सुन कर नानू पण्डित ने गुरु जी को नमस्कार किया और साथियों को बताया कि यह कलियुग में अवतार होकर आए हैं। हम इनके साथ चर्चा करने के अयोग्य हैं। नानू की यह बात सुन कर सब ने हाथ जोड़ कर गुरु जी को नमस्कार किया। इस स्थान पर एक गुरुद्वारा इस याद में बना हुआ है।

करनाल शेख कलंदर अली के साथ चर्चा

कुरुक्षेत्र से गुरु जी करनाल आये। यहां आप की एक सूफी फकीर शेख कलंदर अली के साथ चर्चा हुई। कई विद्वानों का कथन है कि गुरु जी ने इस चर्चा समय ही शेख कलंदर अली को उसके पूछने पर बताया था कि हम भी कलंदर ही हैं। शेख ने जब हैरान होकर पूछा कि आप कलंदर किस तरह हैं ? आप की तो वेशभूषा ही और है! तब गुरु जी ने परमेश्वर को संबोधन करके इस शब्द का उचारण किया और अपना कलंदर होना शेख को बताया:

बिलाबलु महला १ ॥

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा॥ १ ॥

....

जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे॥
जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे॥ ४ ॥

(पन्ना ७९५)

नोट :- कलंदर मुसलमान फकीरों का एक भेष है, जो बेपरवाही की दशा में रहता है। बेपरवाह शब्द की श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इस तरह व्याख्या की है :

---

*इसका यह भाव नहीं कि गुरु जी ने मांस खाना ठीक या ज़रूरी बताया। भाव यह है, कि जो पुरुष दूसरों को लूट कर खाता है और अत्याचार करता है, उसका यह कहना कि मांस खाना जीव-हत्या है, पाखन्ड और धोखा है। सच्चा वैष्णव वही है जो किसी प्रकार भी किसी का हृदय नहीं दुखाता।

संतन अवर न काहू जानी॥
बेपरवाह सदा रंगि हरि कै
जा को पाखु सुआमी॥

(टोडी मः ५ पन्ना ७११)

बेपरवाह लोग और किसी की नहीं मानते, केवल एक हरि के नाम में ही रंगे रहते हैं।

गुरु जी की इस याद में यहां मुहल्ला ठठियारां में गुरुद्वारा बना हुआ है, जो मंजी साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।

पानीपत शेख टटीहरी

करनाल से गुरु जी पानीपत पहुंचे। यहां शेख शरीफ के एक प्रसिद्ध चेले शेख ताहर अली, जो शेख टटीहरी प्रसिद्ध था, के साथ आप जी की चर्चा हुई।

शेख टटीहरी ने कहा—"आप अपना सिर-मुँह नहीं मुँडवाते! इतने लम्बे बाल क्यों रखे हुए हैं?" गुरु जी ने कहा, "शेख जी ! सिर-मुँह मुँडवाने का कोई लाभ नहीं, मन मुँडाना चाहिये।" शेख ने कहा, "महाराज! मन कैसे मुँडाया जाता है?"

गुरु जी बोले, "अपने मन की इच्छाओं (संकल्प विकल्प) रूपी बाल, जो बहुत लम्बे होते है उनको गुरु-उपदेश की कैंची से काट कर मन को इच्छा रहित करना ही मन को मुँडाना होता है।" गुरु जी के ये शब्द सुन कर शेख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और गुरु जी को कुछ दिन अपने पास रख कर बड़े प्रेम से परस्पर आध्यात्मिक बातें करके आनन्द मनाता रहा।

हरिद्वार पण्डितों के साथ चर्चा

पानीपत से गुरु जी हरिद्वार आए। यहां आप जी ने देखा कि हिन्दू लोग चढ़ते सूर्य की तरफ मुँह करके गंगा के पानी को बहा रहे है। उनको असलीयत समझाने के लिए गुरु जी सूर्य की तरफ पीठ करके पश्चिम दिशा में हाथों में भर-भर कर पानी फैंकने लगे।

गुरु जी को उल्टी तरफ पानी फैंकते देख कर लोग इकट्ठे हो गए और पूछने लगे कि आप पानी उल्टी तरफ क्यों फैंक रहे हैं? गुरु जी ने कहा—आप सूर्य को पानी क्यों दे रहे हैं? लोगों ने उत्तर में कह दिया कि हम सूर्य के द्वारा अपने पितरों को पितृ-लोक में पानी पहुंचा रहे हैं। गुरु जी ने कहा—हम अपनी खेती को माझे देश में पानी दे रहे हैं। लोगों ने कहा, "आप की खेती यहां से कितनी दूर है?" गुरु जी ने कहा, "होगी लगभग तीन सौ कोस।" उन्होंने कहा—तीन सौ कोसों पर आप का पानी कैसे पहुंचेगा ? गुरु जी ने कहा, "आप के पितरों का पितृ-देश कितनी दूर है ?" उन्होंने बताया—लाखों करोड़ों कोस होगा। तब गुरु जी ने कहा—अगर आप का थोड़ा-थोड़ा फैंका हुआ पानी लाखों करोड़ों कोसों पर आप के पितरों को पहुंच सकता है तो हमारा थोड़ा-थोड़ा फैंका हुआ पानी तीन सौ कोसों तक कैसे नहीं पहुंचेगा ? गुरु जी ने बताया कि इस तरह अंजुलि में भर भर कर पानी फैंकने से पितरों को नहीं पहुंचेगा। अपने अपने धर्म के कर्मों के अनुसार यह अर्जुलि भरनी चाहिए, जैसे किः

सारंग की वार मः १ ॥

नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥
सुरते चुली गिआन को जोगी का जतु होइ ॥
ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥
राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥
पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥
पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥ २ ॥

(पन्ना १२४०)

अर्थात्:- गुरु जी ने कहा—सच्ची और सुच्ची चुलियां अगर कोई ब्रह्मण, जोगी, वेद पाठी, गृहस्थी, राजा अथवा पढ़ा हुआ विद्वान् भरना चाहे तो वे ये हैं:

१. ब्राह्मण—संतोष धारण करे, जितने कोई दान दे, उसी से संतोष रखे।

३. वेद पाठी– ईश्वर ज्ञान की प्राप्ति करे।
४. जोगी–ब्रह्मचर्य को धारण करे।
५. गृहस्थी–ईमानदारी की कमाई करके दान करे।
६. राजा–इन्साफ करे।
७. पढ़ा हुआ विद्वान– सच्चा स्वरूप परमात्मा का ध्यान रखे।

गुरु जी का यह सच्चा उपदेश सुन कर सारे पण्डित और अन्य लोग निरउत्तर होकर आप जी को नमस्कार करने लगे।

फिर जब लोग गंगा में स्नान कर के किनारे बैठ कर माला फेर रहे थे तो गुरु जी ने कहा कि जब तक मन एकाग्र न हो, माला फेरने का कोई लाभ नहीं है। यह केवल लोगों को दिखावा मात्र ही है। मन को एकाग्र करके माला फेरें, नेक कर्म करें, सत्य बोलें, अपनी ईमानदारी की कमाई करें और बांटकर खाएं। तब निश्चय ही आप का कल्याण होगा।

कुछ दिन ठहरने के बाद गुरु जी नाम-स्मरण, प्रभु का ध्यान करना, ईमानदारी की कमाई करना, संतोष धारण करना और दिखावे के कर्म काण्डों का त्याग करना बता कर आगे जाने के लिए तैयार हो गए।

यहां हरिद्वार घाट पर जहां पण्डितों के साथ गुरु जी की ज्ञान-गोष्ठि हुई थी,वहां इस स्थान पर गुरुद्वारा ज्ञान गोदड़ी प्रसिद्ध है।

दिल्ली बादशाह और काज़ी को उपदेश

हरिद्वार से गुरु जी दिल्ली पहुंचे और जमुना के किनारे आसन लगा कर उस जगह बैठ गए जिस का नाम आजकल मजनू टिल्ला प्रसिद्ध है। महान् कोष में लिखा है कि इस जगह पर मजनू नाम का कोई साधु जो गुरु नानक देव जी का भक्त था, बहुत देर तक यहां का निवासी रहा, जिससे उसके नाम से यह जगह प्रसिद्ध है।

इस समय दिल्ली का बादशाह सिकंदर लोधी था, जो हिन्दुओं का बहुत विरोधी था। इसने हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार किए। जो इस्लाम कबूल नहीं करता था, उसको या तो मार देता था या कैद करवा देता था। बादशाह को जब पता चला कि एक हिन्दु फकीर यहां आया है

जो लोगों में अपने नए मत का प्रचार कर रहा है तो उसने आप जी के पास काज़ी भेजा। काज़ी ने आप जी के साथ बातचीत कर के बादशाह को बताया कि यह तो कोई परमात्मा का रूप लगता है, जिस की वाणी में तथा बोल-चाल में एक आकर्षण है। यह बात सुन कर सिकंदर को भी बड़ी प्रेरणा मिली और काज़ी के साथ गुरु जी के दर्शन करने के लिए आया। गुरु जी ने काज़ी और बादशाह दोनों को कहाः-

"जगत माया मोह से अन्धा हो रहा है। इसको धर्म-अधर्म कुछ नहीं सूझ रहा। बादशाह का धर्म प्रजा से इन्साफ करना और उसकी देखभाल करना है। काज़ी का धर्म लोगों को सच्चा रास्ता दिखाना और बुराई के मार्ग से हटाना है। अपनी कमाई में से भगवान् के नाम दान देना, रिश्वत न लेनी और नेक कमाई करके खाना है। इस तरह अपने-अपने कर्तव्यों को सच्चे दिल से पूरा करने से स्वर्ग प्राप्त होता है।" गुरु जी से यह पक्षपात रहित उपदेश सुन कर सिकंदर और काज़ी दोनों ही प्रसन्न हो गए और नमस्कार करके चले गए।

नोटः- प्रोः करतार सिंघ जी ने 'जीवन-कथा श्री गुरु नानक देव जी' में सैय्यद मुहम्मद लतीफ की पुस्तक का हवाला देकर लिखा है कि जब गुरु जी दिल्ली पहुंचे तो बादशाह सिकंदर के सिपाहियों ने सूचना दी कि एक फकीर जिसका उपदेश कुरान और वेदों से भिन्न है, लोगों में खुल्लम खुल्ला प्रचार कर रहा है और वह इतनी महानता प्राप्त कर रहा है कि अंत में नुकसानदायक साबित होगा। यह सूचना मिलने पर सिकंदर ने गुरु जी और मरदाने को और हिन्दु साधु-सन्तों के साथ, जो उस समय सिकंदर ने जेलों में डाले हुए थे, पकड़ कर जेल में डाल दिया और कैदियों की तरह इन को भी चक्कियां पीसने के लिए दे दी गईं। गुरु जी ने जब सभी साधू-सन्तों को दुःखी देखा तो मरदाने को आदेश दिया, "मरदाने छेड़ रवाब!" मरदाने ने जब रबाब छेड़ा तो गुरु जी ने एक शान्त सा शब्द पढ़ा। सब कैदी शब्द की धुन सुन कर चक्कियां चलाना भूल गए। जेल के दारोगे अपना काम करना भूल गए। सिकंदर लोधी भी इतफाक से वहां आ निकला और वह भी इस

दृश्य को देख कर और शब्द सुन कर प्रभावित हो गया। जब शब्द समाप्त हो गया तो सिकंदर ने गुरु जी के आगे मस्तिष्क झुका कर विनती की कि मेरे पिछले गुनाहों को माफ कर दें। गुरु जी ने कहा, "गुनाह तभी माफ किए जा सकते हैं अगर आदमी सच्चे दिल से पश्चाताप करे और निर्दोषों पर ज़ुल्म करना छोड़ दे। गरीब साधुओं ने क्या अपराध किया है जो इनके साथ घोर अपराधियों जैसे व्यवहार कर रहे हो ?" सिकंदर ने गुरु जी के वचनों से प्रभावित होकर सारे निर्दोष कैदियों को छोड़ दिया और आगे से ऐसा न करने का प्रण किया।

मथुरा वृन्दावन

दिल्ली से आगे गुरु जी मथुरा वृन्दावन गए। मथुरा में श्री कृष्ण जी ने श्री वासुदेव जी के घर माता देवकी जी के गर्भ से जन्म लिया था और बारह वर्षों तक गोकुल में बाबा नंद जी ग्वाले के घर माता यशोधा जी ने पोषण किया था। बाद में वृन्दावन में सखियों के साथ रास लीला रचा कर अनेकों करतव किये थे। जब गुरु जी यहां पहुंचे तो आप ने देखा कि लोग राजा- रानियों के और श्री कृष्ण और गोपियों के स्वांग अथवा रास रचा कर नाच-गा रहे थे। उनकी यह दशा देख कर गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया :

वाइनि चेले नचनि गुर॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल॥ आपु पछाड़हि धरती नालि॥
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह॥ गावनि सीता राजे राम॥

(वार आसा म : १ पन्ना ४६५)

गुरु जी ने कहा, "यह सब कामोत्तेजक खेलें हैं; इनसे स्त्री-पुरुष अपने ऊंचे आचरण से गिर जाते हैं। पुरुष को अपने गुरु-पीरों के उपदेश धारण करके अपने जीवन को ऊंचा करना चाहिए अथवा ऐसे कार्य नहीं करने चाहिएं जिनसे आचरण गिर जाए।"

गोरख मता जोगियों के साथ चर्चा

मथुरा से चल कर गुरु जी और मरदाना जोगियों के प्रसिद्ध स्थान गोरख मता (ज़िला पीली भीत) पहुंचे। इस स्थान पर गोरख नाथ और उनके शिष्य रहते थे। आप जी उनके साथ चर्चा करके बताना चाहते थे कि साधु पुरुष का क्या फर्ज़ होता है। केवल राख पोत लेना और लोगों को चमत्कार दिखा कर अपनी मनमानी सेवा करवाना, यह कोई लोक-कल्याण का काम नहीं है। जब गुरु जी जोगियों के पास *निराला सा भेष बना कर गए तो जोगियों ने पूछा कि आप का कौन सा मत है ? आप का निरंकारी मत अजीब है! आप हमारा जोग मत धारण कर लें। आप को सच्चा मार्ग प्राप्त हो जाएगा। गुरु जी ने कहा कि सच्चा मार्ग किसी भेष में नहीं है। जो पुरुष भी अपने आप को संसार की बुराईयों से बचा कर रखेगा, उसी को ही सच्चा मार्ग प्राप्त हो जाएगा।

सिद्ध लोगों ने आप जी को कामल फकीर जान कर अपने जोगी भेष में लाने का बहुत प्रयास किया और कहा कि आप हमारे जोग मत के चिन्ह, डंडा, मुंदरें, खिंथा आदि धारण कर लें और यह रंग-बिरंगे कपड़े उतार कर शरीर पर राख पोत लें। हमारे भेष में आने से आप की बहुत महानता हो जाएगी। गुरु जी ने कहा कि इन चिन्हों के धारण करने से जोग (ईश्वर के साथ जुड़ना) नहीं हो सकता। इसका उत्तर आप जी ने इस तरह दिया :

१ ओ अंकार सतिगुर प्रसादि॥

सूही महला १ घरु ७

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ॥
जोगु न मुदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ॥ १ ॥...

---

*गेरूए रंग का कुर्ता, ऊपर सफेद दुपट्टा, एक पाँव जूता एक पाँव नंगा, गले में कफन, सिर के ऊपर टोपी, गले में हड्डियों की माला और माथे पर केसर का तिलक।

नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ॥
वाजे बाझहु सिंङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ॥ ४०॥

(पन्ना ७३०)

अर्थात् :- खिंथा और डंडा धारण करना, शरीर पर राख पोतनी, सिंञी सजाने और सिर मुँडाने से जोग नहीं होता। योग धारण करने की युक्ति यह है कि माया के बीच रहते हुए ही उससे निर्लेप रहें। इस तरह रह कर ऐसा जीवन व्यतीत करें कि संसार की तरफ से मृतक के समान चुपचाप बिना किसी इच्छा और निरविकार होकर रहें। सिंञी को फूक मार कर बजाने के बिना ही ध्वनि होने लगे तो अलख निरंजन पद को पा लेते हैं।

गुरु जी के यह शब्द सुन कर सिद्ध पुरुषों ने आप जी को एक महान पुरुष मान कर नमस्कार किया और "आदेसु, आदेसु" करके पर्वतों को चल दिए।

नानक मता

सिद्धों के साथ आप जी ही ज्ञान-चर्चा करने से हुई विजय के कारण इस गोरख मता स्थान का नाम नानक मता प्रसिद्ध हो गया। यहां गुरुद्वारा बना हुआ है और बैसाखी को बड़ा भारी मेला लगता है।

मीठा रीठा

इस नानक मता स्थान से चल कर जब गुरु जी पूर्व दिशा बनारस को जा रहे थे तो रास्ते में *मरदाने ने कहा, "महाराज! जंगलों, पर्वतों में ही घूम रहे हैं, जहां खाने के लिए कुछ नहीं मिलता। मुझे भूख ने बहुत सताया है। अगर कुछ मिले तो खाऊं।"

उस समय जिस रीठे के वृक्ष के नीचे गुरु जी आराम कर रहे थे, उसकी तरफ देख कर मरदाने को कहा, "इस वृक्ष की डाली को हिला कर रीठे गिरा कर खा लो, तुम्हारी भूख मिट जाएगी।" जब मरदाने ने रीठे गिरा कर खाए तो वे छुहारों की भांति मीठे थे। मरदाने ने बड़े प्रसन्न होकर बहुत से खाए।

इस वृक्ष के रीठे आज भी छुहारों की भान्ति मीठे हैं, जो प्रेमियों नानक मते जाने वाले प्रेमियों को प्रसाद को तरह दिए जाते हैं। यह स्थान नानक मते से ४५ मील दूर पूर्व दिशा में है।

बनारस पण्डितों से चर्चा

नानक मते से चल कर गुरु जी रास्ते में रीठे मीठे करके बनारस पहुंच गए। यह शहर हिन्दु मत के बड़े बड़े विद्वान पण्डितों का केन्द्र था। यहां आप जी का भिन्न पहरावा देख कर बहुत से लोग इकठ्ठे हो गए और कई प्रकार के प्रश्न पूछने लगे। प्रश्नों के उत्तर गम्भीर रूप से मिलते देख कर पण्डितों ने अपने एक विद्वान पण्डित चतर दास के नेतृत्व में गुरु जी के साथ चर्चा छेड़ दी। इस चर्चा के परिणाम स्वरूप गुरु जी ने दखणी ओंकार की वाणी की रचना की।

रामकली महला १ दखणी ओअंकार॥

१ ओअंकार सतिगुर प्रसादि॥

ओअंकारि ब्रहमा उतपति॥ ओअंकारु कीआ जिनि चिति॥
ओअंकारि सैल जुग भए॥ ओअंकारि बेद निरमए॥
ओअंकारि सबदि उधरे॥ ओअंकारि गुरमुखि तरे॥
ओनम अखर सुणहु बीचारु॥ ओनम अखरु त्रिभवण सारु॥ १ ॥

(पन्ना ९२९)

इस वाणी की ५४ पउड़ियां है जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पन्ना ९१९ से आरम्भ होकर ९३८ पर समाप्त होती हैं।

इस वाणी में गुरु जी ने एक परमात्मा की सर्व व्यापकता का वर्णन करके उसकी महिमा पण्डितों को बताई। इसका पण्डितों के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा जिसके कारण विद्वान पण्डित गुरु जी के सिक्ख बन गए।

---

*कई लेखकों ने यहां मछंदर नाथ लिखा परन्तु महान कोष में मरदाना लिखा है, क्योंकि योगी तो नानक मते से बिछुड़ कर चले गए थे, परन्तु मरदाना गुरु जी के साथ ही था।

पटना शहर सालस राए जौहरी

बनारस से चल कर गुरु जी भाई मरदाने के साथ रास्ते में अनेकों लोगों को अच्छे मार्ग पर डालते हुए कुछ दिनों के बाद पटना शहर के बाहर आकर बैठ गए।

पटना शहर का एक हीरों और लालों का व्यापार करने वाला सालस राए जौहरी गुरु जी को शोभा सुन कर अपने नौकर अधरका के साथ भोजन तथा और पदार्थ लेकर हाज़िर हुआ।

गुरु जी ने उसको पूछा, "आप क्या काम करते हैं?" उसने कहा, "महाराज! मैं हीरों का काम करने वाला जौहरी हूं।" गुरु जी ने कहा, "असली लाल मनुष्य का जन्म है, यह अनमोल और दुर्लभ है, इसे व्यर्थ नहीं बिताना चाहिए। ईश्वर के भजन-स्मरण में लगा कर इसको सफल बनाना चाहिए।" गुरु जी के इस उपदेश को सुन कर सालस राए और उसका नौकर अधरका दोनों गुरु जी की सिक्खी धारण कर के निहाल हो गए।

राजा फतह चन्द मैनी जो गुरु गोबिन्द सिंघ जी को बाल्यावस्था में अपने घर ले जाकर खिलाया करता था, इस सालस राए का ही पौत्र था। इनका घर पटना साहिब में गुरुद्वारा मैनी संगत के नाम से प्रसिद्ध है।

गया पितृ गति

पटना से चल कर गुरु जी गया गए। यह शहर गयासुर दैत्य का बसाया हुआ है, जिसके नाम पर इसका नाम (गया) प्रसिद्ध है। हिन्दुओं के विश्वास के अनुसार यहां प्राणियों के पिंड भराने से उनकी गति हो जाती है। पण्डितों ने गुरु जी को कहा कि जिस तरह लोग यहां आकर अपने पितरों के लिए पिंड भरवाते हैं और घी के दीये जलाते हैं उसी तरह आप भी अपने पितरों की गति के लिए ऐसा ही करें। तब गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया :

आसा महला १ ॥

दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥
उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥ १ ॥
लोका मत को फकड़ि पाइ ॥
लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥
ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥ २ ॥
गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥
सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥ ३ ॥
इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥
नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥ ४ ॥

(पन्ना ३५८)

अर्थात :- मेरा दीया नाम का है, और उसमें दुःखों का तेल है। ज्यों-ज्यों मेरे नाम का दीया जलता है, त्यों त्यों मेरे दुःखों का तेल खत्म होता है, और फिर यमदूतों से वास्ता नहीं पड़ता। हे लोगो! व्यर्थ शोर न करो। जैसे लाखों मण लकड़ी के ढेर को अग्नि की एक चिंगारी ही राख कर देती है, इसी प्रकार सब पापों का नाश भगवान के स्मरण से हो जाता है। मेरा पिंड-पत्तल सच्चे ईश्वर का एक नाम है। लोक परलोक में मेरा एक वही ईश्वर का स्मरण ही सहारा है। गंगा और काशी का स्नान ईश्वर का स्मरण करना है। तीर्थों का सच्चा स्नान तब होता है, अगर रात-दिन ईश्वर के नाम-स्मरण का मोह लगा रहे।

एक पिंड-पितरों को हलवा, पूड़ी, खीर आदि देना होता है, और दूसरा पिंड देवताओं के आगे चावल और जौं के आटे का होता है, जिसको बना कर ब्राह्मण पूजा करवा कर दक्षिणा लेते हैं। गुरु जी ने बताया कि अपने हाथों से दान किया हुआ कभी समाप्त नहीं होता। यदि अमर गति चाहते हो तो ज़िंदा रहते हुए अपने हाथों से दान करो जो लोक-परलोक में सहायता करेगा।

बोध गया

यहां पण्डितों को नाम-स्मरण का उपदेश देकर गुरु जी बोध गया, जो यहां से नज़दीक ही है, गए और वह स्थान देखा जहां महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। इस स्थान पर एक मन्दिर में बड़े विशाल आकार की सोने की एक प्रतिमा स्थापित की हुई है जिसकी बड़े प्रेम और श्रद्धा से श्रद्धालु लोग महिमा गाते हैं।

कामरूप आसाम देश

यहां से गुरु जी मरदाने के साथ चल कर बिहार-बंगाल में विहार करते हुए मुरशिदाबाद के रास्ते आसाम के कामरूप इलाके के गोहाटी शहर के बाहर जा बैठे। बाद में जब मरदाना शहर में से कुछ अपने खाने के लिए लेने गया तो वहां की एक प्रसिद्ध जादूगरनी नूरशाह ने उसको भेडू बना दिया। कुछ समय तक जब मरदाना वापिस गुरु जी के पास न गया तो आप जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से मरदाने को भेडू बना, नूरशाह के घर "मैं, मैं" करते देखा तो गुरु जी अपने ठिकाने से उठ कर "सत्य करतार" करते हुए नूरशाह के ठिकाने पहुंच गए। नूरशाह ने गुरु जी को भी अपने जादू के प्रभाव में लाने के भर्सक प्रयास किए, पर उसकी गुरु जी के आगे कोई पेश न गई। गुरु जी की यह प्रबल शक्ति को देख कर वह आप जी के चरणों में गिर पड़ी। गुरु जी ने कहा कि जो हमारे सेवादार को पकड़ा हुआ है उसको जल्दी हमारे पास लाओ, तभी तुम्हें माफी मिलेगी। नूरशाह अन्दर गई और मरदाने को अपने जादू के प्रभाव से निकाल कर गुरु जी के पास ले आई। मरदाने ने आकर गुरु जी के चरणों में वन्दना की और नूरशाह के जाल से निकालने के लिए धन्यवाद किया।

गुरु जी ने नूरशाह तथा और भी उसकी सखियों को कहा कि सत्य नाम का स्मरण और सतिसंग करो; कड़ाह प्रसाद करके जिस कार्य के लिए प्रार्थना करोगी, वह पूरी होगी। जादू-टोने करने बंद कर दोगी तो तुम्हारा कल्याण होगा। गुरु जी के उपदेश को धारण करके सतिसंग

करने के लिए नूरशाह ने अपने घर धर्मशाला बनवाई और गुरुमुख जीवन व्यतीत करती हुई परलोक सिधारी।

चिटागाँव

कामरूप गोहाटी से जादूगरनियों का सुधार कर के गुरु जी ढाका शहर से होते हुए चिटागाँव आए। यहां के राजा को सति नामु का उपदेश देकर प्रसन्न किया। राजा गुरु जी का शिष्य बना और सतिसंग के लिए धर्मशाला बनवाई।

जगन्नाथ पुरी

यहां चिटागाँव से गुरु जी समुद्र के रास्ते पुरी शहर पहुंचे। यह शहर कटक ज़िले में समुद्र के किनारे पर है। यहां एक मन्दिर में श्री कृष्ण जी की एक आदमकद से भी बड़ी प्रतिमा है, जिसके हाथ और पाँव नहीं हैं। इस प्रतिमा का नाम जगन्नाथ है, जो हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। संध्या के समय गुरु जी ने यहां मन्दिर में पण्डितों को आरती उतारते देख कर इस निम्नलिखित शब्द द्वारा सर्व-व्यापक परमात्मा की सदा हो रही आरती का ज्ञान निश्चय करवाया :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती॥ १ ॥
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती॥ अनहता सबद वाजंत भेरी॥ १ ॥ रहाउ॥
सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही॥
सहस पद बिमल नन एकपद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही॥ २ ॥
सभ महि जोति जोति है सोइ॥ तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ॥ ३ ॥
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा॥ ४ ॥

(धनासरी मः १ पन्ना ६६३)

बात यह थी कि पण्डितों ने एक बड़े सुनहरी थाल जिसमें हीरे-मोती जड़े हुए थे, उसमें एक चार-मुखा दीया घी का जला कर

रखा हुआ था। धूप और चंदन सुलग रहे थे। श्री जगन्नाथ जी की मूर्ति को एक पण्डित चौर कर रहा था और कुछ खड़े होकर आरती कर रहे थे।

इस सारे दृश्य का रुपांकन गुरु जी ने उपरोक्त शब्द में बताने के लिए पण्डितों को परमेश्वर की हमेशा होने वाली आरती दर्शाई जिसको सुन-समझ कर पण्डितों ने आप जी को नमस्कार किया और सत्कार के साथ सेवा की।

मन्दिर के नज़दीक ही जहां समुद्र के किनारे गुरु जी ने कलियुग को उपदेश दिया था, आप की याद में एक बावली और गुरूद्वारा बना हुआ है। यहां गुरु जी लगभग दो महीने रह कर श्रद्धालुओं को नाम-स्मरण उपदेश देकर प्रसन्न करते रहे।

चतुर्थ काँड

पंजाब को वापसी

कटक शहर

मैदानों से पर्वतों और पर्वतों से समुद्र तक जगन्नाथ पुरी पहुंच कर गुरु जी कुछ महीने नाम-स्मरण का उपदेश देकर पीछे मुड़ आए। जगन्नाथ पुरी से कटक शहर आकर भैरों के मन्दिर के एक पुजारी के साथ आप जी की चर्चा हुई। पुजारी ने अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए गुरु जी के पास अग्नि की वर्षा की, पर गुरु जी निर्भय बैठे देखते रहे। अन्त में पुजारी को गुरु जी ने नाम-स्मरण का उपदेश दिया और नाटक-चेटक दिखा कर लोगों से सेवा करवाने से वर्जित किया। यहां आप ने एक दातुन कर के गाढ़ दी थी जो एक वृक्ष के रूप में प्रकट होकर शोभायमान हुई।

आगरा शहर

कटक से चल कर गुरु जी कई नगरों में से होते हुए प्रभु-भक्ति का उपदेश देते हुए आगरा शहर में पहुंच गए। यहां एक माई जस्सी रहती थी जो श्री रामचन्द्र जी की मूर्ति की पूजा करती थी और उसके सन्मुख बीणा बजा कर भजन किया करती थी। माई जस्सी साधु सन्तों की भी सत्संगी थी। माई ने बड़े प्रेम से कुछ दिन गुरु जी को अपने घर पर रख कर सेवा की। गुरु जी उपदेश से माई मूर्ति-पूजा छोड़ कर नाम-स्मरण करने लगी। माई जस्सी के घर जहां गुरु जी ने चरण डाले थे, आगरा में "गुरुद्वारा माई थान" नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान पर गुरु गोबिन्द सिंघ जी और गुरु तेग बहादुर जी ने भी चरण डाले थे।

रुहेल खंड में गुलामों का उद्धार

आगरा से ऊपर उत्तर दिशा में रुहेलखंड का इलाका है। उसमें बरेली, बदायूं आदि ज़िले है। यहां के निवासी रुहेल कहलवाते हैं। इनके सरदार गुलामों के बेचने और खरीदने का काम करते थे। एक रुहेल सरदार के पास भाई हरा गुरु का सिक्ख भी बिका हुआ गुलाम था। उसकी रात-दिन को अरदासें सुन कर गुरु जी भाई हरे के मालिक रुहेल के पास गुलाम बन कर आप बिक गए और रुहेल सरदार के घर रह कर गुरु जी ने उसको ऐसी सच्ची शिक्षा दी कि उसने भाई हरे सहित सारे गुलाम स्वतंत्र कर दिए और आगे से गुलाम खरीदने और बेचने छोड़ दिए।

सुल्तानपुर लोधी बेबे नानकी के पास

रुहेलखंड के इलाके से चल कर गुरु जी कई नगरों और शहरों में प्राणियों का उद्धार करते हुए मरदाने के साथ सम्वत् १५६५ विक्रमी में सुल्तानपुर पहुंच गए। यहां कुछ दिन ठहर कर आप जी ने बेबे नानकी और बहनोई जै राम जी की खुशियां लीं और अपने परिवार श्री सुलखणी जी और दोनों साहिबज़ादों को खुशियों से आनंदित

किया। बाद में आप अपने माता-पिता जी के दर्शनार्थ लाहौर के रास्ते मरदाने के साथ तलवंडी को चल दिए।

लाहौर

सुल्तानपुर से ब्यास का तट गोइंदवाल के ठिकाने को लांघ कर आप जी माझे के गांवों जाहमन आदि और डेहरा चाहल अपने ननिहाल होते हुए लाहौर पहुंच गए। लाहौर अपने एक सिक्ख भक्त भाई मनसुख के पास ठहर कर तलवंडी पहुंच गए।

तलवंडी

तलवंडी पहुंच कर गुरु जी अपने माता-पिता, राय बुलार तथा और सगे सम्बधियों को मिले। सभी ने आप जी को यही सलाह दी कि अब टिक कर अपने परिवार में रहें, बहुत दुनियां घूम ली है, परन्तु गुरु जी ने कहा, हमारा काम अभी सम्पूर्ण नहीं हुआ, जब हम समझेंगे कि हमारा उदेश्य पूरा हो गया है तो हम स्वयं ही घर बैठ जाएंगे! मरदाने ने भी अपने परिवार और सगे सम्बंधियों को मिल लिया। कुछ दिन विश्राम करने के बाद गुरु जी फिर से लोक-कल्याण के लिए चल दिए।

दूसरी बार पाकपटन शेख ब्रहम के पास

गुरु जी मरदाने के साथ तलवंडी से चल कर दूसरी बार शेख ब्रहम को मिलने के लिए पाकपटन गए तो शहर से कुछ दूरी पर आसन लगा कर बैठ गए। शेख ब्रहम गुरु जी का आगमन सुन कर गुरु जी को मिलने आया और अपने मन की शंकाओं के समाधान के लिए गुरु जी के साथ ज्ञान-गोष्ठियां करता रहा। गुरु जी ने यहां आसा की वार की पहली नौ पउड़ियां शेख ब्रहम के साथ चर्चा के समय उच्चारण कीं। इनकी पहली तुकें इस तरह हैं:

१. आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ॥
२. नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ॥
३. आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ॥

४. नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ॥
५. नाऊ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ॥
६. बिनु सतिगुरु किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ॥
७. सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ॥
८. सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ॥
९. भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे॥

(आसा की वार)

इस स्थान पर जहां गुरु जी ने शेख के साथ चर्चा की थी, गुरुद्वारा "नानक सर" प्रसिद्ध है जो शहर की पश्चिम दिशा में तीन-चार मील पर है। पाकिस्तान बनने से पहले कार्तिक की पूर्णिमा को यहां एक मेला लगता था।

दीपालपुर कोढ़ी का उद्धार

पाकपटन से चल कर गुरु जी दीपालपुर शहर से बाहर एक कुटिया देख कर वहां चले गए। कुटिया में एक कोढ़ी रहता था। उसने कहा, "संत जी! मुझे मेरे परिवार वालों ने यहां कुटियां डाल दी है, और मेरे रोग से डर कर मेरे नज़दीक कोई नहीं आता। आप को शायद पता न हो, इस कारण मैं आप को बता रहा हूं, क्योंकि मुझे कुष्ट रोग है; आप मेरे नज़दीक न आएं। कुटिया के बाहर ही रहें।" उसकी बात मान कर गुरु जी कुटिया के पास ही बाहर एक पीपल के नीचे डेरा डाल कर बैठ गए। कोढ़ी का नाम महान कोष में नूरी (नौरंगा) लिखा हुआ है। गुरु जी ने अपनी कृपा-दृष्टि से उसका रोग ठीक किया और उसको नाम-स्मरण का उपदेश देकर आगे को चले गए। यहां गुरुद्वारा बना हुआ है। यहां कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता था।

फिर सुल्तानपुर

पाकपटन से चल कर कसूर के रास्ते पट्टी आए और पट्टी से जिसका नाम तब पठ्ठे पिंड था, तथा अब डेहरा साहिब (जामराए के पास) आए। यहां आप जी गांव से बाहर ही रात बिता कर ब्यास पार

कर के बेबे नानकी जी के पास सुल्तानपुर पहुंच गए।

कीरतपुर-सांईं बुढन शाह

कुछ दिन बेबे नानकी जी के पास दर्शन कर के गुरु जी एक प्रसिद्ध मुसलमान फकीर को मिलने के लिए कीरतपुर को चल दिए। सुल्तानपुर से पूर्व दिशा की तरफ सतलुज को पार करके सांईं बुढन शाह के ठिकाने पहुंच गए।

सांईं बुढन शाह एक अधेड़ आयु का प्रसिद्ध शक्तिशाली फकीर था। यह एक पहाड़ों के ऊपर रहता था और यहां पर शेर और बकरियां एक साथ इकठ्ठे रहते थे।

इस पहाड़ी के नीचे पांच-सात घरों का एक छोटा सा पाखोवाल गांव था जो श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने अपने बड़े पुत्र बाबा गुरदित्ता जी से सम्वत् १६८३ विक्रमी में बसाया था और नाम कीरतपुर रखा।

जब श्री गुरु नानक जी पहाड़ी के पास सांईं को मिलने गए तो उसने कहां, "दुनियां में घूम कर भगवान का नाम नहीं लिया जा सकता, इसलिए मैं एकान्त वासी होकर, ईश्वर के स्मरण में लगा हुआ हूँ।" गुरु जी ने कहा, "सांईं जो! सब से बड़ा एकान्त यही है, कि पुरुष एकाग्रचित होकर सतिसंग करे और सतिसंग रूपी सरोवर में से ईश्वर के स्नेह वाले श्रेष्ठ उपदेश रूपी मोती चुन कर अपना जीवन ऊंचा करे। बुढन शाह गुरु जी के ये शब्द सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ, और विनती की कि आप सदा ही मेरे पास टिके रहें; मैं आप का सतिसंग प्रति दिन करता रहूंगा। गुरु जी ने कहा, "सांईं जी! शरीर के कारण संगत सदा स्थिर नहीं रह सकती। आप नाम-स्मरण का हमारा उपदेश सदा अपने पास रखें।" यह बचन सुन कर बुढन शाह बहुत प्रसन्न हुआ। यहां जिस जगह गुरु जी आकर बिराजे थे गुरुद्वारा चरण कमल विद्यमान है। यहां से आधा मील दूर बुढन शाह की कबर पहाड़ी के ऊपर बनी हुई है।

स्यालकोट हमजा गौंस

सांईं बुढन शाह से विदा होकर गुरु जी सुल्तानपुर, वैरोवाल जलालाबाद, किड़ियां पठानां से होते हुए सैयदपुर (एमनाबाद) लालो के पास पहुंच गए। भाई लालो को मिल कर गुरु जी पसरूर के रास्ते सयालकोट के एक फकीर हमजा गौंस का अहंकार दूर करने के लिए गए। हमजा गौंस फकीर सयालकोट शहर के दक्षिण की तरफ रहता था जो बहुत अभिमानी था और लोगों को वर अथवा स्राप का डरावा देकर अपनी महानता करवाता था। उस समय एक हिन्दु क्षत्रिय से गुस्से होकर सारे शहर को नष्ट करने के लिए एक गुफा में बंद होकर चालीसा काट रहा था। कहता था कि यह शहर झूठों का है; इसको मैं नष्ट कर दूंगा। गुरु जी शहर-निवासियों को फकीर के इस कोप से बचाने के लिए गुफा के नज़दीक एक बेरी के नीचे बैठ गए।

गुरु जी ने बाद्र में मरदाने को भेजा कि पीर के मुरीदों को कहना कि नानक तपा जी आप जो को मिलना चाहते हैं। जब भाई मरदाने ने गुफा के पास जाकर उसके मुरीदों को यह बात बताई तो उन्होंने कहा कि हमें पीर जी का हुक्म है कि चालीस दिनों के लिए न कोई उनको बुलाए और न ही अन्दर आए। हमने चालीस दिनों तक सूर्य नहीं देखना है। जब यह बात मरदाने ने आकर गुरु जी को बताई तो गुरु जी ने कहा, "मरदाना, पीर जी के श्रद्धालओं को कह आओ कि आज दोपहर वह सूर्य भी देखेंगे और चालीसा भी टूट जाएगा।" जब मरदाना यह बात कह कर वापिस गुरु जी के पास आया तो पीछे मुरीदों और लोगों ने जो यह बात सुन कर दोपहर की प्रतीक्षा कर रहे थे, देखा कि ठीक ही जब सूर्य शिखर पर आया तो पीर के मन का गुंबद खरबूज़े की टुकड़ी की तरह ऊपर से नीचे तक कट गया और सूर्य की क्रिरणें पीर जी के ऊपर जा पड़ीं। पीर ने जब यह कुछ देखा तो झट से दरवाज़ा खोल कर बाहर आ गया कि कहीं गुंबंद उसके ऊपर ही न गिर पड़े और सब लोगों को नष्ट करते-करते खुद ही नष्ट न हो जाए!

गुरु जी को शक्तिवान समझ कर पीर बड़े सत्कार से गुरु जी के पास आ बैठा। गुरु जी ने कहा, "पीर जी! एक के गुनाह के बदले सारे शहर को दुःख देना ठीक नहीं है। सब को क्षमा की दृष्टि से देखो। दरवेशों को कहर करना अच्छा नहीं लगता।" इस तरह गुरु जी ने सारे शहर को पीर के कहर से बचा लिया। पीर ने अपनी भूल मान ली और आगे से लोगों के ऊपर कहर की जगह मेहरबानी करने का भरोसा दिया। यहां गुरु जी का गुरुद्वारा 'बेर साहिब' प्रसिद्ध है जहां गुरु जी ने पीर हमजा गौंस को सुमार्ग दिखाया था।

मरना सच्च और जीना झूठ (मूला किराड़)

इस बेरी स्थान से ही गुरु जी ने मरदाने को दो पैसे देकर शहर भेजा था कि एक पैसे का सच्च और एक पैसे का झूठ खरीद कर लाओ। मरदाना बहुत सी दुकानों पर घूमा और जब उसे किसी से भी सच्च-झूठ मूल्य न मिला तो अंत में एक मूले किराड़ ने एक कागज़ पर "मरना सच्च और जीना झूठ" लिख दिया। फिर मूला आप भी उठ कर मरदाने के साथ ही यह देखने के लिए चल पड़ा कि यह कौन सा व्यापारी है जो ऐसा व्यापार करना चाहता है! मूला गुरु जी के दर्शन करके अति प्रसन्न हुआ और नाम-दान का उपदेश लेकर गुरु जी का सिक्ख बन गया।

मूले के घर की जगह सयालकोट शहर में गुरु जी की याद में एक बावली साहिब गुरुद्वारा बना हुआ है।

मिठन कोट मियां मिठ्ठे के पास

सयालकोट से वापिस पसरूर के रास्ते होते हुए गुरु जी गांव कोटला के निवासी मियां मिठ्ठे के पास पहुंच गए। यह फकीर मियां मिठ्ठा भी बहुत अहंकारी था। इसको अपने चमत्कारी होने का बड़ा गर्व था। यह कहता था कि हिन्दु नरकों की आग में जलेंगे और मुसलमान जन्नत के सुख भोगेंगे। इसी तरह ही इसने अनेकों हिन्दुओं को फुसला कर मुसलमान बनाया। गुरु जी ने इसके साथ बिचार करके इसको

बताया कि नेक कर्मों के बिना क्या हिन्दु क्या मुसलमान दोनों नरकों को आग में जलेंगे परन्तु मियां मिठ्ठे ने अपनी बात की प्रोढ़ता में कहा:

अवल नाऊं खुदाइ दा, दूजा नबी रसूल।
नानक! कलमा जो पढ़हि दरगह पवै कबूल।

अर्थात :- जो कलमां पढ़ेंगे, दरगाह में उन्हीं की रसूल हामी भरेगा; दूसरे नरकों को जायेंगे। गुरु जी ने उत्तर दिया :

अवल नाउं खुदाइ दा, दर परवान रसूल॥
शेखा नीयत रास कर तां दरगह पवें कबूल॥

अर्थात:- जिसकी नीयत साफ होगी वही दरगाह में पहुंचेगा; दूसरा कोई नहीं पहुंच सकेगा। फिर गुरु जी ने बताया कि भगवान का नाम उसका नूर है। जो उसके नूर में है, वह उसकी हज़ूरी में है और वही दरगाह में मकबूल होता है। वहां किसी रसूल की ज़रूरत नहीं है।

इस तरह मियां मिठ्ठे को गुरु जी ने आदि अन्त एक परमात्मा ही निश्चय करवाया।

लाहौर शहर-दुनी चन्द का निस्तारा

लाहौर शहर में एक शाहूकार दुनी चन्द खत्री धनवान् पुरुष रहता था। जब गुरु जी लाहौर आए तो दुनी चन्द के बाप का श्राद्ध था। उसने हिन्दु ब्राह्मणों और संतों-महात्माओं को भोजन करने को बुलावा भेजा। सभी भोजन करने के लिए दुनी चन्द के घर पहुंच गए। गुरु जी भी दुनी चन्द के विशेष बुलावे पर उसके घर चले गए और दुनी चन्द को समझाया कि जीवों की गति उनके मरने के बाद श्राद्ध करवाने से नहीं होती, बल्कि उनके अपने जीवन में कर्मों और वासनाओं के अनुसार होती है। जब तक अपने कर्मों और वासनाओं को जीव भोग न ले, उसकी वही गति बनती जाती है जो उसने मर कर प्राप्त की थी; वह बाद में किए किसी श्राद्ध से या किसी और कर्म से नहीं मिटती क्योंकि जब शरीर छुटता है तो धरती के पदार्थों के साथ प्यार करने वाले जो शरीर के रास-रंग में ही समय व्यतीत कर देते हैं, वे मर कर

धरती पर ही रह जाते हैं। मरने के समय ऐसे जीवों के सूक्ष्म शरीर इन मोटी वासनाओं के कारण इतने भारी होते हैं कि वे स्थूल शरीर में से निकल कर धरती पर ही रह जाते हैं और उन्हीं संस्कारों और स्थानों पर ही भटकते रहते हैं जिनके साथ वे सारी आयु मोह करते रहते थे। ऐसा जीव शरीर को छोड़ कर भी शरीर धारण किए हुओं की तरह घूमता रहता है। ऐसे जीवों को ही प्रेत का नाम दिया जाता है।

प्रेत जून में ये सारे जीव दुःखी रहते हैं। परन्तु जो पुरुष नाम का जाप करते हैं, ईश्वर के भय और भाव में जीवन व्यतीत करते हैं, उनकी गति अवश्य होती है। इस लिए दुनी चन्द जी, माया के अहंकार को त्याग कर नम्रता धारण करो और नाम-स्मरण करो। नेक कमाई करके खाओ और ज़रूरतमन्दों को खिलाओ। यह सब से उत्तम श्राद्ध है। इस से सभी प्राणी सद्गति को प्राप्त होते हैं।

गुरु जी के ये प्रभावशाली वचन सुन कर दुनी चन्द ने आप जी की सिक्खी धारण कर ली और सतिसंग करने के लिए अपने घर धर्मशाला बना दी। यह धर्मशाला चौहटा मुफती बाकर दिल्ली दरवाज़े के अन्दर लाहौर शहर में प्रसिद्ध है।

पक्खो के रंधावे (अपने परिवार के पास)

लाहौर से दुनी चन्द को सुमार्ग पर ला कर गुरु जी रावी के दाएं किनारे के साथ-साथ कई नगरों सौढ़ियां, भीलोवाल आदि में चरण डालते हुए पक्खो के रंधावे पहुंच कर गांव के बाहर एक वट वृक्ष के नीचे बैठ गए। गुरु जी का ससुर मूला चोणा पटवारी पक्खो के रंधावे गांव में रहता था और इस समय माता सुलक्खणी जी और दोनों साहिबज़ादे भी यहीं रहते थे।

जब मूले चोणे को पता लगा कि श्री नानक जी बाहर वट वृक्ष के नीचे फकीरी भेष में बैठे हैं तो वह गांव के चौधरी को साथ लेकर गुरु जी के पास आया और उसने बहुत ऊंची-नीची बातें कीं। कुछ दिनों

के बाद अजिते रंधावे की प्रेम पूर्वक विनती स्वीकार करके गुरु जी रावी के बाएं किनारे पर डेरा डाल कर टिक गए।

करतारपुर की नींव (सम्वत् १५६५)

गुरु जी के रहने के लिए चौधरी अजिते ने जल्दी ही कमरे बनवा दिए और बाकी भी जिस चीज़ की ज़रूरत थी, पहुंचा दी। बाद में चौधरी दोदे की प्रेरणा से दुनी चन्द लाहौर निवासी खत्री ने जिसको करोड़िया भी कहा गया है, गुरु जी के लिए धर्मशाला तथा और ज़रूरी मकान बनवा दिया और फिर गुरु जी अपने परिवार सुलखणी जी तथा दोनों पुत्रों को भी वहीं ले आए।

बाद में गुरु जी अपने माता-पिता को भी तलवंडी से यहां ले आए और डेढ़-दो वर्ष यहीं ठहरे रहे। इसी समय के दौरान ही आप जी के पास भाई बुढ्ढा जी बूड़ा नाम से आए और उपदेश सुन कर घर-बाहर त्याग कर आप जी के पक्के सिक्ख हो गए।

इसी समय ही गुरु जी ने भाई भागीरथ को मरदाने की लड़की के विवाह का सामान लेने के लिए लाहौर भेजा था और भाई भागीरथ की प्रेरणा से ही लाहौर का मनसुख शाहूकार गुरु जी का सिक्ख बन गया था। इस अपने निवास स्थान का नाम गुरु जी ने करतारपुर रखा।

नेक पुरुष के लक्षण

यहां एक बार एक सतसंगी प्रेमी ने गुरु जी से पूछा कि नेक आदमी के क्या लक्षण होते हैं? गुरु जी ने कहा, "नेक आदमी वह है:-

१. जिसके विचार नेक हों। २. जो दूसरों की प्रशंसा सुन कर प्रसन्न हो। ३. जो साधु-सन्तों से प्रेम रखता हो। ४. जो अपने उपकार करने वाले का सम्मान करता हो। ५. जो अपने से बड़ों की सेवा और सत्कार करता हो। ६. जो गरीबों पर दया करता हो। ७. जो 'एका नारी सदा जती' की पालना करता हो। ८. जो अच्छे पुरुषों को संगति में रहता है और खोटे पुरुषों की संगत का त्याग करता हो।"

इसी तरह ही यहां गुरु जी के सवेरे-शाम दीवान सजाते थे जिनमें

दूर-दूर से आकर दर्शनाभिलाषी और श्रद्धावान प्रेमी अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करके प्रसन्न होते थे।

पंचम कांड

दूसरी उदासी दक्षिण दिशा

(सम्वत् १५६७ से १५७१)

यहां करतारपुर में भाई भागीरथ और भाई बुढ्ढा आदि कुछ सिक्खों को अपने माता-पिता और परिवार के पास छोड़ कर लगभग तीन वर्षों के बाद गुरु जी ने दूसरी उदासी चढ़ते बैसाख सम्वत् १५६७ में आरम्भ कर दी। इसी उदासी में आप जी के पांव में खड़ाऊं थीं, हाथ में डंडा था, कमर पर रस्से लपेटे हुए थे और माथे पर तिलक था।

सरसा के पीरों के साथ चर्चा

करतारपुर से चल कर गुरु जी सुल्तानपुर, भठिंडा और भटनेर (हनुमानगढ़) आदि के रास्ते सरसा पहुंचे। उस समय सरसा मुसलमान पीरों का एक प्रसिद्ध ठिकाना था। पीरों ने पूछा, "संत जी! आप ने कौन सा तप किया है?" गुरु जी ने कहा, "जब मन विकार युक्त हो और शरीर की शक्ति के कारण विकार करता हो, तब शरीर को निर्बल करके मन को शुद्ध करने के लिए तप करना अच्छा है। अगर मन और शरीर शुद्ध हों तो नाम-स्मरण करना चाहिए। यह तपों का भी तप है और यही नाम हम स्मरण करके तप की साधना करते हैं।"

पीरों ने गुरु जी की परीक्षा लेने के लिए आप जी को कहा कि आप हमारे साथ चालीस दिनों का चालीसा काटो; फिर हम देखेंगे कि आप का नाम स्मरण तपों का तप है कि नहीं!

जब गुरु जी उनके साथ तप करना मान गए तो पीर अपने-अपने

भोरों में पानी और जौ रख कर बैठ गए और गुरु जी को अपने से अलग एक कोठड़ी में जौ पानी देकर बिठा दिया। पीरों ने दिन-प्रतिदिन जौ का एक दाना खा कर और पानी का प्याला पी कर दिन काटे पर गुरु जी ने न जौ का दाना खाया और न ही पानी पिया; चालीस दिन निराहार ही नाम-स्मरण में बैठ कर व्यतीत कर दिए। चालीस दिनों के बाद जब गुरु जी पीरों के साथ कोठरी से बाहर आए तो आप जी का चेहरा चढ़ती कलाओं में था और पीरों का मुरझाया हुआ था। यह देख कर पीरों ने गुरु जी को नमस्कार किया और मान लिया कि नाम का आधार सब तपों और पदार्थों से बलवान है। गुरु जी की इस याद में सरसा में गुरुद्वारा बना हुआ है और इसके पास ही पाँच पीरों की कोठरियां हैं। पीरों के नाम बहावल, हक, जलालुदीन आदि लिखे हैं।

बीकानेर सरेवड़ा साधू

सरसा से विदा होकर गुरु जी बीकानेर के इलाके में से लांघ कर दक्षिण को जा रहे थे कि आप जी की एक सरेवड़े साधू के साथ चर्चा हुई जिसमें गुरु जी ने उनके धार्मिक नियमों के सम्बन्ध में एक शब्द का उच्चारण करके बताया कि इनके धारण करने से जीव-हत्या के दोष की निवृति नहीं हो सकती क्योंकि पानी के बिना किसी की गति नहीं है, और पानी ही सब जीवों का मूल है :

सलोकु मः १ ॥

सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥
फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥
भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥
माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥
ओना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥
अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अन्नु न खाही ॥
सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥
झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥
लकी कासे हथी फुंमण अगो पिछी जाही ॥

ना ओइ जोगी ना ओइ जंगम ना ओइ काजी मुंला॥
दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला॥
....
गुरू समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई॥
नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई॥

(पन्ना १४९)

इस तरह गुरु जी ने सरेवड़ों के जीव हिंसा के भ्रम को दूर कर के सुमार्ग दिखाया और फिर कौडे राक्षस का सुधार करने के लिए आगे को चल दिए।

कौडा राक्षस

कौडा विंध्याचल के नीचे दक्षिणी जंगलों में रहने वाला एक आदमखोर भील जाति का सरदार था। इनका काम डाके डालना और आदमियों को मार कर खाना था। गुरु जी कौडे के सुधार के लिए उसके पास जगंल में गए। कौडा मरदाने को पकड़ कर उसको तेल में तल कर खाने की तैयारी करने लगा परन्तु जब गुरु जी ने कड़ाहे की तरफ ध्यान करके देखा तो कड़ाहा शीतल हो गया। गुरु जी की यह शक्ति देख कर कौडा गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। गुरु जी ने अपनी आत्मिक शक्ति से कौडे को इन बुरे कामों से हटा कर, धर्म की कमाई करके खाना, जीवों पर दया करना और नाम-स्मरण का उपदेश देकर राक्षस जीवन से देवता-जीवन वाला बना दिया।

संगला द्वीप-राजा शिवनाभ

कौडे का जीवन सुधार कर के गुरु जी आगे नदियों, पहाड़ों, शहरों और उजाड़ों में से लांघ कर बेअंत जीवों का सुधार और उद्धार करते हुए नागापट्ट से समुद्र के किनारे रामेश्वर पहुंचे। यहां लंका को जाने के लिए जब श्री राम चन्द्र जो समुद्र के ऊपर पुल बांधने लगे थे तो उन्होंने पहले अपने इष्ट भगवान की शिवलिंग-मूर्ति की स्थापना कर के पूजा की थी। मन्दिर के नाम पर बाद में जो यहां नगर बसा, उसका

नाम भी रामेश्वरम् प्रसिद्ध हो गया।

रामेश्वरम् से समुद्र पार कर के आप जी संगला द्वीप पहुंचे। यहां गुरु जी का एक सिक्ख मनसुख लाहौर से व्यापार करने गया हुआ था जिसकी प्रेरणा से यहां का राजा शिवनाभ गुरु जी की शरण में आया और उपदेश लेकर प्रसन्न हो गया। राजा शिवनाभ ने गुरु जी की आज्ञा अनुसार सतिसंग करने के लिए एक धर्मशाला बनवाई और यहां सतिसंग की नींव रखी।

यहां ही कहा जाता है कि राजा शिवनाभ को हठ-योग अनुसार प्राणायाम समझाने के लिए गुरु जी ने "प्राण संगली" उच्चारण की।

इस प्रथा द्वारा वर्णन किया गया है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बीड़ रचने के समय जब श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इस पोथी को भाई पैड़े के द्वारा संगला द्वीप से मंगवा कर देखा तो इसको गुरु रचना सिद्ध न होने के कारण जल में प्रवाहित करवा दिया था

कजली वन में भर्तृहरि जोगी के साथ चर्चा

मैसूर प्रदेश में बीजापुर के इलाके में एक घने जंगल का नाम कजली वन है। इस वन में जोगियों का एक आश्रम था। संगला द्वीप से जब गुरु जी वापिस आ रहे थे तो आप जी इस आश्रम में गए। जोगियों के मुखी भर्तृहरि जोगी ने आप जी के साथ कुछ प्रश्न किए, जिनका उत्तर देकर उसकी शंकाएं दूर कीं तो वह इसके फलस्वरूप गुरु जी का सिक्ख बन गया।

गुरु जी का नाम-पता पूछ कर भर्तृहरि ने कहा, "आप योग धारण कर लें; योग से वृति टिक जाती है और अपने इष्ट के दर्शन हो जाते हैं।" गुरु जी ने कहा, "हठ-योग से शरीर को कष्ट होता है। शरीर को कष्ट होने के कारण मन इस योग से दूर भागता है पर आप योगी लोग हठ से मन को तंग कर के बैठे रहते हैं जिससे परम-तत्व की प्राप्ति कठिन हो जाती है।"

भर्तृहरि ने पूछा, "फिर आप के सिक्ख परम-तत्व की प्राप्ति कैसे

करते हैं?" गुरु जी ने कहा, "हमारा योग यह है कि हम हमेशा करतार से जुड़े रहते हैं, जिससे शरीर को कोई कष्ट नहीं होता, मन विगास में और शरीर प्रफुलित रहता है।

परमात्मा का मान-सम्मान करने, नाम स्मरण करने और सुनने और उसकी विचार करने से वृति भगवान से जुड़ जाती है। इस अवस्था को 'हम सहज-योग कहते हैं।'

फिर भर्तृहरि ने कहा, "हम अष्टांग-योग धारण कर के, राज-योग कमाते हैं। आप राज-योग किस तरह कमाते हैं?" गुरु जी ने कहा, "हम गृहस्थ में रह कर, भीतर से उससे निर्लेप रहते हैं। गृहस्थ के पदार्थों और भोगों में मन नहीं लगाते। मन को अपने ईश्वर से जोड़े रहते हैं। हम इस अवस्था को राज-योग कहते हैं।"

फिर भर्तृहरि ने कहा, "हम शराब का प्याला पी कर अखंड घोर समाधि लगाते है, और महान परमात्मा के दर्शन करते हैं। आप को मदिरा पान करने के बिना सहज-योग में उसके दर्शन नहीं हो सकते।" गुरु जी ने कहा, "हम झूठी मदिरा नहीं पीते । हम ज्ञान ध्यान रूपी गुड़ और लकड़ियों से तैयार किया हुए प्रेम रूपी अमृत का रस पीते हैं और सदा ही उसके दर्शन करते हैं। हमें समाधि लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ती।" भर्तृहरि के शब्दों का उत्तर गुरु जी ने इस शब्द द्वारा दिया:

आसा म: १ ॥

'गुडु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ॥
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ॥ १ ॥
बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ॥
अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ॥ १ ॥ रहाउ॥
पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे॥
अंमृत का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे॥ २ ॥
गुर की साखी अंमृत बाणी पीवत ही परवाणु भइआ॥
दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ॥ ३ ॥
सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै॥

कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंम्रित धारै॥ ४ ॥ (पन्ना ३६०)

अर्थात्:- नाम रस के पीने वाला सदा ही अपने प्रियतम के रंग में रंगा रहता है। रात-दिन उसके प्रेम की ज्योति जली रहती है और बेअंत शब्द प्राप्त करता है, परमात्मा का गुण गाने वाला सदा ही बैरागी है। वह माया के मोह में पड़ कर जन्म निष्फल नहीं करता। हे भर्तृहरि जोगी! ऐसा मस्त हुआ पुरुष अपने आत्म-स्वरूप के दर्शन रूपी अमृत को प्राप्त करता है।"

यह निर्णय सच्ची मदिरा का; सहज समाधि का और नित्य दर्शन का गुरु जी से सुन कर भर्तृहरि ने आप जी के आगे सिर झुका दिया। कुछ और योगी जो भर्तृहरि के साथ बैठे चर्चा सुन रहे थे, उन्होंने पूछा कि गृहस्थ में रह कर प्रभु की प्राप्ति कैसे हो सकती है? अथवा यह तो गृहस्थ को त्याग कर ही योग साधना से हो सकती है! गुरु जी ने फरमाया, "जो पुरुष अपनी नेक कमाई करके खाए और ज़रूरतमंदों को खिलाए, प्रेम-भक्ति द्वारा ईश्वर के स्मरण में मन को लगाए, ईश्वर का मन में भय रख कर जीवन व्यतीत करे, उसको गृहस्थ में ही ईश्वर की प्राप्ति होगी।"

इस तरह अनेकों प्रश्नों का समाधान सुन कर सिद्धों ने गुरु जी के आगे सिर झुकाया और आप जी के वचनों के सच्च करके माना।

बहावलपुर-पीर मखदूम बहावद्दीन कुरैशी

कजली वन से चल कर गुरु जी समुद्र के पश्चिमी घाट के साथ-साथे मालाबार, गुजरात, बम्बई आदि इलाकों का दौरा करते हुए, और सति नामु का चक्कर चलाते हुए, सिन्ध में उच्च के पीरों के पास बहावलपुर आए। उच्च का पीर बहावद्दीन उल्टी-सीधी बातों और चमत्कारों में विश्वास रखता था। गुरु जी ने कहा, "पीर जी! इन चमत्कारों से लोगों को खुश करके माया इकठ्ठी करने के पीछे नहीं लगाना चाहिए। यह माया निर्जीव है। निर्जीव वस्तु को खाना नीचों का काम है। आप भगवान की बंदगी करने वाले हंस हैं। ईश्वर के नाम

रूपी मोती को खाओ और संतुष्ट हो जाओ।"

ये वचन सुन कर पीर और उसके चेले गुरु जी के श्रद्धालु बन गए। यहां से चल कर गुरु जी अनेकों प्राणियों को नाम-दान देते हुए सुल्तानपुर अपनी बहिन नानकी जी को मिल कर अपने परिवार के पास करतारपुर चले गए।

छठा काँड

तीसरी उदासी

उत्तर दिशा सुमेर पर्वत

(सम्वत् १५७३ से १५७५)

दक्षिण दिशा से वापिस आकर गुरु जी कुछ महीने अपने परिवार के पास करतारपुर में ठहर गए। दोनों समय सिक्ख संगत इकट्ठी होती और दर्शन करके गुरु जी की खुशियां प्राप्ति करते हुए प्रसन्न होती रही। बाद में आप फिर उत्तर दिशा के लोगों के कल्याण के लिए अपने साथ भाई शीहां छींबे और हस्सू लौहार को लेकर सिद्धों के ठिकाने सुमेर पर्वत आदि को चल दिए।

करतारपुर से जन्मू के रास्ते मटन साहिब के चश्में आकर ठहरे। यह नगर श्रीनगर से ४० मील पूर्व असकरद दुर्ग के पास है। यहां मटन में गुरु जी की एक ब्रह्मदास काश्मीरी विद्वान पण्डित के साथ चर्चा हुई, जिसने सालिग्राम की पूजा छोड़ कर निरंकार की उपासना ग्रहण कर ली। गुरु जी ने इसको इलाके का प्रचारक नियुक्त किया। आप जी की याद में यहां गुरुद्वारा कायम है। मटन से गुरु जी बद्रीनाथ और सप्त श्रृंग हेमकुँड के रास्ते सुमेर तथा कैलाश पर्वत के ऊपर सिद्ध-मण्डली के ठिकाने मान सरोवर के पास पहुंचे। सिद्ध आप जी को देख कर बहुत

हैरान हुए और पूछा, "हे बाले! किस शक्ति से इस इतने कठिन स्थान पर पहुंचे? आप का नाम क्या है?" गुरु जी ने कहा, "मैं सब शक्तियों के मूल परमात्मा की प्रेम-भक्ति करता हूँ। उसकी शक्ति से मैं यहां पहुंचा हूँ और मेरा नाम नानक है।" भाई गुरदास जी इस वार्ता को इस तरह लिखते हैं:

बाबे डिठ्ठी पिरथमी नवै खंडि जिथै तकि आही।
फिरि जाइ चढ़िआ सुमेर परि सिधि मंडली द्रिसटी आई।
चउरासीह सिधि गोरखादि मन अंदरि गणती वरताई।
सिधि पुछणि सुणि बालिआ! कउणु सकति तुहि एथे लिआई।
हउ जपिआ परमेसरो भाउ भगति संगि ताड़ी लाई।
आखनि सिधि सुणि बालिआ! अपना नाउ तुम देहु बताई।
बाबा आखे नाथ जी! नानक नाम जपे गति पाई।
नीचु कहाइ ऊच घरि आई॥ २८॥

(वार १)

फिर सिद्धों ने पूछा कि मातृ-लोक का क्या वरतारा है? गुरु जी ने कहा, "मातृ-लोक में झूठ की काली रात्रि है। सच्चाई का चाँद कहीं नज़र नहीं आता। आप लोग पर्वतों में आकर छुप गए हैं। जगत का कल्याण कौन करे ? भगत लोग रासों द्वारा नाच-रंगों में व्यस्त हैं। धर्म की शिक्षा कौन दे ? ब्रह्मण घर-घर दान-पूजा ले रहे हैं। काज़ी घूस लेकर अन्याय कर रहे हैं। इस तरह जगत के जीवों का बुरा हाल हो रहा है। उद्धार कौन करे?" भाई गुरदास जी ने गुरु साहिब जी के उत्तरों के अनुसार जगत में लोग-वरतारे का इस तरह वर्णन किया है:

कलि आई कुते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई।
राजे पापु कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई।
परजा अंधी गिआन बिनु कूड़ कुसतु मुखहु आलाई।
चेले साज वजाइदे नचनि गुरू बहुतु बिधि भाई।
चेले बैठनि घरां विचि गुरि उठि घरीं तिनाड़े जाई।
काजी होए रिसवती वढ़ी लै कै हकु गवाई।

इसत्री पुरखै दामि हितु भावै आइ किथाऊं जाई।
वरतिआ पापु सभसि जगि मांही॥ ३०॥

(वार १)

मातृ-लोक में यह कूड़ कुसति का वरतारा चल रहा है। परन्तु गुरु जी ने कहा कि आप सिद्ध लोगों का यह हाल है कि:

सिध छपि बैठे परबती, कउणु जगति कउ पारि उतारा।
जोगी गिआन विहूणिआ, निसदिनि अंगि लगाए छारा।
बाझु गुरू डुबा जगु सारा॥ २९।

(वार १)

जिन्होंने नगर का कल्याण करना था, सच्चे रास्ते पर लाना था— वही सिद्ध और जोगी लोग पर्वतों के ऊपर आकर डेरे डाल कर बैठे हो! फिर जगत के लोगों की कौन सहायता करे?

इस चर्चा के उपरान्त सिद्धों ने अपनी करामातों को दिखा कर गुरु जी को वश में करके के यत्न भी किए पर किसी तरह भी जब उनको सफलता न हुई तो उठ कर "अलख अलख" कहते हुए छिन्न-भिन्न हो गए।

सुमेर पर्वत से गुरु जी नेपाल, सिक्कम, भुटान से होते हुए तिब्बत और उसके आस-पास चक्कर लगा कर तिब्बत के रास्ते ही वापिस काश्मीर और जम्मू पहूंच गए। जम्मू से जसरोटे, माधोपुर, सुजानपुर, पठानकोट और गुरदासपुर होते हुए ब्यास पार करके बेबे नानकी जी के पास सुल्तानपुर पहुंच गए।

सुल्तानपुर से जब गुरु जी दो दिनों के बाद करतारपुर को जाने लगे तो बेबे जी ने कहा, "वीर जी! परसों मेरा शरीर छूट जाएगा। आप दो दिन और मेरे पास ठहर जाएं।" बीबी जी की बात सुन कर जब गुरु जी ठहर गए तो दूसरे दिन के बाद ही बेबे जी परलोक सिधार गए और तीसरे दिन जै राम जी भी इसी तरह ही साधारण ज्वर से ही शरीर छोड़ कर स्वंग सिधार गए। गुरु जी इनका अंतिम संस्कार करके अजिते रंधावे के पास और वहां से करतारपुर अपने परिवार के

पास आ गए। इस तरह सम्वत् १५७५ में तीसरी उदासी समाप्त हुई।

चतुर्थ उदासी पश्चिम की

(सम्वत् १५७५ से १५७९)

कटास राज

उत्तर दिशा की यात्रा से आकर गुरु जी अपने दर्शन-उपदेश के साथ प्रेमी-संगतों को प्रसन्न करने के लिए कुछ समय करतारपुर टिके रहे और फिर सम्वत् १५७५ के पिछले पक्ष में करतारपुर से चल कर तलवंडी गए और तलवंडी से बैसाखी १५७६ का मेला कटास राज में जाकर किया। कटास राज दादन खां के नज़दीक ज़िला जेहलम में है। यहां गुरु जी ने योगियों और सन्यासियों कि जो लोग गृहस्थ के दुःखों तकलीफों से डर कर घर-बार छोड़ कर अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए, बैराग धारण कर लेते हैं, वे लोग मन्द बैरागी हैं। इसका फल बहुत थोड़ा होता है। दूसरे वे लोग जो परमात्मा की प्राप्ति की लगन में लग कर पदार्थों की प्राप्ति और घर के सारे सुख होते हुए भी सब से नाता तोड़ लेते हैं, वे सच्चे बैरागी हैं। सन्यासी को सच्चा बैराग धारण करना चाहिए।

रुहतास टिल्ला बाल गुँदाई

(कान फटे जोगियों का स्थान)

कटास से गांव दादन खां के रास्ते गुरु जी रुहतास कान-फटे जोगियों के पास टिल्ला बाल गुँदाई जा पहुंचे। यह स्थान दीना रेलवे स्टेशन ज़िला जेहलम से तीन मील दूर पश्चिम दिशा में है। उस समय जो योगी यहां रहता था वह स्वयं तो भखड़े की रोटी खाता था, पर अपने डेरे पर आए अतिथि सन्तों को अच्छा भोजन करवाता तथा अच्छा कपड़ा पहनने को देता था। गुरु जी यह देख कर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि मन की वासनाओं और उठ रही रुचियों पर काबू पाने के लिए निरंकार का जाप करो, स्मरण करो और अपनी वृति को

जोड़ो—तब ही आप सच्चे योगी बन सकते हैं।

चौहा साहिब

इस टिल्ले से उतर कर पहाड़ी के नीचे गुरु जी ने एक सिक्ख भक्त की विनती करने पर एक पत्थर उठा कर जल प्रवाहित किया, जो आज तक जारी है। इसके पास ही एक सरोवर और एक गुरुद्वारा है।

यहां से चल कर गुरु जी कई स्थानों पर चरण डालते हुए डेरा इस्माईल खां, डेरा गाज़ी खां, जामपुर, मोरांपुर, नौशहरे, राजनपुर और मिठनकोट, जहां पांच समुद्र इकठे होते हैं, पहुंचे। यहां से सक्खर, भक्खर तथा रोहड़ी से साधू बेला जा कर एक बरगद के नीचे बैठ कर विश्राम करके यहां से लाड़काना आदि सिंध देश के अमरकोट, टांडा, हैदराबाद, उडयारे सिंध के किनारे गए। फिर ठठ्ठे, राजघाट से कराची गए। कराची में हाजियों से मिल कर जद्दे शहर (मक्के) पहुंचे। इस समय गुरु जी के साथ भाई मरदाना था, जिसकी विनती को मान कर गुरु जी उसको मक्का व मदीना दिखाने ले गए थे।

मक्के हाजियों के साथ चर्चा

मक्के पहुंच कर गुरु जी ने एक अजीब चमत्कार किया। रात के समय आप जी काबे की तरफ पैर करके सो गए। सुबह मुँह-अंधेरे जब वहां का सेवादार जीवन झाड़ू देने के लिए आया तो उसने आप जी को काबे की तरफ पैर करके सोए हुए देख कर गुस्से से कहा, "तू कौन काफिर है, जो खुदा के घर की ओर पैर करके सोया हुआ है?" आगे से गुरु जी ने बड़े धीरज के साथ कहा, "भाई! मैं लम्बे सफर कर के आने से थका हुआ हूँ; उठ नहीं सकता; तुम जिस तरफ खुदा का घर नहीं है, उस तरफ मेरे पाँव कर दो क्योंकि मुझे तो मालूम नहीं है, कि खुदा का घर किस ओर है और किस ओर नहीं है; मैं अन्जान हूँ और पहली बार ही यहां आया हूँ।" यह बात सुन कर जीवन ने बड़े गुस्से के साथ गुरु जी को पैरों से पकड़ लिया और घसीट कर दूसरी तरफ कर दिया। जब पैरों को छोड़ कर जीवन ने देखा कि काबा फिर

भी गुरु जी के पैरों की तरफ था। उसने फिर बड़े गुस्से के साथ पैर पकड़ कर दूसरी तरफ घुमा दिए, पर क्या देखता है कि काबा फिर गुरु जी के पाँव की तरफ था।

जब जीवन ने दो-तीन वार गुरु जी के पाँव घुमा कर देखा कि काबा आप जी के पैरों की तरफ ही है, तो हैरान होकर गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। इस वार्ता को भाई जी इस तरह वर्णन करते हैं:-

मक्के की यात्रा

बाबा फिरि मक्के गइआ नील बसत्र धारे बनवारी।
आसा हथि किताब कछि कूजा बांग मुस्सला धारी।
बैठा जाइ मसीत विचि जिथै हाजी हजि गुजारी।
जा बाबा सुता राति नो वलि महराबे पाइ पसारी।
जीवणि मारी लति दी केहड़ा सुता कुफर कुफारी?
लता वलि खुदाइ दे किउ करि पइआ होइ बजिगारी।
टंगों पकड़ि घसीटिआ फिरिआ मक्का कला दिखारी।
होइ हैरानु करेनि जुहारी॥ ३२॥

(वार १)

इस पउड़ी से, जिस तरह गुरु जी ने भेष धारण किया, उस का भी हमें पता चल जाता है। गुरु जी ने नीले कपड़े पहने हुए थे। हाथ में आसा और बगल में किताब थी। लोटा और मुस्सला (निमाज पढ़ने के लिए नीचे बिछाने वाली सफ) भी पास थी। हाजियों के इस भेष में मक्के पहुंच कर मसजिद में जहां हाजी ठहरते हैं, वहां जा बैठे। रात हुई तो काबे की तरफ पैर करके सो गए। जीवन ने जोर से ठुड्डा मार कर कहा कि यह कौन काफिर सोया पड़ा है ? उसने गुरु जी को जब टाँग से पकड़ कर टाँगें दूसरी तरफ कीं तो बाबा नानक जी ने ऐसी शक्ति दिखाई कि मक्का भी साथ ही घूम गया। सारे हाजी और मौलवी हैरान होकर नमस्कार करने लगे।

फिर आगे जैसे काज़ी और मौलवी इकट्ठे होकर बातें पूछने लगे,

भाई साहिब जी उसका वर्णन ऐसे करते हैं:

पुछनि गल ईमान दी काजी मुलां इकठे होई।
बडा सांग वरताइआ लखि न सकै कुदरति कोई।
पुछनि फोलि किताब नो हिन्दु वडा कि मुसलमानोई?

गुरु जी की तरफ से इसका उत्तर इस तरह देते हैं:-

बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।
हिन्दू मुसलमान दुइ दरगह अंदरि लहनि न ढोई।
कचा रंगु कुसंभ दा पाणी धोतै थिरु न रहोई।
करनि बखीली आपि विचि राम रहीम कुथाइ खलोई।
राहि सैतानी दुनीआ गोई॥ ३३॥

(वार १)

गुरु जी के इस तरह के निर्भय और सच्चे वचन सुन कर काज़ियों और मुल्लाओं ने आप जी को नमस्कार किया और आप जी की खड़ाऊएं निशानी के तौर पर अपने पास रख लीं। भाई गुरदास जी लिखते हैं:

मक्का की दिग् विजय

धरी नीसानी कउसि दी मके अंदरि पूज कराई।
जिथै जाइ जगति विचि बाबे बाझु न खाली जाई।
घरि घरि बाबा पूजीऐ हिन्दू मुसलमान गुआई।
छपे नाहि छपाइआ चड़िआ सूरजु जगु रुसनाई।
बुकिआ सिंघ उजाड़ विचि, सभि मिरगावलि भन्नी जाई।
चड़िआ चंदु न लुकई कढि कुनाली जोति छपाई।
उगवणहु ते आथवणो नउ खंड प्रिथमी सभ झुकाई।
जगि अंदरि कुदरति वरताई॥ ३४।

(वार १)

इस तरह मक्का और मदीना में कई हाज़ियों, पीरों और मौलवियों के साथ गुरु जी की चर्चा हुई। सभी ने आप जी को ईश्वर का सच्चा अवतार मान कर नमस्कार और आप जी का सत्कार किया।

मक्के की चर्चा के समय सैय्यद रुकनलद्दीन ने जो उच्च शरीफ से हज करने गए थे, गुरु जी के साथ हाज़ियों के मुखिया होकर चर्चा की थी और आप जी से निशानी के तौर पर खड़ाऊएं ली थीं।

बगदाद जाना

मक्का मदीना से चल कर गुरु जी बगदाद गए। वहां शहर से बाहर बैठ कर जब गुरु जी ने सति नामु की आवाज़ उच्चारण की तो सारी नगरी उस आवाज़ से गुमसुमसी हो गई। पीर दसतगीर ने हैरान होकर समाधि लगा कर देखा कि यह कौन है, तो उसको पता चला कि एक बड़ा मस्ताना फकीर है। इसके बारे में भाई गुरदास जी वर्णन करते हैं:

फिरि बाबा गइआ बगदादि नो बाहरि जाइ कीआ असथाना।
इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
दिती बांगि निवाजि करि सुन्नि समानि होआ जहाना।
सुन्न-मुन्नि नगरी भई देखि पीर भइआ हैराना।
वेखै धिआनु लगाइ करि इकु फकीरु वडा मसताना।
पुछिआ फिरि कै दसतगीर कउण फकीरु किस का घरिआना?
नानक कलि विचि आइआ रबु फकीरु इको पहिचाना।
धरति आकास चहू दिसि जाना॥ ३५॥

(वार१)

यह पता लगा कर पीर दसतगीर गुरु जी के पास आया और पुछा कि तू किस भेष का फकीर है और तेरा नाम क्या है ? भाई मरदाने ने बताया कि यह (गुरु) नानक है, जो कलियुग में आया है और एक ईश्वर के भेष को मानने वाला है। यह सारी पृथ्वी, आकाश और चारों कूटों में प्रसिद्ध है। फिर पीर से और भी कई प्रश्नोतर हुए। पीर ने पूछा कि आप ने जो लाखों पातालों और लाखों आकाश कहा है, यह आप कैसे कह सकते हो जब कि हमारे हज़रत साहिब ने तीन आकाश और तीन ही पाताल बताए हैं और हिन्दू मत सात पातालों और सात

आकाशों का वर्णन करता है। आप की बात मैं नहीं मान सकता। यह झूठ है। गुरु जी ने कहा, "पीर जी! जितनी किसी की बुद्धि हो, उतनी ही कोई बात करता है। पीर ने कहा, हमें आप की बात का कैसे यकीन आए?" गुरु जी ने कहा, "हम आप को दिखा सकते हैं।" पीर ने कहा, "मेरे सपुत्र को दिखा दें, मुझे यकीन आ जाएगा।" तब गुरु जी पीर के पुत्र को साथ लेकर आँख झपकते ही आकाश में पहुंच गए और लाखों ही आकाश दिखा कर फिर क्षण भर में ही पाताल में ले जाकर लाखों ही पाताल दिखाए। पाताल से वापिस आते समय एक जगह संगत इक्ठी हुई थी तथा कढ़ाह प्रसाद बांटा जा रहा था। वहां से गुरु जी ने एक मिट्टी का बर्तन भर कर पीर के लड़के को दिया और वापिस पीर के पास आ गए। जब पीर के पुत्र ने पीर को बताया कि मैं इनके साथ लाखों ही आकाश और लाखों ही पाताल देखता-देखता थक गया हूँ, बेअत ही हैं, कोई अंत नहीं है। फिर उसने कड़ाह का बर्तन जो पाताल वाली संगत ने गुरु जी को दिया था, पीर के आगे रख कर कहा कि इनके मुरीद सारे ही आकाशों और पातालों में हैं। यह प्रसाद इनके मुरीदों ने पाताल से दिया है। यह एक गुणी पुरुष हैं, जो किसी के छुपाने से छुपाए नहीं जा सकते। तो पीर ने बड़े हैरान होकर गुरु जी को नमस्कार किया। भाई गुरदास जी ने सारी वार्ता का इस प्रकार वर्णन किया :

पूछे पीर तकरार करि एह फकीरु वडा *अताई।
एथे विचि बगदाद दे वडी करामाति दिखलाई।
पाताला आकास लखि ओड़कि भाली खबरि सुणाई।
फेरि **दुराइन दसतगीर असी भि वेखा जो तुहि पाई।
नालि लीता बेटा पीर दा अखी मीटि गइआ ***हवाई।
भरि कचकौल प्रसादि दा धुरो पतालो लई कड़ाही।
ज़ाहर कला न छपै छपाई॥ ३६॥

(वार १)

*शक्तिमान है। **दुहरा कर बोला ***आसमान में।

'श्री गुरु नानक चमत्कार' में भाई वीर सिंघ जी के लिखे अनुसार बगदाद शहर से पश्चिम दिशा एक मील दूर जहां गुरु जी बैठ कर पीर बहलोल के साथ चर्चा करके उपदेश दिया था वहां यादगार के तौर पर एक थड़ा बना हुआ है जिसकी चार दीवारी में एक सिल लगी हुई है। इस सिल के ऊपर गुरु जी के यहां बैठने का सन् ९१७ या ९२७ विक्रमी सम्वत् १५७७ के बराबर बनता है जो आप जी की पश्चिम यात्रा का ठीक समय है।

सभी इतिहासकारों ने आप जी की बगदाद यात्रा को आप जी की चतुर्थ उदासी सम्वत् १५७५ से १५७९ का समय ही लिखा है।

ईरान, तुर्किस्तान और काबुल

ईराक देश के शहर बगदाद से चल कर गुरु जी ईरान देश के तहरान शहर में गए। यहां से रूस के इलाके में तुर्किस्तान के शहर ताशकंद, समरकंद (बाबर का तख्त स्थान) और बुखारे आदि शहरों से होते हुए अफगानिस्तान के शहर *काबुल में पहुंचे और लुँडे समुद्र के उस पार एक पहाड़ी पर जा बैठे। गुरु जी की इस याद में यहां एक गुरुद्वारा बना हुआ है। पहाड़ी के ऊपर ही एक चश्मा है जो गुरु जी के नाम से प्रसिद्ध है। नवचंद्रमा इतवार को मेला लगता है और कड़ाह प्रसाद बाँटा जाता है। यहां गुरु जी ने एक पठान को उपदेश दिया था कि पढ़ा हुआ वह है जिसके अन्दर भगवान व्यापक है, क्योंकि विद्या का निचोड़ नाम है। नाम जपने वाला ही अच्छा है, चाहे छोटा हो या बड़ा।

पंजा साहिब और वली कंधारी

काबुल से गुरु जी ने खैबर दर्रे से लांघ कर पेशावर आकर गंज मुहल्ले में विश्राम किया। यहां आप जी की याद में धर्मशाला बनी हुई है जो धर्मशाला बाबा श्री चन्द के नाम से प्रसिद्ध है। पेशावर से नौशहरे के रास्ते गुरु जी गांव हसन अबदाल आ कर गांव के बाहर एक पहाड़ी के पास बैठ गए। इस पहाड़ी पर एक फकीर वली कंधारी, जिसने जप तप करके अनेक

*इस जगह पर पहुंचने का सम्वत् १५७७ खा. तवारीख में लिखा है जो ऊपर लिखे बगदाद शहर के सम्वत् साथ ही है।

सिद्धियां प्राप्त की हुई थीं, वहां रहता था। यह बड़ा अहंकारी था। जब गुरु जी को कुछ दिन बैठे हुए हो गए तो गुरु जी को इसके अहंकारी होने का पता चला गया तथा वली कंधारी को भी पता चल गया कि गुरु जी शक्तिशाली हैं। गुरु जी तो उसका अहंकार तोड़ना चाहते थे तथा कंधारी गुरु जी की शक्ति को मात करके लोगों को दिखाना चाहता था।

पहाड़ी की चोटी के ऊपर पानी का एक चश्मा निकलता था, जिसके पास ही वली कंधारी का डेरा था। एक दिन अन्तर्यामी गुरु जी ने मरदाने को इस चश्मे से पानी लाने के लिए वली कंधारी के पास भेजा। पहाड़ी पर पहुंच कर मरदाने ने बहुत मिन्नतें कीं पर वली कंधारी ने उसको पानी न दिया तथा कहा कि अगर तुम्हारा पीर शक्तिशाली है तो उसे कहो कि तुम्हें पानी दे एवं अपना नया चश्मा निकाल ले। जब ऐसी अहंकार तथा तर्क वाली बातें सुन कर मरदाने ने आकर ये गुरु जी को बताईं तो गुरु जी ने सति नामु कह कर मरदाने से पत्थर परे हटाने को कहा, जिसके नीचे से पानी का एक चश्मा चल पड़ा। इसके चलने से ऊपर वली कंधारी का चश्मा बंद हो गया।

अपना चश्मा बंद हुआ देख कर वली कंधारी ने बड़े क्रोध से पहाड़ी की एक चट्टान को अपनी शक्ति से नीचे गुरु जी की ओर धकेल दिया। लुड़कती-लुड़कती चट्टान जब गुरु जी के नज़दीक आई तो आप जी ने अपने हाथ का पंजा फैला कर उसको वहीं पर ही रोक दिया।

गुरु जी की यह शक्ति, पहले पानी नीचे खींचने वाली और दूसरी पहाड़ी को हाथ के साथ रोक लेने वाली, देख कर वली कंधारी ने पहाड़ी से नीचे उतर कर गुरु जी से माफी मांगी और आगे से नम्र रहने का प्रण किया।

गुरु जी के पंजे वाला यह पत्थर अभी तक गुरुद्वारा पंजा साहिब में देखा जा सकता है। इस पंजे के निशान के कारण ही इस गुरद्वारे का नाम पंजा साहिब प्रसिद्ध है। अब यह गुरुद्वारा पंजा साहिब पाकिस्तान में है,जहां हर वर्ष बैसाखी को बहुत ही देशों से हिन्दु सिक्ख इक्ठे होकर मेला लगाते हैं। गांव हसन अबदाल ज़िला कैंबलपुर (पाकिस्तान) में है।

स्यालकोट-मूला मरण

कुछ दिन हसन अबदाल में रहने के पश्चात् वली कंधारी का अहंकार दूर करके और उसको "खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहीओ स्रब ठाई" का उपदेश करके सब को एक दृष्टि देखना और एक जैसा सलूक करना सिखाया। यहां से विदा होकर गुरु जी रावलपिंडी, मरी, कहूटा, जेहलम, मीरपुर भिंदर से होते हुए स्यालकोट आए।

गुरु जी की स्यालकोट की यह दूसरी फेरी थी। पहली फेरी में आप जी ने मूले को सच्च मरना तथा झूठ जीना बताया था, तथा हमजा गौंस से गुरु जी की चर्चा हुई थी। अब इस बार जब स्यालकोट पहुंच कर गुरु जी मूले को मिलने गए तो उसको, उसकी बीवी ने गुरु जी को देख कर उपलों के कोठरे में छुपा दिया, कि कहीं फिर से गुरु जी मूले को अपने साथ ही न ले जाएं!

जब गुरु जी ने शहर दरवाज़े पर खड़े होकर मूले को आवाज़ लगाई तो उसकी बीवी ने उत्तर दिया, "सन्त जी! वह (मूला) तो घर पर नहीं है।" अन्तर्यामी गुरु जी ने यह उत्तर सुन कर मरदाने को कहा, "आओ भाई मरदाना! अगर मूला घर नहीं तो न सही, हम तो इसे मिलने आए थे पर यह मूर्ख अपनी बीबी के कहने से घर में छिप गया है!" यह वचन कर के जब गुरु जी हमजा गौंस मकबरे के पास बेरी के नीचे आ बैठे तो पीछे से जल्दी ही समाचार मिला कि मूला साँप लड़ने से मर गया है। यह खबर सुन कर गुरु जी ने यह वचन उच्चारण किया:

सलोक महला १ ॥ नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥
मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥

(म: १ पन्ना १४१२)

सैयदपुर 'ऐमनाबाद' भाई लालो के पास

स्यालकोट से चल कर गुरु जी सैयदपुर भाई लालो के पास तीसरी बार आए। यहां आकर जब गुरु जी ने अपनी दूर-दृष्टि के साथ देखा कि इस गांव की तबाही होने वाली है तो आप जी ने अपने प्यारे सिक्ख

भाई लालो को इस शब्द द्वारा होने वाली तबाही का वर्णन किया:

तिलंग महला १ ॥

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥
काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥
मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥
जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥
खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥ १ ॥
साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥
जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥
सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥
काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥
आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥
सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥ २ ॥

(पन्ना ७२२)

इस भविष्य-वाणी से जल्दी ही बाद सम्वत् १५७८ में बाबर फौज लेकर काबुल से चढ़ कर सैयदपुर आ गया। सैयदपुर के पठान हाकिमों ने आगे से डट कर मुकाबला किया, पर बाबर की फौजों के आगे पठानों की कोई पेश न गई। बाबर की फौजों ने शहर में कत्लेआम कर के शहर को लूट कर तबाह कर दिया। हिन्दू, मुसलमान सभी स्त्रियों की बड़ी बेइज़्ज़ती की गई और सब बच्चे बूढ़े जो कत्लेआम से बच गए, पकड़ कर कैदी बना लिए गए।

गुरु जी और भाई मरदाना भी इन मर्दों और स्त्रियों के साथ पकड़े गए। सब कैदियों के सिरों के ऊपर लूट का माल लाद कर मुगल फौजी आगे लाहौर की ओर ले चले। रास्ते में कैदी स्त्रियों के सिर मुख रास्ते की धूल से भरे हुए थे, बुरे हाल और खराबी होती देख कर गुरु जी ने शब्द उच्चारण किया:

आसा महला १ ॥

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥
से सिर काती मुन्नीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥
महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि-हदूरि ॥ १ ॥
आदेसु बाबा आदेसु ॥ आदि पुरख तेरा अंतु
न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥
हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥
उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥ २ ॥
इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥
गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥
तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥ ३ ॥
धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥
दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥
जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥ ४ ॥
अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥
साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥
बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥ ५ ॥
इकना रखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥
चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥
रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥ ६ ॥
इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ।
इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥
जो तिसु भावै सौ थीऐ नानक किआ मानुख ॥ ७ ॥

(पन्ना ४१७)

इस शब्द के उच्चारण के साथ सारे कैदियों को ऐसे लगा जैसे कि उनके दुःखों को बांटने वाला कोई हमदर्दी आ गया है! सारे कैदियों का ध्यान जब गुरु जी की तरफ हो गया तो उन्होंने देखा कि गुरु जी की गठरी आप जी के सिर से ऊपर लगभग एक हाथ ऊँची जा रही है और

मरदाने को पकड़ाया हुआ घोड़ा अपने आप ही उसके साथ-साथ पीछे चलता जा रहा है। बाबर के नौकरों ने यह देख कर जब बाबर को बताया कि कैदियों मे दो फकीर ऐसे हैं, जिनके सिरों के ऊपर उठाई हुई गठरियां सिर से ऊपर जा रही हैं और स्वयं किसी इलाही रंग में साज़ बजाते और गाते जा रहे हैं। यह सुन कर बाबर ने जब स्वयं जा कर गुरु जी को देखा तो आप जी के प्रभावपूर्ण दर्शन करके आप जी को ईश्वरीय रूप जान कर, नमस्कार किया और क्षमा माँग कर विनती की कि कोई हुक्म करें, जो मैं आप की सेवा करूं। गुरु जी ने कहा, "हमारी यही सेवा है कि इन कैदियों को मुक्त कर दो और इनका लूटा हुआ माल इनको वापिस कर दो।" गुरु जी का हुक्म मान कर बाबर ने सब स्त्री-पुरुष कैदी रिहा कर दिए और उनका सामान भी उनको वापिस दे दिया। कैदियों के साथ गुरु जी भी वापिस सैयदपुर आ गए।

सैयदपुर की तबाही का हाल

गुरु जी ने जब वापिस आकर शहर की हालत देखी तो आप जी ने इसका वर्णन इस शब्द के उच्चराण से किया:

आसा महला १

कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई॥
कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई॥
कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही॥ १॥
इहु जगु तेरा तू गोसाई॥ एक घड़ी महि
थापि उथापे जरु वंडि देवै भाई॥ १॥ रहाऊ॥
कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई॥
कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई॥
कहा सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई॥ २॥
इसु जर कारणि घणी चिगुती इनि जर घणी खुआई।
पापा वाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई॥
जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई॥ ३॥

कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ॥
थान मुकाम जले बिज मन्दर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ॥
कोई मुगलु न होआ अन्धा किनै न परचा लाइआ॥ ४॥
मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई॥
ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई॥
जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई॥ ५॥
इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी॥
इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी॥
जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी॥ ६॥
आपे करे कराए करता किस नो आखि सुनाईऐ॥
दुखु सुखु तेरै भाणै किस थै जाइ रूआईऐ॥
हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ॥ ७॥ २॥

(पन्ना ४१७)

गुरु जी बाबर को मिले

सैयदपुर के लोगों की ऐसी दर्द भरी हालत देख कर और यह पता करके कि कुछ गांवों की स्त्रियों और मर्द अभी भी उसके सिपाहियों की कैद में हैं, गुरु जी फिर बाबर को रावी के तट पर गांव अवान ढाए, जहां उसका डेरा था, जाकर बताया कि तुम्हारी फौज ने बेगुनाह लोगों, स्त्रियों, पुरुषों, बच्चों के ऊपर ज़ुल्म ढाए, सब में एक ही परमात्मा है, तुम्हें इन पर रहम क्यों नहीं आता ?

फिर गुरु जी ने अपने रंग में आकर परमात्मा को सम्बोधित करते हुए बाबर के सामने यह शब्द उच्चारण किया:

आसा मः १

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ॥
एती मार पई कुरलाणे तैं की दरदु न आइआ॥ १॥
करता तूं सभना का सोई॥ जे सकता सकते कउ
मारे ता मनि रोसु न होई॥ १॥ रहाउ॥

सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई॥
रतन विगाड़ि विगोए कुतंी मुइआ सार न काई॥
आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई॥ २॥
जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे॥
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे॥
मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे॥ ३ ॥ ५ ॥

(पन्ना ३६०)

यह शब्द सुन कर बाबर का हृदय काँप गया। उसने सारे कैदी छोड़ दिए और यहीं से फौज लेकर वापिस काबुल को चला गया।

नोटः- इस वापिसी के बाद बाबर ने फिर सम्वत् १५८३-८४ में चढ़ाई करके दिल्ली के बादशाह इब्राहीम लोधी को पानीपत के मैदान में हरा कर दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया।

वापिस करतारपुर में

सैयदपुर से गुरु जी पसरूर के रास्ते सम्वत् १५७९ में करतारपुर अपने परिवार में पहुंच गए। यहां आकर गुरु जी फकीरी कपड़े उतार कर गृहस्थी बन गए। इस बारे में भाई गुरदास जी लिखते हैं:

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि भेखु उदासी सगल उतारा।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा।

(वार १:३८)

गृहस्थियों वाले कपड़े पहन कर गुरु जी ने आने-जाने वाले साधू-सन्तों और सिक्ख-सेवकों के लंगर के लिए कृषि करनी आरम्भ कर दी। जो अनाज खेती की उपज से आता, उसका लंगर लगा रहता और सब को एक बराबर खाने को दिया जाता। बेअंत सिक्ख सेवक दर्शन करने आते और लंगर में से भोजन करते। जो सिक्ख आप जी को धन भेंट करते, वह धन आप जी उनको वापिस कर देते थे, ग्रहण नहीं करते थे जैसा कि नानक प्रकाश अध्याय ४९ अस्सू ४० में लिखा है:

मानव मिलै अनेक हज़ारा। सरब देग ते खाइ अहारा।

भोजन तो सभी लंगर में से खाते थे, पर—

दरब उपाइन आनहि कोई।
किह ते लैहि न फेरहि सेई॥ ४०॥

जो कोई (गुरु जी को) धन भेंट करते थे वे (गुरु जी) किसी से भी लेते (स्वीकार करते) नहीं थे; उनको ही वापिस कर देते, (जो धन भेंट करता था)

नोट :- अपने और असूलों में से एक यह सुनहरी असूल भी गुरु जी ने हमें बताया है कि गृहस्थी को पूजा की भेंट नहीं लेनी चाहिए, बल्कि स्वयं कमाई कर के खाना और खिलाना चाहिए।

सप्त काँड

अचल बटाला शिवरात्री का मेला

शहर बटाला के पास सिद्धों का एक स्थान है, जो अचल वटाला के नाम से प्रसिद्ध है। हर वर्ष शिवरात्री को यहां मेला लगता था जहां पर सिद्ध योगियों का सम्मेलन होता था। अजिते रधांवे को साथ लेकर गुरु जी वहां पहुंच गए। भाई गुरदाास जी इसका वर्णन करते हैं:

मेला सुणि सिवराति दा बाबा अचल वटाले आई।
दरसनु वेखिणि कारने सगली उलटि पई लोकाई।
लगी बरसणि लछमी रिधि सिधि नउ निधि सवाई।
जोगी देखि चलित्र नो मन विचि रिसकि घनेरी खाई।
भगतीआ पाई भगति आणि लोटा जोगी लइआ छपाई।
भगतीआ गई भगति भुलि लोटे अंदरि सुरति भुलाई।
बाबा जाणी जाण पुरख कढिआ लोटा जहा लुकाई।
वेखि चलित्रि जोगी खुणिसाई॥ ३९॥

(वार १)

अर्थात:- शिवरात्री का मेला सुन कर गुरु बाबा जी अचल वटाला आए। उनके दर्शन करने के लिए सारे मेले की संगत उनके पास आ गई। भेंट के तौर पर लोगों ने माया की गुरु जी पर वर्षा कर दी। इस चमत्कार

को देख कर जोगियों के मन में बड़ी ईर्ष्या हुई। उस समय रासधारियों ने आकर रास डाली और जोगियों ने उनका पैसों वाला लोटा छुपा दिया। भक्तगण रास डालना भूल गए और लोटे को ढूंढने में लग गए। अन्तर्यामी गुरु जी ने जोगियों का अहंकार दूर करने के लिए उनका छुपाया हुआ लोटा निकाल लिया। गुरु जी के इस चमत्कार को देख कर जोगी और भी ईर्ष्यालु हो गए और गुस्से से उठ कर गुरु जी से चर्चा करने लगे। भाई गुरदास जी इसका इस प्रकार वर्णन करते हैं:

सिद्धों के साथ चर्चा

खाधी खुणसि जोगीसरां गोसटि करनि सभे उठि आई।
पुछे जोगी भंगर नाथु 'तुहि दुध विचि किउ कांजी पाई?
फिटिआ चाटा दुध दा रिड़किआ मखणु हथि न आई।
भेख उतारि उदासि दा वति किउ संसारी रीति चलाई?'
नानक आखे 'भंगरि नाथ! तेरी माउ कुचजी आही।
भांडा धोइ न जातिओनि भाइ कुचजे फुलु सड़ाई।
होइ अतीतु ग्रिहसति तजि फिरि उनहु के घरि मंगणि जाई।
बिनु दिते कछु हथि न आई॥ ४०॥ वार १॥

अर्थात्:- सारे जोगी ईर्ष्या के कारण उठ कर गुरु जी के पास चर्चा करने आ गए। भंगर नाथ योगी ने गुरु जी को कहा-" आप ने दूध में कांजी डाल दी है। इससे दूध का सारा मटका खराब हो गया है और इसको मथने से मक्खन नहीं निकलेगा। अर्थात सन्यासी भेष के अंदर आप ने गृहस्थ रीति की कांजी डाल दी है, अब ज्ञान रूपी मक्खन नहीं निकलेगा, इस लिए आप ने भेष बदल कर उदासी के साथ संसारी रीति क्यों चलाई है?"

योगियों ने गुरु जी से कहा, " उदासी का पहरावा उतार कर फिर गृहस्थी भेष क्यों धारण कर लिया है?" गुरु जी ने उत्तर दिया, "भंगर नाथ! तेरी मां कुचज्जी है, जिसने बर्तन साफ करने से पहले ही दूध को जाग लगा दिया। अर्थात तुम्हारी अपनी बुद्धि खराब है, जिससे तुम असलीयत को नहीं जान पाए।

आप गृहस्थ को त्याग कर फिर गृहस्थियों के घर माँगने चले जाते हो!

अपने पास से कुछ दिए बिना किसी से कुछ नहीं मिलता। आप घर-घर मांगते फिरते हो! गृहस्थी बनो, कमाई करके स्वयं खाओ तथा दूसरे ज़रूरतमन्दों को भी खिलाओ। फिर तुम्हें माँगना नहीं पड़ेगा। जो किस्मत में होगा, वह स्वयं ही मिल जाएगा, और गृहस्थ में ही गति प्राप्त करोगे।"

गुरु साहिब का यह मुँह-तोड़ उत्तर सुन कर जोगी गुस्से से चिल्लाने लगे तथा बहुत भयानक रूप धारण कर के गुरु जी को डराने लगे। भाई गुरदास जी इसका वर्णन इस तरह करते हैं:

इहि सुणि बचनि जोगीसरां मारि किलक बहु रूइ उठाई।
खटि दरसन कउ खेदिआ कलिजुगि नानक बेदी आई।
सिधि बोलनि सभि अवखधीआ तंत्र मंत्र की धुनो चढ़ाई।
रूप वटाए जोगीआं सिंघ बाघि बहु चलिति दिखाई।
इकि परि करि के उडरनि पंखी जिवै रहे लीलाई।
इक नाग होइ पउण छोड़िआ इकना वरखा अगनि वसाई।
तारे तोड़े भंगरिनाथ इक चड़ि मिरगानी जलु तरि जाई।
सिधा अगनि न बुझै बुझाई॥ ४॥ *(वार१)*

अर्थात:- गुरु जी का यह वचन सुन कर (कि भंगर नाथ, तुम्हारी मां ही कुच्चजी है, जिसने तुम्हें अच्छी बुद्धि नहीं दी) जोगियों ने चिल्लाते हुए बहुत से रूप धारण कर लिए। मुँह से तन्त्र-मन्त्र पढ़ कर कोई जोगी शेर तथा कोई बाघ बन कर डराने लगा। कई पर लगा कर पक्षियों की भांति आकाश में उड़ानें भरने लगे। कई नाग बन कर फुँकारने लगे। कई अग्नि की वर्षा करने लगे। भंगर नाथ तारे तोड़ने लगा। कई मृगछाल पर बैठ कर पानी के ऊपर तैरने लगे। इस तरह जोगियों की क्रोधाग्नि बुझने में ही नहीं आती थी।

जब सिद्धों के यह रूप देख कर लोग डरने लगे तो गुरु जी ने अजिते के कहा, "चौधरी! सति नामु कह कर इन लोगों के चारों तरफ लकीर खींच दो। इसके भीतर सिद्धों की कोई करामात नहीं चलेगी।" अजिते ने आज्ञानुसार पास खड़े लोगों के चारों तरफ लकीर खींच दी तो लोग निर्भीक होकर गुरु जी के पास खड़े और बैठे रहे। यह चमत्कार देख कर फिर सिद्धों

ने जो कहा, उसको भाई गुरदास जी ऐसे वर्णन करते हैं:

सिधि बोलनि, 'सुणि नानका! तुहि जग नो करामाति दिखाई।
कुझु विखालें असां नो तुहि किउं ढिल अवेही लाई?

(वार१ पउड़ी ४२)

इसका उत्तर गुरु जी ने दिया:

बाबा बोले, 'नाथ जी! असि वेखणि जोगी वसतु न काई।
गुरु संगति बाणी बिना दूजी ओट नही है राई।

(वार१ पउड़ी ४२)

अर्थात्:- हे नाथ जी ! हमारे पास आप जोगियों वाली कोई चीज़ (करामात) नहीं है। हमें गुरु-संगत तथा वाहिगुरु ना--बाणी से बिना और कोई आसरा नहीं है। उपरान्त भाई साहिब जी लिखते हैं:

सिव रूपी करता पुरखु चले नाही धरति चलाई।
सिधि तंत्र मंत्रि करि झड़ि पए सबदि गुरू के कला छपाई।
ददे दाता गुरू है कके कीमति किनै न पाई।
सो दीन नानक सतिगुरु सरणाई॥ ४२॥ (वार१)

अर्थात्:- गुरु नानक जी आप कर्ता पुरुष का रूप हैं। वे धरती की तरह निर्भय रहे। सिद्धों ने बहुत तन्त्र-मन्त्र किए पर उनकी कोई एक भी चल न पाई। उनकी शक्ति गुरु जी के शब्द (वचन) ने हरा दी। जब गुरु जी की इस आत्म-शक्ति का कोई अनुमान न लगा सका, तो फिर सिद्ध हार कर गुरु जी के चरणों में गिर पड़े।

सिद्धों को उपदेश-सति नामु का प्रताप

सिद्धों को शरण हुए देख कर गुरु जी ने जो कुछ उपदेश रूपी वचन किए, उनके प्रति भाई गुरदास जी लिखते हैं:

बाबा बोले, 'नाथ जी! सबदु सुनहु सचु मुखहु अलाई।
बाझो सचे नाम दे होरु करामति असां ते नाही।
बसतरि पहिरौ अगनि कै बरफ हिमाले मंदरु छाई।
करौ रसोई सारि दी सगली धरती नथि चलाई।
ए वडु करी विथारि कउ सगली धरती हकी जाई।

तोली धरति आकासि दुइ पिछे छाबे टंकु चड़ाई।
इहि बलु रखा आपि विचि जिसु आखा तिसु पासि कराई।
सति नामु बिनु बादरि छाई॥ ४३ ॥ (वार १)

गुरु जी ने कहा, "नाथ जी! मैं आप को कहता हूँ कि मेरे पास सति नामु के बिना और कोई चमत्कार नहीं है। अगर मेरे पास इतना बल हो कि मैं आग के वस्त्र पहन लूँ और हिमालय की बर्फ में रहना कर लूं। लोहे का खाना कर सकूं और धरती को घोड़े की तरह अपनी इच्छा से घुमा सकूं; अपना इतना विस्तार कर लूं कि सारी धरती को धकेल कर आगे आगे लगाता चलूं, फिर अगर चाहूं तो धरती आकाश को तराजू में डाल कर बट्टे के साथ तोल लूं और अपने में और भी इतने बल रखता होवूं कि जो काम किसी से चाहूं वह ही कर लूं तब भी मैं समझता हूँ कि यह सब कुछ, सति नामु के बिना, बादल की छाया की तरह है, जो स्थिर रहने वाली नहीं होती।

सिद्धों के साथ गोष्ठी

सिद्धों के साथ इस चर्चा का गुरु जी ने अपनी बाणी सिद्ध गोसटि में वर्णन किया है:-

रामकली महला १ ॥
सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो॥
तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो॥
मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ॥
नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ॥ १ ॥ (पन्ना ९३८)

इस गोसटि की ७३ पउड़ियां हैं। ७३वीं पउड़ी की अंतिम दो पंक्तियों में गुरु जी कहते हैं:

अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई॥
नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई॥ ७३ ॥

(पन्ना ९४६)

हे नाथ जी ! यह जगत का खेल कर्ता पुरख ने अपनी इच्छा से रचाया हुआ है, उसके चमत्कार की किसी ही पुरुष को समझ आती है। वह कर्ता

पुरख सारे समय में आप ही विद्यमान है। उसके बिना और ऐसा कोई नहीं है।

तब सिद्धों ने हार मान कर गुरू जी को आदेसु कर के धन्य धन्य कहा। इस के बारे में भाई गुरदास जी लिखते है:

बाबे कीती सिधि गोसटि सबदि सांति सिधां विचि आई।

अर्थात—बाबा गुरु जी ने चर्चा करके सिद्धों को ठंडा कर दिया। इस तरह गुरु जी ने शिवरात्री के मेले में जीत कर साधुओं के छः भेखों (जोगी, सन्यासी, जैनी, जंगम, वैष्णो और बैरागी) से नमस्कार करवाई। इस के उपरांत सिद्धों ने बड़े सत्कार से कहा, "नानक जी! आप धन्य हो, धन्य आप की बड़ी कमाई है। आप कलयुग में बड़े पुरुष प्रगट हुए हो, जिन्होंने सारे जगत में नाम की जोत जला दी है। अचल वटाले जिस स्थान पर बैठ कर गुरु जी ने सिद्धों के साथ गोष्ठी की थी वहां आप जी की याद में थड़ा बना हुआ है।

मुलतान की यात्रा

बटाले से चल कर गुरु जी का मुलतान के पीरों के पास जाने का प्रसंग भाई गुरदास जी इस तरह वर्णन करते हैं:

मेलिओ बाबा उठिआ मुलताने दी जारति जाई।
अगों पीर मुलतान दे दुधि कटोरा भरि लै आई।
बाबे कढि कर बगल ते चंबेली दुधि विचि मिलाई।
जिउ सागरि विचि गंग समाई॥ ४४॥ (वार १)

अर्थात—शिवरात्री के मेले से उठ कर गुरु जी मुलतान को चल पड़े। जब मुलतान पहुँचे तो आगे वहां के पीर एक छन्ना दूध का भर कर यह बताने के लिए ले आए कि मुलतान तो पीरों के साथ भरा पड़ा है और किसी के रहने के लिए यहां पर स्थान नहीं है। पर गुरु जी ने अपनी बगली (झोली) में से एक चमेली का फूल निकाल कर दूध के ऊपर रख दिया और यह सुझाव दिया कि हम यहां दूध पर फूल जैसे टिकेंगे, किसी को कोई हिलजुल नहीं करनी पड़ेगी, अर्थात आप के बीच हम इस तरह समा जायेंगे जैसे समुद्र में गंगा स्वभाविक ही समा जाती है।

पीरों ने जिस मकान में बैठ कर गुरु जी ने पीरों के साथ चर्चा की थी वहां आप जी की यादगार बनी हुई है।

काँड आठवाँ

करतारपुर वापिस

जैसे कि भाई गुरदास जी इस प्रथाए में लिखते हैं:

जारति करि मुलतान दी फिरि करतारि पुरे नो आइआ।
चढ़े सवाई दिहि दिही कलिजुगि नानक नामु धिआइआ।
विणु नावै होरु मंगणा सिरि दुखां दे दुख सबाइआ।
मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथु चलाइआ।

(वार १ पउड़ी ८५)

अर्थात—मुलतान की यात्रा कर के बाबा फिर करतारपुर आ गया। कलियुग में आप जी ने करतार का नाम जपाया। आप जी का सम्मान दिन-ब-दिन बढ़ने लगा। गुरु जी ने कहा कि नाम के बिना और जो कुछ मांगना है वह दुःखों का घर है। गुरु जी ने सारे संसार में नाम का सिक्का चला कर एक उत्तम पंथ (एक ईश्वर को मानने वाला) चला दिया। करतारपुर में पहले की तरह ही गुरु जी दोनों समय धर्मशाला में दीवान सजाने लग गए। सिक्ख संगतें आप जी के दर्शन-उपदेश के लिए नित्य आतीं और अपनी मनोकामना पुरी कर के निहाल होतीं। आप जी की खेती का जो अन्न आता उसके साथ आप जी की तरफ से अटूट लंगर चलता रहता। बेअंत सिक्ख संगतें लंगर ग्रहण कर के

नोट : कई लेखकों ने गुरु जी की इस अचल बटाले तथा मुलतान की फेरी को पाँचवी उदासी लिखा है। परन्तु इस समय गुरु जी उदासी भेष त्याग कर गृहस्थी भेष धारण कर चुके थे और कृषि का कार्य कर रहे थे इस लिए इस को उदासी कहना उचित नहीं है। पहले चार बार देश रटन समय गुरु जी घर-बार त्याग कर उदासी का और फकीरी वाला भेष धारण करके निकले थे। परन्तु इस बार आप जी घर का कार व्यवहार कायम करके गृहस्थी भेष धारण करके गए थे। भाई गुरदास जी ने भी इस को मुलतान की ज़िआरत (यात्रा) ही लिखा है; उदासी नहीं लिखा।

संतुष्टि को प्राप्त करतीं।

श्री लहना जी को गुरुयाई

श्री लहना जी को हर प्रकार से गुरुगद्दी के योग्य समझ कर गुरु जी ने १७ आषाढ़ सम्वत् १५९६ को गुरुगद्दी पर अपनी जगह स्थापित कर दिया। भाई गुरदास जी लिखते हैं:

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोति जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ॥ ४५ ॥

(वार १)

अर्थात्:- गुरु जी ने अपने जीवन में ही गुरुयाई का सेहरा श्री लहना जी के सिर पर बांध दिया और अपनी ज्योति से ज्योति मिला कर अपना, ही स्वरूप कर नाम श्री अंगद जी रख दिया। इस भेद को कोई जान न सका। गुरु नानक जी ने अपना ही रूप पलट कर श्री लहना जी को आश्चर्य करके लोगों को दिखा दिया।

राए सता बलवंड रामकली की वार में इस के बारे में लिखते हैं:

लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु॥
जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु॥
सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु॥
जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु॥ ४॥

(पन्ना ९६७)

गुरु जी का नित्यकर्म

अपने करतारपुर के अंतिम निवास के समय गुरू जी सुबह-सवेरे उठ कर रावी नदी में स्नान कर के अपने आत्म स्वरूप में लग जाते थे। बाद में संगत में बैठ कर कीर्तन सुनते और दूर-पास से आई संगतों को सच्चे मार्ग का उपदेश देकर कृतार्थ करते; दीवान के समाप्त होने के बाद अपने सिक्ख सेवकों साथ भूमि जोतने और बीज बीजने और फसल कटाई आदि

के कामों में जुट जाते। जब लंगर तैयार हो जाता तो मिल-जुल कर संगत के साथ प्रसाद ग्रहण करते और फिर अपने कामों में लग जाते। संध्या के समय फिर दीवान सज जााता। सोदर का कीर्तन होता और रहरासि के पाठ के बाद लंगर खा कर रात को विश्राम करने के लिए चले जाते। कृषि की आमदनी से ही सेवा करते थे। अपने इस कार्य के लिए गुरु जी किसी से भी नकद भेंट स्वीकार नहीं करते थे— जैसा कि नानक प्रकाश अध्याय ४९ अंस्सू ४० में लिखा है:

मानव मिले अनेक हजारा। सरब देग ते खाइ अहारा।
दरब उपाइन आनहि केई। किह ते लैहि न फेरहि सेई॥ ४० ॥

अर्थात्:- हज़ारों ही सिक्ख आते थे, और सभी गुरु की देग में से भोजन करते थे। *नकद पैसे भी बहुत सिक्ख भेंट करते थे, पर गुरु जी किसी से भी ग्रहण नहीं करते थे। वे आप जी उन्हीं को ही वापिस कर देते थे। जैसा कि:

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ॥ १ ॥

(पन्ना १२४५)

नौखंडी पृथमी डिट्ठी

प्राणीमात्र को नाम-बाणी का उपदेश देकर तथा कृषि की कमाई से लंगर चला कर गुरु जी ने अपने अंतिम पन्द्रह-सोलह साल करतारपुर में व्यतीत किए। गुरु जी से मुक्ति वाले को मुक्ति तथा भुक्ति वाले को (भोजन) प्राप्त होता था।

सारे भारतवर्ष के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों तथा बुराई के अड्डों पर पहुंच कर गुरु जी ने पाखंड का खंडन कर के ईमानदारी की कमाई करनी और नाम स्मरण का उपदेश दिया।

उस समय जबकि लम्बी यात्राओं के लिए सवारी का कोई प्रबन्ध

***नोट:**- यहां भेंट स्वीकार न करने का कारण यह स्पष्ट बताया है कि इस समय गुरु जी गृहस्थी के रूप में थे और गृहस्थी धर्म में आप जी का यही उपदेश दोनों हाथों की कमाई कर खाना और क्षमता अनुसार दीन-दुखियों की सहायता करना है। गृहस्थी के लिए पूजा का धन आप ने वर्जित किया।

नहीं था और अकेले आदमी के लिए पद यात्रा करनी बड़ी कठिन होती थी, उस समय गुरु जी ने भारत वर्ष से बाहर स्याम, लंका, तिब्बत चीन, मक्का, मदीना, बगदाद, तुर्किस्तान, काबुल आदि दूर-दूर के देशों में पहुंच कर अपने उपदेश का प्रचार किया। भाई गुरदास जी लिखते हैं:

बाबे डिठ्ठी पिरथमी नवै खंडि जिथै तकि आही।

(पउड़ी २८)

अर्थात्:- गुरु जी ने सारी नौ खंडी पृथ्वी चक्कर लगा कर देखी और बताया कि गरीबी धारण कर के नाम जपने से गति प्राप्त होती है। जालप भट सवैयों में लिखता है:

कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा॥
उतरि दखिणहि पुबि अरु पसचमि जै जै कारु जपंथि नरा॥

(पन्ना १३९३)

अर्थात्:- गुरु जी की कीर्ति सूर्य की किरणों की भांति चारों तरफ फैल गई और लोग जै-जै-कार करते थे।

बाणी की रचना

आपने लगभग १६ वर्ष के करतारपुर निवास के समय गुरु जी ने बेअंत बाणी की रचना की। इसमें से बारह माह तुखारी की रचना विशेष तौर पर प्रसिद्ध है। जपुजी साहिब की पउड़ियों को तरतीब भी आप जी ने श्री लहना (श्री गुरु अंगद देव) जी से यहां करवाई तथा और बहुत बाणी जो आप जी ने अपने देशरटन के समय जगह-जगह उच्चारण की थी, वह भी यहीं संग्रह कर के भाई बुढ्ढा जी आदि प्रेमी सिक्खों से लिखवाई।

गुरु जी का मुख्य उपदेश

गुरु साहिब जी के जगह-जगह किए उपदेश वचनों को ध्यान से विचार करने से उनका समूचा भाव यह प्रकट होता है:

१. पाखंड और अहंकार का त्याग करना।
२. अपनी मेहनत की कमाई कर के अपनी ज़रूरतें पूरी करना और ज़रूरतमन्दों, दीनों, दुखियों की सेवा करना।
३. सब पर दया और नम्रता धारण करनी।

४. एक परमात्मा को मानना।

५. परमात्मा का नाम स्मरण करना।

६. परमात्मा के किए को ठीक करके जानना।

ज्योति जोत समाना

निरंकारी ज्योति सतिगुरु नानक देव जी ७० वर्ष, पाँच महीने और सात दिन इस संसार में सति नामु का चक्कर चला कर अस्सू वदी १० सम्वत् १५९६ को अपने प्रकाश स्वरूप में जा समाए।

चार उदासियों के प्रसिद्ध स्थान

पहली उदासी पूर्व की (सम्वत् १५५४ से १५६५)

सुल्तानपुर से लाहौर, सैयदपुर (ऐमनाबाद) तलवंडी, करनाल, पानीपत, हरिद्वार, दिल्ली मजनू का टिल्ला, मथुरा, बृन्दा वन, नानक मता, मीठा रीठा, बनारस, पटना, गया, कामरूप गोहाटी, चिटागाँव, जगन्नाथपुरी, कटक, आगरा, रुहेल खंड इलाका, सुल्तानपुर लोधी, लाहौर, तलवंडी, पाकपटन, दीपालपुर, सुल्लतानपुर, कीरतपुर, स्यालकोट, मिठ्ठन कोट, लाहौर। पक्खो के रंधावे रावी के किनारे करतारपुर नगर की नींव रखी, सम्वत् १५६५।

दूसरी उदासी दक्षिण दिशा (सम्वत् १५६७ से १५७१)

करतारपुर से सिरसा, बीकानेर, विंध्याचल, दक्षिण देश, रामेश्वरम्, संगला द्वीप, कजली वन, बहावलपुर, उच्च के पीरों के पास, सुल्तानपुर, करतारपुर।

तीसरी उदासी उत्तर दिशा (सम्वत् १५७३ से १५७५)

करतारपुर से जम्मू, श्रीनगर, मटन साहिब, बद्रीनाथ, सप्त श्रृंग, सुमेर पर्वत, नेपाल, सिक्कम, भूटान, तिब्बत, वापिस जम्मू, जसरोटे माधोपुर, पठानकोट, गुरदासपुर, सुल्तानपुर, करतारपुर।

चतुर्थ उदासी पश्चिम दिशा (सम्वत् १५७५ से १५५९)

करतारपुर से तलवंडी, कटास राज, रोहतास, टिल्ला बाल गुदाई, डेरा

इस्माईल खां, डेरा गाजी खां, जामपुर, नौशहरा, राजनपुर, मिठ्ठन कोट, सक्खर, भक्खर, रोड़ी साध बेला, लड़काना, अमरकोट, हैदराबाद सिंध, उडयारे, ठट्टा, राजघाट, कराची, मक्का मदीना, बगदाद, तहिरान, ताशकंद, बुखारा आदि से काबुल, खैबर दर्रे से पेशावर, हसन अबदाल, (पंजा साहिब) स्यालकोट, सैयदपुर (ऐमनाबाद) पसरूर के रास्ते करतारपुर।

गुरु जी के यादगारी स्थान

इन ऊपर लिखे खास स्थानों, नगरों, शहरों के इलावा और भी बेअंत नगर, ग्राम, शहर तथा स्थान हैं, जहां गुरु जी ने " लोक कल्याण" के लिए चरण डाले जैसा कि हबस देश (ऐबेसीनीया) मिस्र और चीन में आप जी की यात्रा की निशानियां और यादगारें कायम हैं। इनके अलावा और भी कई स्थान होंगे जो इतिहासकारों के ध्यान में नहीं आ सके।

इतिहासकार केवल वही स्थान लिख सके हैं, जहाँ गुरु साहिब जी की यादगार के तौर पर कोई न कोई निशानी कायम है और यह निशानी भी उसी जगह ही कायम हुई होगी जहां गुरु जी का कोई भक्त रहता होगा और कई यादगारें ऐसी भी हैं, जो कायम हैं पर इतिहास को उनकी खबर नहीं है, जैसा कि रावी नदी के दाएं किनारे गाँव सौड़ियां तहसील अजनाला में गुरु जी के नाम की एक बावली प्रसिद्ध है, पर किसी लिखित में नहीं आई। इसका पता केवल स्थानिक लोगों को ही है। गांव भीलोवाल, जहां एक फकीर के साथ चर्चा करके आप ने उसको सच्चा रास्ता बताया। यहां आप जी के नाम पर एक धर्मशाला बनी हुई है।

गुरु जी के जीवन के चार भाग

समूचे हिन्दु मत्त ने पुरुष की आयु के चार भाग ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बान प्रस्त और सन्यास धारण करके जीवन सफल करना बताया है परन्तु इन नियमों का पालन करना आम जनता के लिए असम्भव था, इस लिए गुरु जी ने अपने जीवन का उदाहरण देकर लोगों को जीवन सफल बनाने की विधि बताई। गुरु जी ने पहले विद्या ग्रहण की; फिर गृहस्थ धारण किया। इसके उपरान्त लोक-कल्याण के लिए सत्य का प्रचार किया और गृहस्थ में

उदास रह कर दोनों हाथों से कमाई करके परिवार का निर्वाह करना और बाँट कर खाने के उदाहरण दिए, जैसा किः

सम्वत् १५२६ से १५३२ तक विद्या ग्रहण की।

सम्वत् १५३२ से १५४२ तक घर के मिश्रित काम।

सम्वत् १५४२ से १५५४ तक गृहस्थ जीवन के साथ मोदी का काम।

सम्वत् १५५४ से १५९९ तक सत्य का प्रचार किया।

सम्वत् १५८० से १५९६ तक गृहस्थ में उदास रह कर दोनों हाथों की कमाई करके निर्वाह किया और बाँट कर खाया। आप जी ने फरमायाः

घालि खाइ किछु हथहु देइ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ॥ १॥

(पन्ना १२४५)

अर्थात्:- जो धर्म की कमाई करके निर्वाह करता है और किसी ज़रूरतमन्द को दान भी देता है, वही सच्चाई का मार्ग पहचान सकता है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में गुरु नानक साहिब जी की बाणी का ब्यौरा

१. जपु जी साहिब—अठ्ठतीस पउड़ियां तथा २ सलोक।
२. सिरी राग - ३३ शब्द, १७ असटपदियां, २ पहरे, १ शब्द घरु ३
३. माझ राग—१ असटपदी, एक वार (२७ पउड़ियां)
४. राग गाउड़ी-२० शब्द, १८ असटपदियां, २ छन्त।
५. आसा ४० शब्द, १ वार (२१ सलोक और २४ पउड़ियां) २२ असटपदियां, एक पट्टी (३५ पउड़ियां)
६. गूजरी- २ शब्द, ५असटपदियां।
७. वडहंस-३ शब्द, ५ असटपदियां।
८. सोरठि - १२ शब्द, ४ असटपदियां।
९. धनासरी-९ शब्द, २ असटपदियां, ३ छन्त।
१०. तिलंग-५ शब्द, २ असटपदियां।
११. सूही - ९ शब्द, ५ असटपदियां, १ कुचजी, १ सुचजी, ५ छन्त।

१२. बिलावल - ४ शब्द, २ असटपदियां, २ छन्त।

१३. रामकली - ११ शब्द, ९ असटपदियां, दक्षिणी ओअंकार (५४ पउड़ियां) सिद्ध गोसटि (७३ पउड़ियां)

१४. मारू-१२ शब्द, ८ असटपदियां, ३ काफियां, २२ सोलहे।

१५. तुखारी-बारहमाहा (१६ पउड़ियां) ५शब्द।

१६. भैरउ - ८ शब्द, १ असटपदी।

१७. बसन्त- ११ शब्द, ८ असटपदियां।

१८. सारंग—३ शब्द, २ असटपदियां।

१९. मलार—९ शब्द, १ वार (२८ पउड़ियां)

२०. प्रभाती—१७ शब्द, ७ असटपदियां।

२१. ४ सलोक सहसकृती।

२२. सलोक वारां ते वधीक—३३ सलोक

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के ३१ रागों में नीचे लिखे ग्यारह रागों में आप जी की रचना का कोई शब्द सलोक नहीं है:

१. देव गंधारी	२. विहागड़ा	३. जैतसरी
४. टोडी	५. बैराड़ी	६. गौढ़
७. नट नारायण	८. माली गौड़ा	९. केदारा
१०. कानड़ा	११. कलिआण	

आप जी के समय देश के बादशाहों के नाम

१. बहलोल खां लोधी सम्वत् १५४६ तक।

२. सिकंदर शाह लोधी सम्वत् १५४६ से १५७४ तक।

३. इब्राहीम लोधी सम्वत् १५७४ से १५८३ तक।

४. बाबर मुगल सम्वत् १५८३ से १५८७ तक।

५. हमायूं मुगल सम्वत् १५८७ से १५९७ तक।